जोग जाग सू कहा करै तीरथ असनांना । वो सांघा राम भजहीं भजीये भगवाना। २ ।
पूजण कूं साधु जणां हरिके अधिकारी । इन संगि गोविंद गाइये वै पर उपगारी। ३ ।
नामदेव कहे हरिके दासा हरि कौ व्रत धरीये । राम नाम सहजि है भौ सागर तिरीये । ४ ।

२२५. हरि बिन कौन सहाइ करैगो।
जो ऐसौ औसर बिसरैगो, तौ मरकट कौ औतार धरैगौ । टेक।
करम डोरि बाजिगर कै बसि, नाचत घरि घरि बार फिरैगौ ।
ले लुकटि तौहि त्रास दिषावै, जन जन कै तूं पाइ परैगौ। १ ।
जूं हमाल सिरी बोझ बहत है लालच कै संगि लगि मरैगौ ।
जूं कुलाल चक्री कूं फेरे ऐसे तूं कई बार फिरैगौ । २ ।
भजि भगवंत मुक्ति कै दाता राम कहया कछु ना बिगरैगौ ।
नांव प्रताप राषि उर अंतर, नामदेव सरणै उबरैगौ । ३ ।

२२६. इन सौंसर गोविंद भजिरे।
यह परपंच सकल बिनसैगे मायाका फंदन सजि रे । टेक।
नांव प्रताप तिरे जठ जल मैं मांगत नांव कीयो हठ रे ।
बिन सेवा बिन दान पुनि चाटि विमान सकल सझ रे । १ ।
तन सखर एक हंस बसेत है खाहूं काल करत फंद रे ।
नामदेव भनै निरंजनका गुन, राम सुमिरि पिंजरा सझि रे । २ ।

२२७. नहीं ऐसो जन्म बारबार।
कहीं पूरब लै पुनि पाईयौ । मनिषा औतार । टेक।
ग्रभ बास मै प्रतिपाल कान्ही । ताहि सुमरि गंवार।
कहा उतर देहगौ । राजाराम कै दरबार । १ ।
बधत पल पल घटत छिन छिन जात न लागै बार।
तरवर सूं फल झडि पडै । बहौरि न लागै डार । २ ।

संसार सागर मंडी बाजी। सुरति कीन्हीं सारि।
मनिष जन्मका हाथि पासा । जीति भावै हारि। ३।
संसार सागर विषम तिरणां। निपट डंडी धार।
सुरति निरति का बांधे मेरा । उतरिये लै पार। ४।
काम क्रोध मद लोभ लालच । ताहि बंध्यो संसार।
दास नामै जग जीति लीया । केवल नांव अधार। ५।

२२८. गाइ मन गोविंद गाइ रे गाइ। तेरो हरि बिन जनम अकारथ जाइ। टेक।
मनिषा जनम न बारंबार। तातै भजि लै रामपियार। १।
रे मन गोबिंद काहे न गावै। मनिषा जनम बहुरि नहीं पावै। २।
छांडि कुटिलाइ हरि भजि मनां। या जीवडा का लागू धना। ३।
अब कै नामदेव भया निहाल । मिले निरंजन दीनदयाळ। ४।

२२९. गावै तौ गाइ भावै मति गावै राम। झूठा वाहि बदै बेकाम। टेक।
पढै गुनै अरु कथै अनेक। बसतु भली पकडि भांडे छै। १।
जब लगि नाही हिरदै हेत। बीज बिना क्युं निपजै षेत। २।
जिभ्या इंद्री नाहीं सुद्ध। बांझ भणां क्यों निकसै दुध। ३।
नामदेव कहै इक बुधि विचारि। बिनि परचै मति मरौ पुकारि। ४।

२३०. अभिमान लीषां नर आयौ रे।
पर आत्म आत्म नहीं चीन्ही। नर वपु नांव धरायो रे। टेक।
गरभवास मैं हुतौ दीनता। त्राहि त्राहि ल्यौ लायौ रे।
हा हा करत विसंभर आगै। गहि आपदा छुडावौ रे। १।
अब रातौ तै बिषै बासना। संग तृस्नां कै धायौ रे।
गुन्हेगार गोविंद देव कौ। कबहूं राम न गायौ रे। २।
मैं हरि नांम अधार धार कै। साधू सरनि बतायौ रे।
नामदेव कहै समझि मन मूरिष। जौ समझै समझायौ रे। ३।

२३१. कपटे ना मिलै रे गोविंदौ गुण सागर गोपाल।
गोपीचंदन तिलक बनावै कंठी हुलावै माल। टेक।
मनि परतीति नहे रे प्रानी औरन कौ समझाइ।
लोकन को वैकुंठ पठावै आपण जमपुरी जाइ। १।
जानि बूझि विष षाइये रे अंधे अंधा साथि।
देखत ही कूंवे पडै दीपक लीये हाथि। २।
जोग जग जप तप तीरथ व्रत मन राषै इन पास।
ग्यान ध्यान तजि दया दीनता हरिके नाइ उदास। ३।
भजि भगवंत भगत भजि प्राणी छांडि अनेकी आस।
बरना बरन रहित मन सो भजि की न भयो निजदास। ४।
कोमल विमल संत जन खूरा करै तुम्हारी आस।
तिनपर क्रिया करै नित तुम केसौ प्रणवत नामदेव दास। ५।

२३२. ऐसे ही मना रे मेरे ऐसे ही मनां। चलौ रे जहां साहिब अपना। टेक।
ज्यू सापों सर ले ने जाइ। जल कोडर तो विलमग जाइ। १।
ज्यू पंथी पथ माही डरै। घर है दूरि रैनि जानि परै। २।
बाल बुधि जैसे कोडी देह। रिधनां डर तौ सांस न लेह। ३।
ऐसे जारिम पऊ चरण करै। नामदेव कहै ताको कारिज सरै। ४।

२३३. वाद छाडि रे भगता भाई। हरि सी तैं निधि पाई।
राम तजि मेरो मन अनत न जाई। टेक।
जप माला तागै पोई। सरीर अंतरि है सोई।
वादि विमुष हरि बिनु दिन षोई। राम नाम जपि लोई।
परम तत है सोई। तीनौ रे त्रिलोक व्यापै दूजौ नहिं कोई। १।
सजीवन मूरी सोई नटारंभ संगि गाई। रामनाम बिन नाहीं आन उपाई।
नामदेव उतर्‍यौ पार। चेतहु रे चेतन हार।
हरिकी भगति बिन औतरोगे बारंबार। २।

२३४. हरि लै हरि लै हरि लै हरि । अपनी भगति राम करी लै षरी । टेक ।
तुमसा ठाकूर कीजै । काहे न प्रतीति लीजै ।
अपनी बापौति कारणि प्राण दिजै । १ ।
तुमची प्रतीति आई । दुरमति तजिले भाई ।
सुतकौ जननी कैसे विष पाई । २ ।
बालिका रुदन करै । मइया जैसे प्राण धरै ।
पारब्रह्म पिता नामा लाड लडै । ३ ।

२३५. मन मंझा तू गोब्यंद चरण चित लाइ रे । हरि तजि आन न ध्याई रे । टेक ।
बलिराजा धुधमार न जीवै कौ जुग चारि । मेरी मेरी करते ते भी गये रे मन मंझा । १ ।
रे मग मछिंद्रनाथ सहस चौरंगी होते । ते भी देषत काल लीये रे मन मंझा । २ ।
रवि सीस दोऊ भाई फिरते गगन लाई । ऐसे भूला भ्रम सब जाई रे मन मंझा । ३ ।
अहंकार दिन दस राषिलै दिन चारि । पसुडानै मुकति न होई रे मन मंझा । ४ ।
नामदेव छीपौ चौपई गाई ।
जाकौ जैसा भाव तिनि तैसा सिधि पाई रे मन मंझा । ५ ।

२३६. जागि रे जीव कहा भुलाना । आगै पीछे जाना ही जाना । टेक ।
दिवस चारि का गोवली बासा । तामैं तोहिं क्यौं आवै हासा । १ ।
इहि भ्रमि लागि कहां तू सोवै । काहे कूं जनम बादि ही षोवै । २ ।
कहां तू सोवै बारंबारा । रामनाम जपि लेउ गंवारा । ३ ।
भणत नामदेव चेति अयाना । औघट घाट अरु दूरि पयांना । ४ ।

२३७. छांडि देरे मन हमिता मतिता । सब घटि राम रह्यौ रमि रमता । टेक ।
आसा करि मन जाइये जहिंया । राम बिना सुख नाही तहिंया । १ ।
जनकी प्रीति अगम पियारी । ज्यों जल निरषि भरै पनिहारि । २ ।
भणत नामदेव सब गुनआगर । भजि हरि चरण कृपा सुखसागर । ३ ।

२३८. हरि भजि हरि भजि हरि भजि मूल । बिन हरि भजन पडै मुषि धुल । टेक ।
अनेक बार पसु व्है अवतऱ्यौ । लष चौरासी भ्रमतौ फिऱ्यौ । १ ।
पायौ नहीं कहीं विश्राम । सतगुरु सरनि कह्यौ नही राम । २ ।
राज काज सुत बित सब जाइ । अविनासी सूं प्रीति लागाई । ३ ।
इहिं उनमान भगति ब्रत धरै । जरा मरन भव संकट टरै । ४ ।
गुणसागर गोबिंद गुण गाइ । अपनौ बिरद बिसरि जिनि जाइ । ५ ।
प्रणवत नामदेव संत सधीर । चरन सरन राषौ हरि नीर । ६ ।

२३९. राम भगति बिन गति न तिरन की । कोटि उपाव जौ करही रे नर ।
जल सींचै करि जतन प्रवालै । आंब बबूल न फलही रे नर । टेक ।
आपा थापि और कौ नींदै । गर्व मानके मारे ।
फिरि पीछे पछिताउगे बौरे । रतन न मिलहिं उधारे रे नर । १ ।
यहु ममिता अपनी जिनि जानौ । धन जोबन सुत दारा ।
बालू के मंदिर बिनसि जांहिगे । झूटे करहु पसारा रे नर । २ ।
जोग न भोग मोह नही माया । का भयौ बन मैं बासा ।
चरन कंबल अनुराग न उपजै । तब लगि झूठी आसा रे नर । ३ ।
मनिषा जनमि आई नहिं चेत्या । अंधे पसू गंवारा ।
तेरे सिरि काल सदा सर साधै । नामदेव करत पुकारा रे नर । ४ ।

२४०. कहि मन गोबिंद गोबिंद गोबिंद ।
हरिके चरण कंवल चिंतवनि जिनि बिसरै गोबिंद गोबिंद गोबिंदा । टेक ।
मैं अन्तरि गर्भ सहे दुष भारी । आवत जात पर्यौं मैं हारी । १ ।
ताथै नामा हिर गुण गावै । बहुरि न भौजलि नियरै आवै । २ ।

२४१. इतना कहत तोहि कहा लागत । राम रटी लैहु सोवत जागत । टेक ।
ध्रु प्रहिलाद इहि गुन तारे । राम नाम अखिर हिरदै विचारै । १ ।
राम नाम सनकादिक राता । राम नाम निरभै पद दाता । २ ।
भणत नामदेव भाव ऐसा । जैसी मनसा लाभ तैसा । ३ ।

२४२. बोलिथौ निर्बाणै पद राम नाम। ठाली जिभ्या कौने काम। टेक।
सेवा पूजा सुमिरन ध्यान। झूठा कीजै बिन भगवान। १।
तीरथ बरत जगतकी आस। फोकट कीजै बिन बिसवास। २।
ऐकादशी जगत की करणी। पाया महल तब तजी निसरनी। ३।
भणत नामदेव तुम्हारे सरनां। मुझा मनबा तुझा चरनां। ४।

२४३. ऐसे राम हि जानौ रे भाई। जैसे भृंगी कीट रहै ल्यौ लाई। टेक।
सरब रुप श्रबै सुर स्वामी। त्रिगुण रहित देव अंतरमाजी। १।
थावर जंगम कीट पतंगा। सति राम सबहिनके संगा। २।
नामा कहै मेरे बंधन भाई। राम नाम मै नौ निधि पाई। ३।

२४४. काहे रे मन भूला फिरई। चेतनि राम चरन चित धरई। टेक।
नरहरि नरहरि जपि रे जीयरा। अवधि काल दिन आवै नीयरा। १।
पुत्र कलित्र धन चित बिसासा। छाडि मना रे झूठी आसा। २।
तू जिनि जानै ग्रेही ग्रेहा। बिनसत बार कछू नहीं देहा। ३।
कहत नामदेव झूठी देही। तै साची जे राम सनेही। ४।

२४५. पर हरि धंधाकार सबैला। तेरी चिंता राम करैला। टेक।
नाराइन माता नाराइन पिता। बैस्नो जन परिवार सहेता। १।
केसौ कै बहु पुत भयेला। तामै नामदेव एक तू देला। २।

२४६. तू मुझा मंगा मी तुझा तुंगा। तू मुझा कैसे डारसि देवा। टेक।
कडवाकी विष्टा पीपल उचिष्टा। थनचे रे निकटि गूचडा भैला। १।
सब जग जाइला पै भगत न जाइला। जनम जनम नामदेव निसान बजाइला। २।

२४७. हरि नांव अमृत पषालि मुषाथै। बहुत ते पाणी किं करै रे। टेक।
असत्याचा मल लागिले जिभ्या। बे न छूटती हरि नांव बिना। १।
हरि कथा गंगव अस्नान जाला। नामइयाचा स्वामी केसी राजा हो। २।

२४८. हरि हरि दोन्यू अषिरे उचारि । ऐरी लटकि बिगारी । टेक।
मना सेवि या रे हरिनाम बोषदी । जेनै परमपद पावसीले । १ ।
सालि-पाल काइ सांगसी जम खडा । ले हरिनाम घडघडा । २ ।
अनेक वोषदी मेलवन का काडा । हरि नामै बोबडी फीटिल तुझी । ३ ।
सांडणि घाला पारै दुरी । नामा भणै हरि बिजमंत्र उच्चारि । ४ ।

२४९. न होइ ज्यौ तीरथ व्रत अस्नान करिता । न होइ ज्यौ कबित परमोद्य रचीता ।
न होइ ज्यौ सुघडपणै गाता । जेन्है होइ ज्यौ आत्मा ।
ते बेगलेच असे । टेक।
न होइ ज्यौ जोग साधणै । न होइ ज्यौ गिरासणै पावनै ।
न होइ ज्यौ इंद्रिया दबणै । जेन्है होइ ज्यो मने ।
ते बेगलेच असे । १ ।
न होइ ज्यौ आसन समाधि । न होइ ज्यो अही कष्ट साधी ।
न होइ ज्यौ पराकरम बुद्धी । जेन्है होइ ज्यो त्रिसुधी ।
ते बेगलेच असे । २ ।
न होइ ज्यौ आकारनै आगमै । न होइ ज्यौ निरुपणे नृगमै ।
न होइ ज्यौ षटकारमे । जेन्है होइ ज्यो ब्रह्मै ।
ते बेगलेच असे । ३ ।
न होइ ज्यौ प्राण प्रचीती । न होइ ज्यो देवानी बिगती ।
न होइ ज्यौ आत्म प्रचीती । न होइ ज्यो त्रिशुधी ।
ते बेगलेच असे । ४ ।
न जेन्है होइ ज्यौ दरसणै । न होइ ज्यौ सुचाल अंत:करणे ।
न होइ ज्यौ अभाव हीणै । न होइ ज्यो एकै केसवा बिनै ।
बिस्नदास नामा बीनवै । ५ ।

२५०. तुम्ह देवा हरि तुम्ह देवा । मेरे तुम ही सजन बंधवा । टेक।
आप बडौ जगन्नाथ देवा । जहां का भगत नामा ।

बालपना कौ मीत मिल्यौ है। हम घरि राधौ पाहुणा। १।
लोक बोलै नामा नामा। ये बोल लागै आम्हा।
अंगुरी दिषाये कुहडा न जीवै। मै कैसे जीऊं परसोतमा। २।
घाट कालंदी डोलै आछै। उपमा सोहै भला।
नैन निरषि छीपी मिल्या। कुटुंब नास भैला। ३।
कंबली पटोलै गाठी परि है। कृस्न देव तेरी रावलिया।
मूवल बाभन षग दिषावै। षंभ षाऊं तेरी टेकुरिया। ४।
बोलत चालत सरुप आयौ। भेस धरे बलि बंडा।
नामा छीपी कै भाग पालट्यौ। मिल्यौ राम मनोहरा। ५।

२५१. देखो यारो देखो लोको, इह क्या हुआ। पिंजरे महि बोलता कहाँ गया सुवा।
साचे साहिबका परवाना आया। नैरंगी महालमें रहण न पाया।
सभानां कां प्राण प्रीतम कहाया। सभना रल मिल कांधे पर चाया।
या को तूं कहता जो मेरी मेरा। जलाउणेकौ ले चले प्रीतम तेरा।
बाजीगरने बाजी पाई। कला अपने हाथ रखी, लखी न जाई।
बाजी को जाने, जग सुखिया सोई। दावा बांधि नामा दुनिया सभ रोई।

२५२. टाली वाजैवा टाली वाजैवा। वाजे एके न उदासिना। टेक।
संसार विष्या पाती गहै का उडी। वाइली टाली गेला अंतराली। १।
बिस्नदास नामइया तूं वाइली टाली। उडाला पाती के गेला अंतराली। २।

## संत नामदेवजी की साषी

२५३. अभिअंतरि नाहीं भाव। नाम कहै हरि नांव सौ।
नीर बिहूनी नाव। क्यौ करि तिरिये केसवा। १।
अभिअंतरी काला रहै। बाहरि करै उजास।
नाम कहै हरि भगति बिन निहचै नरक निवास। २।

अभिअंतरि राता रहै। बाहरी रहै उदास।
नाम कहै मै पाइया। भाव भगति बिसवास। ३।
साह सिहाणौ जीव मै। तुला चहोड्यौ प्यंड।
नाम कहै हरि नाम समि। तुलै न सब ब्रह्मांड। ४।
तन तोल्यौ तो क्या भया। मन नही तोल्या जाइ।
साच बिना सीझसी नही। नाम कहै समझाई। ५।
दान पुनि पासंग तुलै। अहंडै सब आचार।
नाम कहै हरि नाम समि। तुलै न जग ब्यौहार। ६।
बालपणै तै हरि भज्यौ। जगते रह्या उदास।
नामदेव चंदन भयो। सीतल सबद निवास। ७।
जेता अंतर भगत सौ। तेता हरि सौ जोई।
नाम कहै ता दास कौ। मुकति कहायै होई। ८।
पै प्याया मंदिर फिरया। भगति न आई तोहि।
नामदेव कहै हरि-बसि भया। परि मनि परतीति न होई। ९।
ढिग ढिग ढूंढै अंध ज्यौ। चीन्है नाही संत।
नाम कहै क्यौ पाइयै। बिन भगता भगवंत। १०।
बिन चीन्हे नहि पाइयै। कपटि सरै क्यूं काम।
नाम कहै नित पाइये। राम जना तै राम। ११।
नाम कहै रे प्राणिया। नींदन कौ कछु नाही।
कोण भांति हरि सेइये। राम सबनिहि मांहि। १२।
समझ्या घट कौ यू बणै। यहु तो बात अगाध।
सिरजे सौ निरबैरता। पूजण कौ ये साध। १३।

वरील साषीमध्ये नाम कहै हे नामा कहै असावे

२५४. ज्यो कोई वसुधा दान दे आवे। पूर्ण जज्ञ करें करावे।
तीरथ बरथ करे स्नान। नही नही हरीनाम समान। १।

ज्यो कोई ज्यावे हीमालये गले। काशी करवत लेकर मरे।
दसवे द्वारे काढे प्राण। नही नही हरिनाम समान। २।
काया कष्टवे कलेवर जीवे। ना कुच खावे ना कुच पीवे।
गगन मंडळमों जोग ध्यान। नही नही हरिनाम समान। ३।
आगली पिछली बात बनावे। नेम धरममें मन छुपावे।
च्यारो बेद पढे पुरान। नही नही हरिनाम समान। ४।
सद्गुरूकी जद कृपा भई। प्रेम भगत हरदे धर लाई।
कहे नामदेव भज भगवान। नही नही हरिनाम समान। ५।

२५५. दूध पियो गोविंद लाला। ध्रु०।
काला बछरा कपिला गाई। दूध दुवाहत नामा जाई। १।
सोनेका गडवा दूधने भरिया। पिवो नारायण आगे धरिया। २।
परभुवनकी मुरत दूध न पिवत। सीर पछार नामा रोवत। ३।
ऐसा भगत मै कबु न पाया। नामदेवनें देव हसाया। ४।

२५६. शयन करो नारायण देवा। चरण पलोटों करौ हरि सेवा। ध्रु०।
शयन करो तुम अन्तर्यामी। मनसां वाचा करौं गुलामी। १।
फूलन गैंडा मुक्ता सोहै। देखत पलंग 'नामदेव' मोहै। २।

२५७. नंदनंदन जी को भोग लागे। महाशंख धुनि घंटा बाजै। ध्रु०।
अमृत भोक्ता श्री यदुराई। छप्पन भोग श्रीलक्ष्मी लाई।
सतिभामाजी जेंवन कीन्हों। हरिहलधर को नेवता दीन्हों। १।
चन्दन जल से भवन सिंचाये। सखा सहित हरिजेंवन आये।
दूध पाक पकवान मिठाई। छप्पन भोग जेंवें दोऊ भाई। २।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन। रुचि रुचि सों जेंवैं यदुनन्दन।
साग पात जो जिनके होई। अमृत करि जेंवें हरि सोई। ३।

हरि जेंवें हरिजन यश गावें। ललिता विशाखा चंवर ढुरावें।
जन 'नामदेव' द्वारे यश गावें। सोहरिको पनवारो पावें। ४।

२५८. राम रतन धन पाया माया, राम०। ध्रु०।
वस्तु अमोलक दियो है गुरु ने माथे तिलक कराया।
राम नाम की भई विभूती जग में साह कहाया। १।
देत लेत औरवावत खरचत दिन दिन होत सवाया।
राज न दंडै चोर न लूटै धरनी धरे न जाया। २।
ले प्रल्हाद खम्भ में बांधे अब तेरो कौन सहाया।
कहां तेरो राम बताओ मोहीं हाथ खड़ग भक्तकाया। ३।
तो में मो खड़ग खम्भ में व्यापि रहे रघुराया।
खम्भ कोरि हिरनाकुश मारे 'नामदेव' की राम सहाया। ४।

२५९. बिनती सुन जगदीश हमारी।
तेरो दास आस मोहिं तेरी, इत करो कान मुरारी। १।
दीनानाथ दीन हूं टेरत, गाइहिं क्यों नहिं ज्यावो।
आछे सबै अंग है याको, मेरे यशहिं बढ़ावो। २।
जो कहु याके कर्मन में, नहिं जीवन लिखो विधाता।
तौ नामदेव की आयुर्दा सों, होहु प्रभुहि तुम दाता। ३।

२६०. गोविन्द गुना गोपाल गुना गायले रे गोविन्द गुना।
ऐसो समय बहुरि नहिं पै है फिरि पछि तै है मेरे मना। १।
जिन तुमको तन मन धन दीन्हो नयन नासिका मुख रसना।
जाको रचत मास दस लागे ताहि न सुमिरे एक छिना। २।
बालापन हंसि खेल गमाये तरुण भयो तव रूप घना।
वृद्ध भये पर आलस उपजे उठ गइ हाट कछू न बना। ३।

अधम तरे अधिकार भजन ते जे जे आये हरि शरणा ।
ना मानो तो साखि बताऊं अजामील गनिका सदना । ४ ।
धन जौवन अंजुरी को जल जस घटत जात छिन पलहि पला ।
अस जिय जानि भजो रघुनन्दन नामदेव आये हरि शरणा । ५ ।

२६१. देवा तेरी भक्ति न छांडूं मुक्ति न मांगूं हरि यश लुनहुं सुनाऊं।
रामकृष्ण अवतार मनोहर जन्म जन्म यश गाऊं । १ ।
गंगा जल असनान कराऊं पीताम्बर पहिराऊं ।
तुलसी आनि गोपालहिं पूजौ चन्दन सरस चढाऊं । २ ।
चुनि चुनि कलियां हार बनाऊं रघुवर उर पहिराऊं।
धूप दीप नैवेद्य आरती यहि विधि लाड़ लड़ाऊ। ३ ।
हरषि निरखि हरि के गुण गाऊं हाथन ताल बनाऊं।
भणत नामदेव सुनहुं त्रिलोचन यहि विधि दास कहाऊं। ४ ।

२६२. राम नामे हित न भयो। मेरी मेरी करता जनम गयो ।टेक।
लागी पंक पंकले धोवे । निरमल न होवे जनम बिगोवे। १ ।
भीतर मैला बाहरि चोषा । पाणी प्यंड़ पखालै घोषा। २ ।
नामदेव कहे सुरहीपर हरिये । धेड़ पूछ कैस धवजल तरीये। ३ ।

२६३. जप राम महामंत्र राम महा। राम रमे रम राम महा ।टेक।
महादेव उपदेसी गौरी। राम नाम मंत्र ले सुन बौरी । १ ।
नई मंत्र नारद ध्रुवई पढ़ावा । सत संगत मिलै दास न गावा। २ ।
आदि गुरू रघुनाथ उधरणा। रावण कुंभकरण बस करना। ३ ।
नामो भणे रामनाम पवित्रा। रामा बिना नहीं मुकती दाता । ४ ।

२६४. मन पंछीया मत पड पिंजरे। संसार मायाजाळ रे। १ ।
तन जोबन रूप कारण । न कर गर्व गव्हार रे । २ ।
एक दिनमों तिन विरिया। सदा झमकत काल रे। ३ ।

कुंभ काच्या निर भरिया। बिनसत नहिं बार रे। ४।
कहत नामदेव सुन भई साधु। साधु संगत धरना रे। ५।

२६५. यह बड़ी सीमूं बुधिया बड़ी। राम ना बिसरे एको घड़ी। टेक।
हर हर कहता जे नर लाजे। जम की डाँग तिन्हूं सिर बाजे।
हर हर कहता कीजे बोता। गए पाप जे पोते ओता।
नामदेव कहे मैं नर हरि भणो। कटे पाप और लाभ हो घनो।

२६६. साह सिहानो जीव मैं, तुला चढ़ायो पिण्ड।
नाम कहै हरि नाम सों, तुले ना सब ब्रह्मण्ड। १।
तन तोला तो क्या भया, मन तोलया ना जाए।
साच बिना सीझे नहीं, नाम कहे समझाए। २।
दान पुण्य पासङ्ग तुले, अहिण्डे सब आचार।
नामा कहे हरि नाम सम, तुले ना जग विवहार। ३।

२६७. तू मेरा दाता मैं तेरा भुक्ता जनम जनम तेरी सेवा करता।
जब तू बलि कर मागी सगरी, तब मैं तेरी छागल पकरी।
जब तू दुष्ट हरनाकस मार्‍यो, तब मैं भक्त प्रहलाद उभार्‍यो।
जब तू लङ्का पर करी चढाई, तब मैं तेरा भरतन भाई।
जब तू वृन्दावन धेनु चराई, तब मैं तेरे आगे बेन बजाई।
भणत नामदेव दासन के दासा, तेरे भक्तां का वैकुण्ठ पुरी में वासा।

२६८. आव कलंदर केसवा। घर अबदालव भेष बाबा। टेक।
ताज कुल ब्रह्मंडे कीन्ही। पावस पत पाताल जी।
कवला सेती कायन पडिया। निराकार आकार जी। १।
सहजर विसहर सबै तुम फिरिया। तेरा किबहु मरम न पाया जी।
नामदेव का चित हरिसूं लागा। आसण करै रामराया जी। २।

२६९. वैश्रांते मैं मै वै ते वैओं । सुना नारद ऋषि साचम ।
जे भगता मेरे गुण गाव । ताके अंतर थै काम नाचू नारद । टेक।
नारद कहै सुनो नारायन । बैकुंठ बसो की कवलासन ।
जहा मम कथा तहा मैं नीच ले। वैश्नों मंदिर वास न नारद । १ ।
गंगा आदि सकल तीरथ करै। गुण चास कोट फिर आवै।
एकादशी सहित संजम करै । ते मोहि सुपने कदैन पावै नारद। २ ।
जोगी जपी तपी संन्यासी। इक मुनि ध्यान बैठा।
जे जे जग बेद धुनी उचरै। तिन हूं कदे न दीठा नारद । ३ ।
जग जोग तप धरम नेम व्रत । जवलग इनकी आशा।
वसुधा आदि देही दहिनावत । नहीं मम चरण निवासा नारद। ४ ।
जे भगतां निरमल जस गावै। ते भगता मम सारम ।
जियां जीऊं पीयां पीऊं। वैश्नों मम परिवारं नारद । ५ ।
वैश्नों मैं दोही नाही नारद । प्रीत किया ते आऊं ।
भगति हेतु यहु व्रत धरै हौ । वैश्नौं हाथ बंधाऊ नारद । ६ ।
बिसवा बीस आगे बरतांऊ । निज जन नांव सू राता।
नामानो स्वामी परमपद आपै। भगति मुकति दोऊ दाता नारद। ७ ।

२७०. बाद छाड रे भगत भाई। हरि सी तब निधि पाई।
राम तज मेरो अंत न जाई। टेक।
जम माला लागे पोई । सरीर अंतर हौ सोई।
बाद बिमुख हरिबिन दिन खोई। रामनाम जप लोई।
परम तत हौ सोई। तिनू रे तिरलोक व्यापै ।
दूजो नहीं कोई । १ ।
सजीवन मूली पाई । नट आरंभ संग लाई।
राम नाम बिन नहीं आन उपाई। नामदेव उतरौ पार।

चेतो रे चेतन हार। हरि की भगति बिना।
ओतारोगे बारंबार । २ ।

## ❀ आरती ❀

२७१. जहां देखो तहां नरहरि नरहरि, तेरी आरती गाऊं पतिदेव हरि। ध्रु०।
नरहरि कहतां नरहरि पार उतारै, आरती करै जन छिनन बिसारै। १ ।
नरहरि मोठा नामां आरती गावै, अनन्त भवन में जै जै थावै। २ ।

२७२. वोवालने जाये परब्रह्म वोवालने जाये। ध्रु०।
कनक के तलीया आरती करीया। चंवर ढुले नंद लाल मुरलीया । १ ।
गोपी गावे मंगल साला। कौस मारी घर आवे गोपाला। २ ।
नामा प्रणवे दास तुम्हारो । पुनरपी जनम नीवारो हमारो। ३ ।

२७३. उत्तरा आरती चरण मुरारे । धृ०।
करपुरका दीपला कपुरकी बाती। कपुर बरै दिन-रात मुरारे । १ ।
खांड सरोजी और मेवा । लवंग सुपारी नारेल खोवा । २ ।
कहत नामदेव बली बली जाऊं। बैकुठ जाऊं त बहुरी न आऊं। ३ ।

२७४. ऐशी आरती तनमन गाये। पलख न बिसरूं सारंगपाणी। धृ०।
जो नरहरजी की आरती गाये । बसत बैकुंठ फिर नही आये। १ ।
कहत नामदेव भली भली गाये। बसत बैकुंठ फिर नही आये। २ ।

२७५. आरती पतिदेव मुरारी। चंवर ढुलै बलि जाऊं तुम्हारी। टेक।
चहुं जुग आरती चहुं जुगि पूजा। चहुं जुग राम अवर नही दुजा। १ ।
चहुं दिस देषै चहुं दिस धावै । चहुं दिख राम तहाँ मन लावै। २ ।
आधौ राम उरधै मधि रामा । पूरण सेइ सरै सब कामा । ३ ।
आरती कीजै जैसे तैसे । ध्रू प्रीहलाद करी सुप जैसे। ४ ।
आनंद आरति आतम पूजा। नामदेव भणै मेरे भाव न दुजा। ५ ।

२७६. कहा ले आरती दास करै। तीनि लोक जाकी जोति फिरै। टेक।
सात समुंद जाकै चरन निवासा। कहा भयौ जल कुंभ भरै। १।
कोटि भान जाकै नखकी शोभा। कहा भयौ कर-दीप फिरै। २।
अठरा भार जाकै बनमाला। कहा घंटा झणकार करै। ३।
अनंत कोटि जाकै बाजा बाजै। कहा घंटा झणकार करै। ४।
चौरासी लख व्यापक रामा। केवल हरि जस गावै नामा। ५।

२७७. आरती कीजे राजाराम रीझे। भक्त करे जम जामी न दीजै। टेक।
पहिली आरती पोपकी माला। कालीनाग नाथ प्राण गुवाला। १।
दुसरी आरती देवकी नंदन। भक्त उधरण कौस नीकंदन। २।
तीसरी आरती जुगजुग पूजा। भक्त निरंजन और नही दूजा। ३।
चवथी आरती त्रीभुवन माहे। गरुड वाहन गोपालराये सोवे। ४।
पांचवी आरती रामजीकु भावे। रामजीके गुण नामदेव गावे। ५।

२७८. जै नामदेव हरे स्वामी जै नामदेव हरे।
चार पदारथ पावे जो तेरी शरण पड़े। जै नामदेव हरे स्वामी।
तूं दाता है नाम दा महिमा महान तेरी। प्रभु महिमा महान तेरी।
किस विध करे बखान यह तुच्छ जबान मेरी। जै नामदेव हरे।
जुग जुग में प्रभु संग आप अवतार धरा। स्वामी...
बांह पंकड़ कर सब की भव ते पार करा। जय नामदेव हरे।
बलि द्वारे पर जाकर छागल कन्ध धरी। स्वामी...
राम अवतार के संग भरत बन सेव करी। जय नामदेव हरे।
धार रूप नरसिंह का हरनाकश मारा। स्वामी...
आप भये प्रहलाद जिसे हरि ने उभारा। जय नामदेव हरे।
कलजुग में आ पंढरपुर अवतार धरा। स्वामी...
मात गोनाई जाया धरती का भार हरा। जय नामदेव हरे।
जीवन के हो जीवन प्राणों के प्यारे। स्वामी...

करो दूर दुख सब के देवो सुख सारे। जय नामदेव हरे।
द्वारे तेरे आए भक्ति की दो भिक्षा। स्वामी...
दुर्मति सबकी नासी सुन्दर दो शिक्षा। जय नामदेव हरे।
हम अति मूढ़ अल्पज्ञ पूत हैं तेरे पिता। स्वामी...
चरण-कमल-रज देकर कर लो सपूत पिता। जय नामदेव हरे।
ना बलवन्त विनीत हूँ ना कुछ समझ पड़े। स्वामी...
तेरा छोड़ के दास द्वार अब किसके पड़े। जय नामदेव हरे।
गिनो कुकर्म ना मेरे किरपा दृष्टि करो। स्वामी...
राखिए लाज कृपाल हो सिर पर हाथ धरो। जय नामदेव हरे।
साष्टांग प्रणाम् करें तेरे द्वार खड़े। स्वामी...
तव चरणन मन राँचे भक्तों में मान बढ़े। जय नामदेव हरे।
जय नामदेव हरे स्वामी जय नामदेव हरे।
चार पदारथ पावे जो तेरी शरण पड़े।

२७९. हरि हरि भक्ति करो मन का मान हरो।
हिरदे ध्यान धरो मूरत नामदेव जी की।
पहली आरती दूध पिलाया। प्रकट चतुर्भुज दर्शन पाया। १।
दूसरी आरती छान छवाई। बेढी रूप धरयो हरि आई। २।
तीसरी आरती मन्दिर फेरा। भयो पण्डों को प्रेम घनेरा। ३।
चौथी आरती पाक बनाए। घृत पात्र लै पाछे धाए। ४।
पंचमी आरती गऊ जिवाई। गरुड चढ़े प्रभु भये सहाई। ५।
खष्टमी आरती सेज निकासी। जुग जुग पैज भक्त की राखी। ६।
सातवीं आरती जल भर लाए। मति अनुरूप दास जस गाए। ७।
जो जन नामदेव जी की आरती गावे। सकल मनोरथ पूरण पावे। ८।
हरि हरि भक्ति करो मन का मान हरो। हिरदे ध्यान धरो मूरत नामदेव जी की।

❀❀❀❀❀

# संत जनाबाई कृत अभंग

## नामसंकीर्तन माहात्म्य

१. गातां विठोबाची कीर्ती। महापातकें जळती। १ ।
सर्व सुखाचा आगर । उभा असे विटेवर । २ ।
आठवितां पाय त्याचे । मग तुम्हां भय कैंचे। ३ ।
कायावाचामनें भाव । जनी म्हणे गावा देव । ४ ।

२. नाम विठोबाचें घ्यावें । मग पाउल टाकावें । १ ।
नाम तारक हें थोर। नामें तारिले अपार। २ ।
आजामेळ उद्धरिला । चोखामेळा मुक्तीस नेला। ३ ।
नाम दळणीं कांडणीं । म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

३. जन्मा येऊनिया देख। करा देहाचें सार्थक। १ ।
वाचे नाम विठ्ठलाचें । तेणें सार्थक देहाचें । २ ।
ऐसा नामाचा महिमा। शेषा वर्णितां झाली सीमा। ३ ।
नाम तारक त्रिभुवनीं। म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

४. नाम फुकट चोखट । नाम घेतां नये वीट। १ ।
जड शिळा ज्या सागरीं। आत्माराम नामें तारी। २ ।
पुत्रभावें स्मरण केलें । तया वैकुंठासी नेलें। ३ ।
नाममहिमा जनी जाणे। ध्यातां विठ्ठलचि होणें। ४ ।

५. एक नाम अवघें सार। वरकड अवघें ते असार । १ ।
म्हणोनियां परतें करा। आधीं विठ्ठल हें स्मरा। २ ।
जनी म्हणे देवाधिदेव। एक विठ्ठल पंढरीराव । ३ ।

६. माझा शिणभाग गेला। तुज पाहतां विठ्ठला। १ ।
ताप ताप जाती । तुझें नाम ज्याचे चित्तीं। २ ।

अखंडित नामस्मरण । बांधू न शके तया विघ्न। ३ ।
जनी म्हणे हरिहर । भजतां वैकुंठीं त्या घर । ४ ।

७. जपतप अनुष्ठान । न लगे हेहासी दंडण । १ ।
तुम्हां सांगते मी खूण । कथे उभा नारायण। २ ।
कुंचे ढाळा तयावरी । हरुषें नाचतो श्रीहरी । ३ ।
या, रे, घाले दंडवत । आला थोर लाभ येथें । ४ ।
बाहे उभारूनी टाळी । वाजवितां दोषा होळी। ५ ।
देव कथेसी सांपडे। दासी जनी पाया पडे । ६ ।

८. माझें मन विठोबाचे पायीं रंगलें । परतोनि पाहतां मीपण गेलें । १ ।
नामदेव वस्तू दाखविली कैसी। माया प्रपंचासी विसरले। २ ।
नामदेवें भक्ती शाश्वत केली। विठोबाची मूर्ती हृदयीं राहिली । ३ ।
नामाचे जनीस भक्तीचें वेड। संसाराचें कोडें सोडविलें । ४ ।

९. नाम विठोबाचें थोर । तरला कोळी आणि कुंभार । १ ।
ऐसी नामाची आवडी। तुटे संसाराची बेडी । २ ।
नाम गाय वेळोवेळां । दासी जनीसी नित्य चाळा। ३ ।

१०. येऊं ऐसें जाऊं। जनासंगें हेंचि दाऊं। १ ।
आपण करूं हरिकीर्तन । जाणोनी भक्तीचें जीवन । २ ।
नाम संशयछेदन । भवपाशाचें मोचन। ३ ।
जनी म्हणे हो देवासी । होईल त्याला कसणी ऐसी । ४ ।

११. हरिहर ब्रह्मादिक । नामें तरले तिन्ही लोक। १ ।
ऐसा कथेचा महिमा । झाली बोलायाची सीमा। २ ।
जपें तपें लाजविलीं । तीर्थें शरणागत आलीं। ३ ।
नामदेवा कीर्तनीं। ध्वजा आल्या स्वर्गाहुनी। ४ ।
देव श्रुतीं देती ग्वाही। जनी म्हणे सांगूं कायी। ५ ।

१२. व्हावें कथेसी सादर । मन करूनियां स्थीर । १ ।
बाबा काय झोंपी जातां । झोले चौऱ्यांशींचे खाता । २ ।
नरदेह कैसारे मागुता । भेटी नव्हे त्या सीताकांता । ३ ।
आळस निद्रा उठाउठी । त्यजा स्वरूपीं घाला मिठी । ४ ।
जनी म्हणे हरिचें नाम । मुखीं म्हणा धरूनि प्रेम । ५ ।

१३. काय हे करावे । धनवंतादि आघवे । १ ।
तुझें नाम नाहीं जेथें । नको माझी आस तेथें । २ ।
तुजविण बोल न मानीं । करीं ऐसें म्हणे जनी । ३ ।

१४. तो हा भक्तांचे तोडरीं । वाचे उच्चारितां हरी । १ ।
काम होऊनि निष्काम । काम भावभक्ति प्रेम । २ ।
तो हा पूर्ण काम होय । अखंडित नाम गाय । ३ ।
काम निष्काम झाला मनीं । वंदी नाचे दासी जनी । ४ ।

१५. निस्पृहाची मूर्ती । सखे, जनी ये अव्यक्ती । १ ।
भक्त वत्साचिये माय । नामा शिंपी त्याचे पाय । २ ।
म्हणे जनी दासी । माझी सखी आजी होती । ३ ।

१६. प्रेम क्षमा जया । घडे दंडवत पायां । १ ।
त्यासी देहभक्ती नुरे । स्वात्मसुख डोईवरी । २ ।
त्या मग समूळ जाला नाहीं । दंडवत जाला पां पायीं ।३ ।
देहातीत अगुणासी । म्हणे नव्हे जनी दासी । ४ ।

१७. निराकारींचें नाणें । शुद्ध ब्रह्मींचें ठेवणें । १ ।
प्रयत्नें काढिलें बाहेरी । संतसाधु सवदागरीं । २ ।
व्यास वसिष्ठ नारद मुनी । टांकसाळ घातली त्यांनीं । ३ ।
उद्धव अक्रूर स्वच्छंदीं । त्यांनी आटविली चांदी । ४ ।

केशव नामयाचा शिक्का। हारप चाले तिन्ही लोकां। ५।
पारख नामयाची जनी। वरती विठोबाची निशाणी। ६।

१८. विठ्ठल नामाची नाहीं गोडी। काळ हाणोनि तोंड फोडी। १।
गळा बांधोनि खांबासी। विंचू लाविती जिव्हेसी। २।
ऐसा अभिमानी मेला। नर्ककुंडीं थारा त्याला। ३।
नामा बोध करी मना। दासी जनी लागे चरणा। ४।

## भक्त पुंडलिक माहात्म्य

१९. भक्तामाजीं अग्रगणी। पुंडलिक महामुनी। १।
त्याचे प्रसादें तरले। साधुसंत उद्धरिले। २।
तोचि प्रसाद आम्हासीं। विटेवरी हृषिकेषि। ३।
पुंडलिक बापमाय। दासी जनी वंदी पाय। ४।

२०. पुंडलिक भक्तबळी। विठो आणिला भूतळीं। १।
अनंत अवतार केवळ। उभा विटेवरी सकळ। २।
वसुदेवा न कळे पार। नामयासवें जेवी फार। ३।
भक्त भावार्था विकला। दासी जनीला आनंद झाला। ४।

२१. भला भला पुंडलिका। तुझ्या भावार्थाचा शिक्का। १।
भलें घालूनियां कोडें। परब्रह्म दारापुढें। २।
घाव घातला निशाणीं। ख्याति केली त्रिभुवनीं। ३।
जनी म्हणे पुंडलिका। धन्य तूंचि तिहीं लोकां। ४।

२२. टाळ- मृदुंगाची ध्वनी। दिंड्या पताका घेऊनी। १।
संत जाती पंढरीसी। देव सामोरा ये त्यासी। २।
देऊनिया आलिंगन। त्याचा घेतो भागशीण। ३।
सर्व तीर्थांचे माहेर। जनी म्हणे पंढरपूर। ४।

२३. पंढरीचें सुख पुंडलिकासी आलें। तेणें हें वाढिलें भक्तालागीं । १ ।
भुक्ति मुक्ति वरदान दिधलें । तेंहि नाहीं ठेविलें आपणापाशीं। २ ।
उदार चक्रवर्ती बाप पुंडलिक। नामें विश्वलोक उद्धरिले । ३ ।

## श्री विठ्ठल माहात्म्य

२४. जन्म खातां उष्टावळी। सदा राखी चंद्रावळी। १ ।
राहीरुक्मिणीचा कांत। भक्तिसाठीं कण्या खात। २ ।
देव भुलले पांडुरंग। ऐसा जाणावा श्रीरंग। ३ ।
जनी म्हणे देवराज। करी भक्ताचें हो काज। ४ ।

२५. ऐसा आहे पांडुरंग। भोग भोगूनि निःसंग। १ ।
अविद्येनें नवल केलें। मिथ्या सत्यत्व दाविलें। २ ।
जैसी वांझेची संतति। तैसी संसार उत्पत्ति। ३ ।
तेथें कैंची बा धरिसी। ब्रह्मीं पूर्ण जनी दासी। ४ ।

२६. स्मरतांचि पावसी। तरी भक्तांसी लाधसी। १ ।
ऐसा नाहीं न घडे देवा। वांयां कोण करी सेवा। २ ।
न पुरतां आस। मग कोण पुसे देवास। ३ ।
कोठें चक्रपाणि। तुज आधीं लाही जनी। ४ ।

२७. देव देखिला देखिला। नामें ओळखुनी ठेविला। १ ।
तो हा विटेवरी देव। सर्व सुखाचा केशव। २ ।
जनी म्हणे पूर्ण काम। विठ्ठल देवाचा विश्राम। ३ ।

२८. अनंत लावण्याची शोभा। तो हा विटेवरी उभा। १ ।
पितांबर माळ गांठीं। भाविकांसी घाली मिठी। २ ।
त्याचे पाय चुरी हातें। कष्टलीस माझे माते। ३ ।
आवडी बोलें त्यासी। चला जाऊं एकांतासी। ४ ।
ऐसा ब्रह्मींचा पुतळा। दासी जनी पाहे डोळां। ५ ।

२९. पंढरपुराची होईन मी दासी। लागली आसोसी विठोपायीं। १।
पंढरपुराची होईन मी भोई। विठ्ठल रखुमाई चालतील। २।
पंढरपुराची होईन मी वाळू। खेळती गोपाळू मायबाप। ३।
पंढरपुराची होईन मी शेणी। घालोनी अंगणीं विठोबाच्या। ४।
पंढरपुराची होईन मी पायरी। येतां जातां हरी चरण लागे। ५।
पंढरपुराची होईन मी वाट। येतील अचाट संतजन। ६।
संतजन येती विठ्ठाल भेटासी। नामांकित दासी शरणागत। ७।

३०. बाप रखुमाबाई वर। माझें निजाचें माहेर। १।
तें हें जाणा पंढरपुर। जग मुक्तीचें माहेर। २।
तेथें मुक्ति नाहीं म्हणे। जनी न पाहे त्यांचे वदन। ३।

३१. विठु माझा लेंकुरवाळा। संगें गोपाळांचा मेळा। १।
निवृत्ती हा खांद्यावरी। सोपानाचा हात धरी। २।
पुढें चाले ज्ञानेश्वर। मागें मुक्ताई सुंदर। ३।
गोरा कुंभार मांडिवरी। चोखा जीवा बरोबरी। ४।
बंका कडियेवरी। नामा करांगुळी धरी। ५।
जनी म्हणे गोपाळा। करी भक्तांचा सोहळा। ६।

३२. आळवितां धांव घाली। ऐसी प्रेमाची भुकेली। १।
ते हे यशोदेच्या बाळा। बरवी पाहातसें डोळां। २।
विटेवरी उभी नीट। केली पुंडलिकें धीट। ३।
स्वानंदाचें लेणें ल्याली। पाहून दासी जनी धाली। ४।

३३. तुझ्या निजरूपाकारणें। वेडावलीं षड्दर्शनें। १।
परि सोय न कळे त्यांसी। समीप असतां देवासीं। २।
चारीश्रमें हो कष्टती। वेदशास्त्रें धुंडाळिती। ३।

परि कवणें रीति तुला। न जाणवे जी विठ्ठला। ४ ।
तुझी कृपा होय जरी। दासी जनी ध्रुपद करी । ५ ।

३४. पंढरी सांडोनि जाती वाराणसी । काय सुख त्यांसी आहे तेथें। १ ।
तया पंचक्रोसी म्हणती मरावें । मरोनियां व्हावें जीवन्मुक्त। २ ।
नको गा विठोबा मज धाडूं काशी। सांगेन तुजपाशीं ऐक आतां। ३ ।
मरचीमान्न वेरण स्तंभीं घाली । घालोनियां गाळी पापपुण्य। ४ ।
जावोनियां तेथें प्रहर दोन रात्रीं । सत्य मिथ्या श्रोतीं श्रवण करा । ५ ।
आई आई बाबा म्हणती काय करूं। ऐसें दु:ख थोरू आहे तेथें । ६ ।
इक्षुदंड घाणा जैसा भरी माळी। तैसा तो कवळी काळनाथ। ७ ।
लिंगदेहादिक करिती कंदन। तेथील यातना नको देवा। ८ ।
न जाय तो जीव एकसरी हरी । रडती नानापरी नानादु:खे। ९ ।
अमरादिक थोर थोर भांबावले । भुलोनियां गेले मुक्तीसाठी। १० ।
ती ही मुक्ति माझी खेळे पंढरीसी । लागतां पायांसी संतांचिया। ११ ।
ऐसिये पंढरी पहाती शिखरीं। आणि भीमातीरीं मोक्ष आला । १२ ।
सख्या पुंडलिका लागतांचि पाया। मुक्ति म्हणे वांयां गेलें मी कीं । १३ ।
घर रिघवणी मुक्ति होय दासी। मोक्ष तो पाठीसी धांव घाली । १४ ।
मोक्ष सुखासाठी मुक्ति लोळे। बीं नेघे कोणी कदा काळीं । १५ ।
मोक्ष मुक्ति जिहीं हाणितल्या पायीं। आमुची ती काय धरिती सोयी। १६ ।
समर्थाचे घरी भिक्षा नानापरी। मागल्या पदरीं घालिताती । १७ ।
अंबोल्या सांडोनी कोण मागे भीक। साम्राज्याचें सुख तुझें । १८ ।
जनी म्हणे तुज रखुमाईची आण। जरी मज क्षण विसंबसी। १९ ।

## करूणा

३५. येगे माझे विठाबाई । कृपादृष्टीनें तूं पाहीं । १ ।
तुजविण न सुचे कांही । आतां मी वो करूं कांही। २ ।

माझा भाव तुजवरी। आतां रक्षीं नानापरी। ३।
येई सखये धांउनी। म्हणे नामयाची जनी। ४।

३६. येग येग विठाबाई। माझे पंढरीचे आई। १।
भीमा आणि चंद्रभागा। तुझे चरणींच्या गंगा। २।
इतुक्यासहित त्वां बा यावें। माझे रंगणीं नाचावें। ३।
माझा रंग तुझे गुणीं। म्हणे नामयाची जनी। ४।

३७. आतां वाट पाहूं किती। देवा रुक्माईच्या पती। १।
येंई येंई पांडुरंगे। भेटी देई मजसंगें। २।
मी बा बुडतें भव जळीं। सांग बरवी ब्रीदावळी। ३।
राग न धरावा मनीं। म्हणें नामयाची जनी। ४।

३८. हात निढळावरी ठेवुनी। वाट पाहें चक्रपाणी। १।
धांव धांव पांडुरंगे। सखे जिवलगे अंतरंगे। २।
तुजवांचुनि दाही दिशा। वोस मज जगदीशा। ३।
हांसे करूं नको जनासी। म्हणे नामयाची दासी। ४।

३९. पाय जोडूनि विटेवरी। कर ठेउनी कटावरी। १।
रूप सांवळें सुंदर। कानीं कुंडलें मकराकार। २।
गळां वैजयंती माळा। तो हा मदनाचा पुतळा। ३।
गरुड सन्मुख उभा। म्हणे जनी धन्य शोभा। ४।

४०. सख्या घेतलें पदरीं। आतां न टाकावें दुरी। १।
थोरांचीं उचितें। हेचि काय सांगों तूंते। २।
ब्रह्मियाच्या ताता। सज्जना लक्ष्मीच्या कांता। ३।
आपुली म्हणवूनि। आपंगावी दासी जनी। ४।

४१. गंगा गेली सिंधुपाशीं । त्याने अव्हेरिलें तिसी । १ ।
तरी तें सांगावें कवणाला । ऐसें बोलें बा विठ्ठला । २ ।
जळ कोपे जलचरा । माता अव्हेरी लेंकुरा । ३ ।
जनी म्हणे शरण आलें । अव्हेरितां ब्रीद गेलें । ४ ।

४२. माझी आंधळ्याची काठी । अडकली कवणे बेटीं । १ ।
आतां सांगूं मी कवणासी । धांवे पावें हृषिकेशी । २ ।
तुजवांचुनी विठ्ठला । कोणी नाहींरे मजला । ३ ।
माथा ठेवीं तुझे चरणीं । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

४३. कां गा न येसी विठ्ठला । ऐसा कोण दोष मला । १ ।
मायबाप तूंचि धनी । मला सांभाळीं निर्वाणीं । २ ।
त्वां बा उद्धरिले थोर । तेथें किती मी पामर । ३ ।
दीनानाथा दीनबंधू । जनी म्हणे कृपासिंधू । ४ ।

४४. अगा रुक्मिणीनायका । सुरा असुरा प्रिय लोकां । १ ।
ते तूं धांवें माझे आई । सखे साजणी विठाबाई । २ ।
अगा शिवाचिया जपा । मदनताता निष्पापा । ३ ।
आपुली म्हणवुनी । अपंगावी दासी जनी । ४ ।

४५. नाहीं केली तुझी सेवा । दुःख वाटतसे जिवा । १ ।
नष्ट पापीण मी हीन । नाहीं केलें तुझें ध्यान । २ ।
जें जें दुःख झालें मला । तें त्वां सोसिलें विठ्ठला । ३ ।
रात्रंदिवस मजपाशी । दळूं कांडूं लागलासी । ४ ।
क्षमा करी देवराया । दासी जनी लागे पायां । ५ ।

४६. येरे येरे माझ्या रामा । मनमोहन मेघःश्यामा । १ ।
संतमिसें भेटी । देंई देंई कृपा दृष्टी । २ ।

आमची चुकवी जन्मव्याधी। आम्हां देंई हो समाधी। ३।
जनी म्हणे चक्रपाणि। करीं ऐसी हो करणी। ४।

४७. अहो नारायणा। मजवरी कृपा कां कराना। १।
मी तो अज्ञानाची राशी। म्हणोन आलें पायांपाशीं। २।
जनी म्हणे आतां। मज सोडवीं कृपावंता। ३।

४८. ऐक बापा हृषिकेशी। मज ठेवीं पायांपाशीं। १।
तुझें रूप पाहीन डोळां। मुखीं नाम वेळोवेळां। २।
हातीं धरिल्याची लाज। माझें सर्व करीं काज। ३।
तुजविण देवराया। कोणी नाहीं रे सखया। ४।
कमळापति कमळपाणी। दासी जनी लागे चरणीं। ५।

४९. तुझे पाय माझी डोई। ऐसी करी विठाबाई। १।
आपुल्या ब्रीदाचा कैवारी। विठ्ठल उभा महागरुडापारी। २।
जनी म्हणे शरण आले। पाय पाहातां निवाले। ३।

५०. जोडते लेकरू माता अंगीकारी। मूढ ते अकेरी काय, देवा। १।
नीच पदी दासी संतांच्या घरीची। महिमा सेवेची लाधलीये। २।
थोराचा सेवक गांजिल्या निर्वाणीं। नांवासाठी धनी धांवा घाली। ३।
वेद वाखाणिले स्वामीचे पवाडे। अनाथ बापुडे तारियेले। ४।
जनी म्हणे आतां न विचारी उणे। लोह परिसानें शुद्ध केला। ५।

५१. पोट भरूनी व्यालासी। मज सांडुनी कोठें जासी। १।
धीरा धरा पांडुरंगा। मज कां टाकिलें निःसंगा। २।
ज्याचा जार त्यासी भार। मजला नाहीं आणिक थार। ३।
विठाबाई मायबहिणी। तुझे कृपें तरली जनी। ४।

५२. अविद्येच्या रात्रीं । आडकले अंधारीं । १ ।
तेथुनी काढावें गोविंदा । यशोदेच्या परमानंदा । २ ।
तुझें सन्निधेचे पासी । ठाव नाहीं अविद्येसी । ३ ।
तुझे संगती पावन । उद्धरिले ब्रह्में पूर्ण । ४ ।
अजामेळ शुद्ध केला । म्हणे दासी जनी भला । ५ ।

५३. धन गोत कलत्र माय । सर्व जोडी तुझे पाय । १ ।
सखा तुजवीण पाहीं । दुजा कोणी मज नाहीं । २ ।
माझी न करावी सांडणी । म्हणे तुझी दासी जनी । ३ ।

५४. मी वत्स माझी गायी । नये आतां करूं काई । १ ।
तुम्हीं तरी सांगा कांहीं । शेखी विनवा विठाबाई । २ ।
येंई माझिये हरणी । चुकलें पाडस दासी जनी । ३ ।

५५. सख्या पंढरीच्या राया । घडे दंडवत पायां । १ ।
ऐसें करीं अखंडीत । शुद्ध प्रेम शुद्ध चित्त । २ ।
वेध माझ्या चित्ता । हाचि लागो पंढरीनाथा । ३ ।
जावें ओंवाळुनी । जन्मोजन्मीं म्हणे जनी । ४ ।

५६. कां गा उशीर लाविला । माझा विसर पडिला । १ ।
तुजवरी संसार । बोळविले घरदार । २ ।
तो तूं आपुल्या दासासी । म्हणे जनी न विसंबसी । ३ ।

५७. किती सागूं तूंतें । बुद्धि शिकवणें हें मातें । १ ।
सोमवंशाच्या भूषणा । प्रतिपाळीं हर्षें दीनां । २ ।
शिकवावें तूंतें । हाचि अपराध आमुतें । ३ ।
स्वामीलागीं धीट ऐसी । म्हणती शिकवी जनी दासी । ४ ।

५८. शिणल्या बाह्या आतां। येऊनियां लावीं हाता। १।
तूं माझें वो माहेर। काय पहातोसी अंतर। २।
वोंवाळुनी पायां। जिवेंभावें पंढरीराया। ३।
धर्म ताता धर्म लेंकी। म्हणे जनी हें विलोकीं। ४।

५९. योग न्यावा सिद्धी। सकळ गुणाचिया निधी। १।
अरूपाच्या रूपा। सांब राजाचिया जपा। २।
ब्रह्मियाच्या ताता। म्हणे जनी पंढरीनाथा। ३।

६०. माय मेली बाप मेला। आतां सांभाळीं विठ्ठला। १।
मी तुझें गा लेकरूं। नको मजशीं अव्हेरूं। २।
मतिमंद तुझी दासी। ठाव द्यावा पायांपाशीं। ३।
तुजविण सखे कोण। माझें करील संरक्षण। ४।
अंत किती पाहासी देवा। थोर श्रम झाला जीवा। ५।
सकळ जिवाच्या जीवना। म्हणे जनी नारायणा। ६।

६१. काय करूं या कर्मासी। धांव पाव हृषिकेशी। १।
नाश होतो आयुष्याचा। तुझें नांव नये वाचा। २।
काय जिणें या देहाचें। अखंड अवघ्या रात्रीचें। ३।
व्यर्थ कष्टविली माता। तुझें नाम नये गातां। ४।
जन्म मरणाचें हरी दु:ख। म्हणे जनी दाखवीं मुख। ५।

६२. अहो ब्रह्मांड पाळका। ऐकें रुक्मिणीच्या कुंका। १।
देवा घेतलें पदरीं। तें तूं टाकूं नको दुरी। २।
होतें लोकांमध्यें निंद्य। तें त्वां जगांत केलें वंद्य। ३।
विनवीतसे दासी जनी। परिसावीं माझी विनवणी। ४।

६३. हाचि नेम माझा न फिरे माघारी। राहिले शेजारीं गोविंदाच्या । १ ।
धन्य माझा जन्म केलें, रे बा,येणे विटेवरी जेणे वस्ती केली । २ ।
नामयाची जनी भक्तीचें अजंन लाधलें निधान विटेवरी । ३ ।

६४. रामनामावीण अहो तें शरीर। त्यांचे जळो थोरपण येथें। १ ।
जळो त्याचें ध्यान जळो ते बोलणें। पहिल्या वदन स्नान कीजे। २ ।
नामयाची जनी म्हणे या पुरुषासी। प्रसवली कैसे नेणो त्यातें। ३ ।

६५. येंई जीवाचिया जीवा । रामा देवाचिया देवा। १ ।
सर्व देव बंदीं पडिले। रामा तुम्ही सोडविले। २ ।
मारूनियां लंकापती। सोडविली सीता सती। ३ ।
देवा तुमची ऐसी ख्याती । जनी म्हणे वर्णु किती। ४ ।

६६. अहो देवा हरिहर। उतरीं आम्हां भवपार। १ ।
देवा आम्ही तुझे दास। करूं वैकुंठीं वो वास। २ ।
जनी म्हणे कल्पवृक्ष। देव दुष्टासी पैं भक्ष। ३ ।

६७. शरण आले नारायणा । आतां तारीं हो पावना । १ ।
शरण आला मारुतिराया । त्याची दिव्य केली काया । २ ।
शरण प्रल्हाद तो आला। हिरण्यकश्यपू मारिला। ३ ।
जनी म्हणे देवा शरण। व्हावें भल्यानें जाणोन । ४ ।

६८. ऐक बापा माझ्या पंढरीच्या राया । कीर्तना आलेया आर्तभूतां। १ ।
माझ्या दुणेदारा पुरवीं त्याची आस । न करीं निरास आर्तभूतां। २ ।
त्रैलोक्याच्या राया सख्या उमरावा। अभय तो द्यावा कर तयां। ३ ।
जैसा चंद्रश्रवा सूर्य उच्चैश्रवा। अढळपद ध्रुवा दिधलेंसे। ४ ।
उपमन्यु बाळका क्षीराचा सागरू। ऐसा तूं दातारू काय वानूं। ५ ।
म्हणे दासी जनी आलें या कीर्तनीं। तया कंटाळुनी पिटूं नका। ६ ।

६९. गजेंद्रासी उद्धरिलें । आम्हीं तुझें काय केलें । १ ।
तारिली गणिका । तिहीं लोकीं तुझा शिक्का । २ ।
वाल्हा कोळी अजामेळ । पापी केला पुण्यशीळ । ३ ।
गुणदोष मना नाणीं । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

७०. काय करूं पंढरीनाथा । काळ साह्य नाहीं आतां । १ ।
मज टाकिलें परदेशी । नारा विठा तुजपाशीं । २ ।
श्रम बहु झाला जीवा । आतां सांभाळीं केशवा । ३ ।
कोण सखा तुजवीण । माझें करी समाधान । ४ ।
हीन दीन तुझे पोटीं । जनी म्हणे द्यावी भेटी । ५ ।

## आर्तता

७१. तुझे पाय रूप डोळा । नाहीं देखिलें गोपाळा । १ ।
काय करूं या कर्मासी । नाश होतो आयुष्यासी । २ ।
जन्मा येऊनियां दुःख । नाहीं पाहिलें श्रीमुख । ३ ।
लळे पुरविसी आमुचे । म्हणे जनी ब्रीद साचें । ४ ।

७२. वाट पाहतें मी डोळां । कां गा न येसी विठ्ठला । १ ।
तूं वो माझी निज जननी । मज कां टाकियेलें वनीं । २ ।
धीर किती धरूं आतां । कव घालीं पंढरिनाथा । ३ ।
मला आवड भेटीची । धणी घेईन पायांची । ४ ।
सर्व जिवांचे स्वामिणी । म्हणे जनी माय बहिणी । ५ ।

७३. विठोबारायाच्या अगा लेकवळा । जाउनी कळवळा सांगा माझा । १ ।
विठोबारायाच्या अगा मुख्य प्राणा । भेटवीं निधाना आपुलिया । २ ।
अगे क्षेत्र माये सखे पंढरिये । मोकलीते पाय जीव जातो । ३ ।
विश्वाचिये माते सुखाचे अमृत । सखा पंढरिनाथ विनवी तरी । ४ ।
तूं मायबहिणी देवाचे रुक्मिणी । धरोनियां जनी घालीं पायीं । ५ ।

७४. कां गे निष्ठुर झालीसी । मुक्या बाळातें सांडिसी । १ ।
तुज वांचोनिया माये । जीव माझा जावों पाहे । २ ।
मी वत्स माझी माय । नये आतां करूं काय । ३ ।
प्राण धरियेला कंठीं । जनी म्हणे देंई भेटी । ४ ।

७५. माझिये जननी हरिणी । गुंतलीस कवणे वनीं । १ ।
मुकें तुझें मी पाडस । चुकलें माये पाहें त्यास । २ ।
चुकली माझिये हरिणी । फिरतसे रानोरानीं । ३ ।
आतां भेटवा जननी । विनवितसे दासी जनी । ४ ।

७६. तान्हें वत्स जेवी गाउली लागुनी तैसे माझे मनीं पंढरीनाथा । १ ।
धन्य माझा जन्म केलें, रे बा, येणें विटेवरी जेणे वस्ती केली । २ ।
नामयाची जनीसी भक्तीचेच वेड साधलें निधान विटेवरी । ३ ।

७७. चिंतनीं चित्ताला । लावी मनाच्या मनाला । १ ।
उन्मनीच्या मुखा आंत । पांडुरंग भेटी देत । २ ।
कवटाळुनी भेटी पोटीं । जनी म्हणे सांगूं गोष्टी । ३ ।

७८. पुंडलिकें नवल केलें । गोपीगोपाळ आणिले । १ ।
हेंचि देंई हृषिकेशी । तुझें नाम अहर्निशीं । २ ।
नलगे आणिक प्रकार । मुखीं हरी निरंतर । ३ ।
रूप न्याहाळिन डोळां । पुढें नाचेन वेळोवेळां । ४ ।
सर्वांठायीं तुज पाहें । ऐसें देऊनि करीं साह्य । ५ ।
धांवा करितां रात्र झाली । दासी जनीसी भेट दिली । ६ ।

७९. पक्षी जाय दिगंतरां । बाळकांसी आणी चारा । १ ।
घार हिंडते आकाशीं । झांप घाली पिल्लापासीं । २ ।
माता गुंतली कामासी । चित्त तिचें बाळापाशीं । ३ ।

वानर हिंडे झाडावरी। पिलीं बांधुनी उदरीं। ४ ।
तैंसी आम्हासी विठ्ठल माये। जनी वेळोवेळां पाहे। ५ ।

८०. बाळे भोळे ठकविशी। तें तंव न चले आम्हांपाशीं । १ ।
गर्व धरिसी नामाचा। सोहं सोहं गर्जे वाचा। २ ।
आशा तृष्णा तुम्हांपाशीं। नाहीं म्हणे जनी दासी। ३ ।

८१. प्रहर एक रात्र उरलियावरी। येऊनिया शेजारीं बैसला जे। १ ।
उठी, वोल जानई घाली वो दळण। आवडीचें गाणें गाऊं दोघे। २ ।
उठविला मानेखालीं घालुनी हात। अंगें नेसवीत लुगड्यासी। ३ ।
दळणाची पाटी अंगे उचलोनी। शेजारी बैसोनि दळूं लागे। ४ ।
सुखरूप असावी माझी जनी दासी। अंगें मी सेवेसी करीन तिच्या। ५ ।
माझें सर्व काम करी चक्रपाणी। तेथें कैंची जनी नामयाची। ६ ।

८२. जनी म्हणे पांडुरंगा। माझ्या जीवींच्या जीवलगा।
विनविते सांगा। महिमा साधुसंतांचा। १ ।
कैसी वसविली पंढरी। काय महिमा भीमातीरीं।
पुंडलिकाच्या द्वारीं। कां उभा राहिलासी। २ ।
कैसा आला हा गोविंद। कैसा झाला वेणुनाद।
कैसा येउनी नारद। उभा कां राहिला। ३ ।
कृपा करा नारायणा। सांगा अंतरींच्या खुणा।
येऊं दे करूणा। दासी जनी विनवितसे। ४ ।

८३. देव तारक तारक। देव दुष्टांसी मारक। १ ।
गीतेमध्ये आदि अंत। ऐसें बोले तो भगवंत। २ ।
शत्रुलागीं आधीं मारी। भक्तसंकटीं रक्षी हरी। ३ ।
जनी म्हणे कृपा करी। भाव पाहोन अंतरीं। ४ ।

८४. ज्याचा सुखा हरी । त्यावरी विश्व कृपा करी । १ ।
उणें पडों नेदी त्याचें । वारें सोसी आघाताचें । २ ।
तयावीण क्षणभरी । कदा आपण नव्हे दुरी । ३ ।
अंगा आपुले ओढोनी । त्याला राखे जो निर्वाणीं । ४ ।
ऐसा अंकित भक्तांसी । म्हणे नामयाची दासी । ५ ।

८५. देव भावाचा लंपट । सोडुनी आला हो वैकुंठ । १ ।
पुंडलिकापुढें उभा । सम चरणांची शोभा । २ ।
हातीं चक्र पायीं वांकी । मुख भक्तांचे अवलोकीं । ३ ।
उभा बैसे न सर्वथा । पाहे कोडें भक्त कथा । ४ ।
सर्व सुखाचा सागर । जनी म्हणे शारंगधर । ५ ।

❋ भक्तवत्सलता ❋

८६. झाडलोट करी जनी । केर भरी चक्रपाणि । १ ।
पाटीं घेऊनियां शिरीं । नेऊनियां टाकी दुरी । २ ।
ऐसा भक्तिसी भुलला । नीच कामें करूं लागला । ३ ।
जनी म्हणे विठोबाला । काय उतराई होऊं तुला । ४ ।

८७. पाणियाचे वाटे । विठो घाली नेटे । १ ।
घागर घेऊनी हातांत । पाणी ओती हंडियांत । २ ।
ऐसा येरझारा करी । भरल्या रांजण - घागरी । ३ ।
पाणी पुरे, पांडुरंगा । दासी जनीच्या अंतरंगा । ४ ।

८८. चोखा मेळ्याचिये संगें । मेलें ढोर ओढी अंगें । १ ।
सेना न्हाव्या उशीरा झाला । न्हाईपन अंगी ज्याला । २ ।
दळी कांडी वाहे पाणी । बोले नामयाची जनी । ३ ।

८९. पूर्वी काय तप नेणों पैं हो केलें । निधान जोडिलें पंढरीचें । १ ।
येऊनियां देव दळूं लागे अंगें । रखुमाईचा संग दूर केला । २ ।

तैसाचि पैं संगें येऊनि बाहेरी। वेंचोनियां भरी शेणी अंगें। ३।
ओझें झालें म्हणूनि पाठी पितांबरी। घेऊनियां घरीं आणितसे। ४।
ऐसें जेथें काम करी चक्रपाणि। तेथें कैंची जनी नामयाची। ५।

९०. एकटी तूं गाणें गासी। दुजा शब्द उमटे पाशीं। १।
कोण गे तुझ्या बरोबरी। गाणें गाती निरंतरीं। २।
पांडुरंग माझा पिता। रखुमाई झाली माता। ३।
ऐशियाच्या घरीं आलें। जनी म्हणे धन्य झालें। ४।

९१. जनी डोईनें गांजली। विठाबाई धाविन्नली। १।
देव हातें बुचडा सोडी। उवा मारीतसे तांतडी। २।
केश विंचरुनी मोकळे केले। जनी म्हणे निर्मळ झालें। ३।

९२. जनी बैसली न्हायाला। पाणी नाहीं विसणाला। १।
घागर घेउनी पाण्या गेली। मागें मागें धांव घाली। २।
घागर घेऊनियां हातीं। पाणी रांजणांत ओती। ३।
ऐशा येरझारा केल्या। रांजण घागरी भरिल्या। ४।
पाणी पुरे पांडुरंगा। दासी जनीच्या अंतरंगा। ५।

९३. एके दिवशीं न्हावयास। पाणी नव्हतें विसणास। १।
देव धांवोनियां आले। शीतळ उदक घे घे बोले। २।
आपुल्या हातें विसणीं। घाली जनीच्या डोयी पाणी। ३।
माझ्या डोईच्या केसांस। न्हाणें नव्हतें फार दिवस। ४।
तेणें मुरडी केसांस। कां म्हणे उगीच बैस। ५।
आपुल्या हातें वेणी घाली। जनी म्हणे माय झाली। ६।

९४. ऐसी कृपावंत कोण। माझे विठाईवांचोन। १।
ऐसा कोण आहेरवासा। पदी बसवीं आपल्या दासा। २।

ऐसा कोण सरदार । छत्र धरी दासावर। ३ ।
ऐसा कोण आहे धनी । दासी जनी घाली वेणी। ४ ।

९५. प्रात: काळी उठोनि पाहे । वाकळात निजला आहे । १ ।
काय वाकळाची गोडी । निद्रा लागली, बा, वेडी। २ ।
उगवला दिनकर । घरी लपलाहे चोर । ३ ।
मुख उघडुनि पाहे । शंख, चक्र दिसताहे । ४ ।
वेड लागलें मुकुंदा । दासी जनी सोडी धंदा । ५ ।

९६. तुळशीचे वनीं । जनी उकलीत वेणी। १ ।
हातीं घेऊनियां लोणी । डोई चोळी चक्रपाणि । २ ।
माझे जनीला नाहीं कोणी । म्हणुनी देव घाली पाणी । ३ ।
जनी सांगे सर्व लोकां । न्हाऊं घाली माझा सखा । ४ ।

९७. साळी सडायास काढी । चक्रपाणि उखळ झाडी । १ ।
कांडितां कांडितां । शीण आला पंढरिनाथा । २ ।
सर्व अंगीं घाम आला । तेणें पितांबर भिजला । ३ ।
पायीं पैंजण हातीं कडीं । कोंडा पांखडुनि काढी। ४ ।
हाता आला असे फोड । जनी म्हणे मुसळ सोड । ५ ।

९८. एके दिवशीं वाडियांत । देव आले अवचित । १ ।
अवघीं पायांस लागली । देवें त्यांवरी कृपा केली । २ ।
बाहेर कामासी गुंतल्यें । देवें मजला विचारिलें । ३ ।
बाहेर आहेस वो बोलती । देव मजला हाटकिती । ४ ।
हात धुऊनि जवळ गेल्यें । कोण गे जनी हांसून बोले । ५ ।

९९. दळण्याच्या मिषें । विठ्ठल सावकाशें। १ ।
देहबुद्धीचें वैरण । द्वैत खडा रे निसून। २ ।

एकलीच गातां । दुजा साद उमटतां । ३ ।
कोण गे तुझे बरोबरी । साद देतो निरंतरी । ४ ।
खूण कळली नामदेवा । विठ्ठल श्रोता जनीच्या भावा । ५ ।

१००. मग हांसोनि सकळी । पाहू देव कैसा बळी । १ ।
आले नामदेवा घरीं । प्रेमें भुललासे हरी । २ ।
घाली जातिया वैरण । गाय आवडीचें गाणे । ३ ।
पुढें देखे ज्ञानेश्वरा । देव झालासे घाबरा । ४ ।
जनी म्हणे पंढरिनाथा । जाय राउळासी आतां । ५ ।

१०१. फिरली माघारी वृत्ती पाहूं गेली । नारायण झाली येकायेकी । १ ।
आतां बोलवेना दाटला हे कंठीं । त्याची पडे मिठी प्रेमलोटे । २ ।
जैसें लवण हें सिंधूसी मिळाले । तैसें मज केलें येकायेकीं । ३ ।
तेणें चैतन्याच्या उघडला डोळा । वैकुंठीं सावळा नारायण । ४ ।
नामयाची जनी मुकुट देवाचे । पांडुरंगजीचें नांव साजे । ५ ।

१०२. निवृत्ति पुसत । कोठें होते पंढरिनाथ । १ ।
खूण कळली हृषिकेशी । सांगों नको निवृत्तीसी । २ ।
उत्तर दिलें ज्ञानदेवें । नवल केवढें सांगावे । ३ ।
शिव वंदी पायवणी । नये योगियांचे ध्यानीं । ४ ।
द्वारीं उभे ब्रह्मादिक । गुण गाती सकळीक । ५ ।
जनीसवें दळी देव । तिचा देखोनियां भाव । ६ ।

१०३. काकड आरती । करावया कमळापती । १ ।
भक्त मिळाले सकळ । रितें देखिलें देउळ । २ ।
ज्ञानेश्वर बोले । आतां देव कोठें गेले । ३ ।
ठावें जाहलें अंतरीं । देव दळी जनी घरीं । ४ ।

१०४. जाय जाय राउळासी। नको येऊं आम्हांपाशीं। १ ।
जाऊं आम्ही बरोबर। झाला तिचा हो चाकर। २ ।
तिजसंगें काम करी। ऐसा जाणा देव हरी। ३ ।
चहूं हातीं धुणें केलें। जनी म्हणे बरें झालें। ४ ।

१०५. आतां पुरे हा संसार। कोठें फेडूं उपकार। १ ।
सांडूनियां थोरपण। करी दळण कांडण। २ ।
नारीरूप होउनी हरी। माझें न्हाणें धुणें करी। ३ ।
राना जाये वेंची शेणी। शेखीं वाहे घरीं पाणी। ४ ।
ठाव पायापाशीं। म्हणे नामयाची दासी। ५ ।

१०६. धुणें घेऊनि कांखेसी। जनी गेली उपवासी। १ ।
मागें विठ्ठल धांवला। म्हणे कां टाकिलें मला। २ ।
कां गा धांवोनि आलासी। जाय जाय राउळासी। ३ ।
चहूं हातें धुणें केलें। जनी म्हणे बरें झालें। ४ ।

१०७. जनी जाय शेणासाठीं। उभा आहे तिच्या पाठीं। १ ।
पितांबराची कांस खोवी। मागें चाले जनाबाई। २ ।
गौऱ्या वेंचूनि बांधिली मोट। जनी म्हणे द्यावी गांठ। ३ ।
मोट उचलून डोई घेई। मागें चाले जनाबाई। ४ ।

१०८. राना गेली शेणीसाठी। वेंचूं लागे विठो पाठी। १ ।
पितांबर ओचे खोंवी। पायीं शोभा पारखावी। २ ।
रिती बांधितांचि मोट। जनी म्हणे द्यावी भेट। ३ ।

१०९. जनीचिया बोलें करी नित्य काम । वसवी तिचें धाम लक्ष्मीसी। १ ।
जनीचिया गोष्टी प्रेम ज्याचे मनीं। तयाचे चरणीं ओढवी माथा। २ ।
महेशादिदेव तेहि तया ध्याती। जे आवडे गाती जनी ध्याती। ३ ।

११०. आई मेली बाप मेला । मज सांभाळीं विठ्ठला । १ ।
हरी रे मज कोणी नाहीं । माझी खात असे डोई । २ ।
विठ्ठल म्हणे रुक्मिणी । माझे जनीला नाहीं कोणी । ३ ।
हातीं घेउनी तेलफणी । केंस विंचरून घाली वेणी । ४ ।
वेणी घालुन दिधली गांठ । जनी म्हणे चोळ बा पाठ । ५ ।
जनी म्हणे बा गोपाळा । करी दुबळीचा सोहळा । ६ ।

१११. एक प्रहर रात्र झाली । फेरी विठ्ठलाची आली । १ ।
नामा म्हणे जनी पाहे । द्वारीं उभा कोण आहे । २ ।
प्रभा घरांत दाटली । एक सराद सुटली । ३ ।
एकमेकां आलिंगन । नामा म्हणे जनी धन्य । ४ ।

११२. जनी जाय पाणीयासी । मागें धांवे हृषिकेशी । १ ।
पाय भिजों नेदी हात । माथां घागरी वहात । २ ।
पाणी रांजणांत भरी । सडासारवण करी । ३ ।
धुणें धुऊनियां आणी । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

११३. पदक काय गेलें निशाणाचें । परी हीनत्व प्रभूचें । १ ।
तया रणा येणें लागे । काय सर, वो माझे । २ ।
करी आलीस तत्त्वतां । कोण मानी त्याची सत्ता । ३ ।
जनी म्हणे हृषीकेशी । तैसा, देवा, तूं नव्हेसी । ४ ।

११४. एके रात्रींचे समयीं । देव आले लवलाहीं । १ ।
सुखशेजे पहुडले । जनीसवें गुज बोले । २ ।
गुज बोलतां बोलतां । निद्रा आली अवचिता । ३ ।
उठा उठा चक्रपाणि । उजाडलें म्हणे जनी । ४ ।

११५. पदक माळा सकलाद । तेथें टाकिली गोविंदें । १ ।
देव तांतडी निघाले । वाकळ घेउनी पळाले । २ ।

भक्त येती महाद्वारीं । चोर पडले देव्हारीं। ३ ।
नवल झालें पंढरपुरीं । देव राबे दासी घरीं । ४ ।
त्रिभुवनांत मात गेली । दासी जनी प्रगटली। ५ ।

११६. पदक विठ्ठलाचें गेलें। ब्राह्मण म्हणती जनीनें नेलें । १ ।
अगे शिंपियाचे जनी। नेलें पदक दे आणुनी। २ ।
देवासमोर तुझें घर। तुझें येणें निरंतर। ३ ।
म्यां नेलें नाहीं जाण । सख्या विठोबाची आण। ४ ।
वाकळ झाडुनि पाहती । पडलें पदक घेऊनि जाती। ५ ।
जनी वरी आली चोरी । ब्राह्मण करिती मारा मारी । ६ ।
धाविन्नले चाळीस गडी । जनीवरी पडली उडी। ७ ।
दंडीं लाविल्या काढण्या । विठो धांवरे धावण्या । ८ ।
चंद्रभागे रोविला शूळ । जनाबाईस आलें मूळ। ९ ।
हातीं टाळी वाजविती। मुखीं विठ्ठल बोलती । १० ।
विलंब लागला ते वेळीं । म्हणती जनिला द्यारे सुळीं। ११ ।
ऐसा येळकोट केला । जनी म्हणे विठो मेला । १२ ।
तंव सुळाचें झालें पाणी। धन्य म्हणे दासी जनी । १३ ।

११७. अरे विठ्या विठ्या । मूळ मायेच्या कारट्या । १ ।
तुझी रांड रंडकी झाली। जन्मसावित्री चुडा ल्याली । २ ।
तुझें गेलें मढें । तुला पाहून काळ रडे । ३ ।
उभी राहूनि आंगणी। शिव्या देत दासी जनी। ४ ।

११८. आम्ही सिंदळी वो बाई। पतिव्रता व्रत डोई। १ ।
आमचे पाल भीवरेत । विठू आमचे मंदिरांत। २ ।
करूं साधु संता व्यापार। हरिनामाचा बाजार । ३ ।
जनी म्हणे परद्वार केले। जन्ममरण चुकविले। ४ ।

## श्रीनामदेव चरित्र

११९. धन्य ते पंढरी धन्य पंढरिनाथ। तेणें हो पतीत उद्धरिले। १ ।
धन्य नामदेव धन्य पंढरिनाथ। तयानें अनाथ उद्धरिले। २ ।
धन्य ज्ञानेश्वर धन्य त्याचा भाव। त्याचे पाय देव आम्हां भेटी। ३ ।
नामयाची जनी पालट पैं झाला। भेटावया आला पांडुरंग। ४ ।

१२०. देहाचा पालट विठोबाचे भेटी। जळ लवणा गांठीं पडोन ठेली। १ ।
धन्य मायबाप नामदेव माझा। तेणें पंढरीराजा दाखविलें। २ ।
रात्रंदिवस भाव विठ्ठलाचे पायीं। चित्त ठायींचे ठायीं मावळलें। ३ ।
नामयाचे जनी आनंद पैं झाला। भेटावया आला पांडुरंग। ४ ।

१२१. राजाई गोणाई। अखंडित तुझे पायीं। १ ।
मज ठेवियलें द्वारीं। नीच म्हणोनि बाहेरी। २ ।
नारा गोंदा महादा विठा। ठेवियलें अग्रवाटा। ३ ।
देवा केव्हां क्षेम देसी। आपुली म्हणोनी जनी दासी। ४ ।

१२२. माझ्या नामयाची दोरी। तुझ्या हातामधे आहे।
क्षेम देवोनिया राहे। केशिराजा। १ ।
माझ्या नामयाचा भाव। भक्तिप्रेमात नाहला।
रंक धनवंत झाला। पांडुरंगे। २ ।
माझ्या नामयाची गाणी। तुझे आहे महिमान।
ऐक तुझा तू सन्मान। हृषिकेशी। ३ ।
माझ्या नामयाचे ऋण। कसे फेडशील देवा।
करी पुंडलिक हेवा। वाळुवंटी। ४ ।
माझ्या नामयाची निंदा। तुझी तीच रे नालस्ती।
मग होईल मध्यस्ती। दासी जनी। ५ ।

१२३. नामदेवाचे घरीं । चौदाजण स्मरती हरी । १ ।
चौघेपुत्र चौंघी सुना । नित्य स्मरती नारायणा । २ ।
आणिक मायबाप पाही । नामदेव राजाबाई । ३ ।
आऊबाई लेकी लिंबाबाई बहिणी । पंधरावी ती दासी जनी । ४ ।

१२४. पुंडलिकापाशीं । नामा उभा कीर्तनासी । १ ।
येऊनियां पांडुरंग । स्वयें टाळ धरी अंगें । २ ।
गाऊं लागे बरोबरी । नाहीं बोलायाची उरी । ३ ।
स्वर देवाचा उमटला । दासी जनीनें ओळखिला । ४ ।

१२५. हाटीं जायाचि तांतडी । नामा होता पैल थडी । १ ।
म्हणे जा गे आणा त्यासी । नाहीं तरी मी उपवासी । २ ।
जनी धांवत चालली । मागें विठ्ठल माउली । ३ ।

१२६. ज्योति भरली की जी । आतां नाहीं दुजा भाव । १ ।
मन ठकासी ठकिलें । कृष्ण अक्षरनें लिहिलें । २ ।
झाला सर्वांगाचा डोळा । हरी नामाची ही लीला । ३ ।
मज एकांतासी नेलें । पुन्हां नाहीं वो, आणिलें । ४ ।
जनी नामयाची दासी । पांडुरंग भीवरेसी । ५ ।

१२७. शेट्या झाला हरी । द्रव्य गोणी लोटी द्वारीं । १ ।
बुद्धि सांगे राजाईसी । तुम्ही न छळावें नामयासी । २ ।
अवघ्या वित्तासी वेंचावें । सरल्या मजपासीं मागावें । ३ ।
विठ्ठलशेट नाम माझें । नामयाला सांगा वोजे । ४ ।
आतां उचित दासासी । ऐसें बोले राजाईसी । ५ ।
ऐसे बोलोनियां गेला । म्हणे जनी नामा आला । ६ ।

१२८. भक्ती मुक्तीचा कौल दिधला । जन्म-मरणाचा धाक तुटला । १ ।
विठ्ठल नामाचें मांडुनिया केणें । न संग ने घे त्यासि अपार उणें । २ ।

रामनामाची मुद्रा दिधली। भक्तिभावें कैसी शाश्वत केली। ३ ।
नामयाची जनी पेचेसी आली । केणे भरीती जाली विटेवरी। ४ ।

१२९. गोणाई राजाई दोघी सासू सुना । दामा नामा जाणा बापलेंक। १ ।
नारा विठा गोंदा महादा चवघे पुत्र। जन्मले पवित्र त्याचे वंशीं। २ ।
लाडाई गोडाई येसाई साखराई । चवघी सुना पाहीं नामयाच्या। ३ ।
लिंबाई ती लेकी आऊबाई बहिणी । वेडीपिशी जनी नामयाची । ४ ।

१३०. सुंबाचा करदोडा रकट्याची लंगोटी । नामा वाळवंटी कथा करी। १ ।
ब्रह्मादिक देव येवोनि पहाती। आनंदे गर्जती जयजयकार। २ ।
जनी म्हणे त्याचे काय वर्णू सुख। पहाती जे मुख विठोबाचें । ३ ।

१३१. मागें संत झाले। नामया ऐसें कोण बोले । १ ।
नामा जाता राउळासी । देव बोले आधी त्यासी । २ ।
केवढें नवल सांगावे । दासी जनीचे पद लिहावें । ३ ।

१३२. पूर आला पंढरीसी । पाणी लागे पायरीसी । १ ।
संतजन हो मिळाले । उठुनी नामयाजवळी गेले । २ ।
नामा सांगे विठोबासी । उतार द्यावा भिवरेसी। ३ ।
दीनवत्सल महाराज। जनी म्हणे केले काज। ४ ।

१३३. मी गा पातकाची राशी। तुमची पुण्याची मिराशी। १ ।
द्यावा परता नामदेव । ठेवा जवळी त्याचा भाव। २ ।
नष्ट पै चांडाळीण मी। तुम्ही सहस्रनामी, अनामी । ३ ।
माझी वाणी शिवराळ। तुम्ही अंतर्बाह्य रसाळ। ४ ।
मज कळले नाही मर्म। दया, क्षमा तुमचा धर्म। ५ ।
आता अंत नका पाहू । नामावाचून कैशी राहू। ६ ।
झेंडा खांद्यावर मिरवीन। घरी नामया नेईन। ७ ।
माझा श्वास नामाठायी। जनी पडते देवा पायी। ८ ।

१३४. वोढिला ताडिला । देव भक्तिनें फाडिला । १ ।
एका प्रेमा नामासाठिं । भक्ति कोंडियला कंठी । २ ।
झाला नामयाचा मजूर । मोळ्या बांधाटयाचा थर । ३ ।
भिंती चांदया रचिले । त्याचे छप्पर शेकारीले । ४ ।
वरी सोडुनियां पाणी । धन्य भक्त म्हणे जनी । ५ ।

१३५. वारा पाणी मुसळ धारा । तेणें मोडिलें छपरा । १ ।
मग विठाई धांवली । हातीं चक्र धांवत आली । २ ।
वासे लाविले चौफेर । क्षणामध्यें केलें घर । ३ ।
जागा झाला नामदेव । द्वारीं उभे पंढरीराव । ४ ।
डोयी ठेवून पायांवरी । दासी जनी चरण चुरी । ५ ।

१३६. ज्ञानेश्वर म्हणे नामयासवें जेविसी । नाही हृषिकेशी ह्मणतसे । १ ।
सांगितलें एक भलतेंचि बोलसी । आहे याची भ्रांति ज्ञानेश्वरा । २ ।
वाहीयेलें त्वरें ऐसें कांही काम । उठे मेघशाम तातडीनें । ३ ।
निरोप येवोनि सांगावा एकांती । म्हणे जनीप्रति पांडुरंग । ४ ।
देव म्हणे नामया ऐकावें वचन । येईल साधोन वेळ तुझी । ५ ।
जनी म्हणे आतां समजलें मज । धरीन उमज येथोनियां । ६ ।

१३७. आषाढी एकादशी । नामा होता उपवासी । १ ।
देवें गरुड धाडिला । वेगीं बोलाविलें त्याला । २ ।
राही म्हणे पांडुरंगा । कोणें बोलाविलें सांगा । ३ ।
माझ्या जिवीचे जीवन । त्याला बोलाविले जाण । ४ ।
ऐसा भक्तराज निका । दासी जनीचा आत्मसखा । ५ ।

१३८. नामा येऊनियां पाहे । आजि कौतुक दिसताहे । १ ।
तंव निवेदी राजाई । लागे नामयाचे पायीं । २ ।

नामा म्हणे या द्रव्यासी । आम्ही नातळों मानसीं । ३ ।
वेगीं बोलवा ब्राह्मण । करु आतां संतर्पण । ४ ।
हातीं टाळ दिंडीगान । हेंचि आमुचे सर्व धन । ५ ।
ऐसें आश्वर्य देखोनी । जनी हांसतसे मनी । ६ ।

१३९. उभा माझा हरी देखियला डोळां । सुकुमार सांवळा भेटियेला । १ ।
सुखाचें अंतर रंगलें हें चित्त । सदा हरि पाहात नारायण । २ ।
कृपादृष्टी केली चारी भुजा माते । शंखचक्र हात दोन्ही माझे । ३ ।
मागें पुढें उभा मीचि नारायण । हातीं सुदर्शन पाहियेला । ४ ।
जनीचिये भेटीमाजीं निरंतर । सदा कृपादृष्टी भक्तांवरी । ५ ।

१४०. करुनी आरती । नामा आला घराप्रती । १ ।
तेणें धरियेले व्रता । अन्न न घ्यावें सर्वथा । २ ।
ऐसा जाणोनिया नेम । अनुभवी पुरुषोत्तम । ३ ।
आषाढी एकादशी । विप्रवेषें हृषिकेशी । ४ ।
आला नामयाचे सदनी । नाम गाय दासी जनी । ५ ।

१४१. नमुनी ब्राह्मण । म्हणे मज द्यावें अन्न । १ ।
नामा म्हणे एकादशी । ईच्छित द्यावे फळारासी । २ ।
अन्नावांचोनी आतां । मज नको रे सर्वथा । ३ ।
हातापायांची बेगडी । विप्रें घातली मुरकुंडी । ४ ।
जीव सोडी चक्रपाणि । म्हणे नामयाची जनी । ५ ।

१४२. जनसमुदाय मिळाला । धि:कारिती नामयाला । १ ।
विप्र बोलावुनी वेगें । प्रेत नेलें चंद्रभागे । २ ।
मोठे रचुनी सरण । मध्यें निजविला ब्राह्मण । ३ ।
नामा शय्या पहूडला । म्हणे अग्नि द्या आम्हाला । ४ ।

अग्नि दिला जयाप्रती । देव विमानी पाहती। ५ ।
विस्मित झाला चक्रपाणि। प्रगट होय म्हणे जनी । ६ ।

१४३. अग्नी लागतां अंगासी। घाबरला हृषिकेशी। १ ।
निजरुपे प्रगटला। चरणी मस्तक ठेविला। २ ।
सोनसळा वैजयंती । कोटि सूर्य ते लोपती। ३ ।
नामा म्हणे विठोबाला। भला अंत रे पाहिला। ४ ।
हाती धरुनी नामयासी। पाठ थापटी हृषिकेशी। ५ ।
गेला राउळीं चक्रपाणि । भावे वंदी दासी जनी। ६ ।

१४४. धन्य माझा जन्म धन्य माझा वंश । धन्य विष्णुदास स्वामी माझा। १ ।
कामधाम माझे केशवाचे पायी। दिननिशी पाहे हारपली। २ ।
शुक सनकादिक जेणें सुखें धाले। ते सुख राहिले माझ्या मनीं। ३ ।
जनी म्हणे जगी अलभ्य लाभ झाला। हरी सापडला विटेवरी। ४ ।

१४५. नोवरीया संगे वऱ्हाडीया सोहोळा । मांडे पुरणपोळ्या मिळे अन्न । १ ।
परीसाचेनीसंगे लोहो होय सोनें । तयाची भूषणें श्रीमंतासी । २ ।
जनी म्हणे जोड झाली विठोबाची । दासी नामयाची म्हणोनिंया । ३ ।

१४६. ऐका हो नामयाचा जन्म मूळसंचित । धृ० ।
हिरण्यकश्यपकुळी नामा प्ऱ्हाद । पद्मीनी नाम माझे श्रेष्ठ दासीचें पद। १ ।
दुसरा जन्म याचा अंगज रामभक्त । मंथरा नाम माझें भरतें मारिली लात। २ ।
द्वापारीं कृष्णसेवा उद्धव जन्मला। कुबज्या नाम माझें देवें उद्धार केला। ३ ।
कलीत नामदेव विठ्ठल चिंतनी। त्याचीच सेवेलागी दासी जन्मली जनी। ४ ।

१४७. एकच टाळी झाली चंद्रभागे वाळवंटी । माझा ज्ञानराज गोपाळासी लाह्या वाटी। १ ।
नामदेव कीर्तन करी पुढे नाचे पांडुरंग । जनी म्हणे बोला ज्ञानदेवा अभंग। २ ।
अभंग बोलता रंग कीर्तनीं भरिला । प्रेमाचेनि छंदें विठ्ठल नाचूं लागला। ३ ।

साधु या संतांनी देवाला धरिला मनगटीं। काय झालें म्हणुनि दचकले जगजेठी। ४।
ऐसा कीर्तन महिमा सर्वांमाजी वरिष्ठ। जडमूढ भाविका सोपी केली पायवाट। ५।
नामयाची जनी लोळे संताच्या पायी। कीर्तन प्रेमरस अखंड देई गे विठाई। ६।

## तीर्थावळीचे अभंग

१४८. जावोनी राउळा जोडूनिया हात। बोले ज्ञानेश्वर विठोबासी। १।
करावी ही तीर्थे आवड अंतरी। घ्यावे बरोबरी नामदेवा। २।
ऐकताचि ऐसें म्हणे पांडुरंग। न धाडितां राग येईल तुज। ३।
तयाविण मज घडी जरी जाय। युगा ऐसी होय ज्ञानेश्वरा। ४।
जनी म्हणे मग नामया पाचारी। कृपाळुवा हरि मायबाप। ५।

१४९. जाय बरोबरी नामया तूं जाय। न चले उपाय कांहीं येथें। १।
करूं काय मज पडिलें सांकडे। उल्लंघेना भीड मज याची। २।
नामा म्हणे ऐका स्वामी नारायणा। एक विज्ञापना परिसावी। ३।
कटावरी कर नाही ज्या देवांचे। न घे मी तयाचें दरूशन। ४।
मारिताची हांक यावे त्वां झडकरी। बरे म्हणे हरि नामयासी। ५।
निवृत्ति ज्ञानेश्वर सोपान चांगया। जनी म्हणे तया सांगतसे। ६।

१५०. तुम्ही सकळिक संत आहात सज्ञान। हें माझे अज्ञान फार आहे। १।
याजबरोबर चालावी हो वाट। मोडतील कांटे सांभाळावे। २।
हळुहळु जावे करु नका घाई। चालायाची नाही सवय यासी। ३।
लागतांचि भुक न घरी हा निर्धार। घ्यावा समाचार क्षणाक्षणा। ४।
जनी म्हणे ऐसें बोलिला घननीळ। नेत्रीहूनी जळ वाहतसे। ५।

१५१. वियोग नामयाचा न साहे गोपाळा। न जाय राउळा पांडुरंग। १।
पद्माळ्यात तेव्हा राहे विश्वंभर। कळे समाचार रुक्मिणीसी। २।
चलावें मंदिरी स्वामी पुरुषोत्तमा। येईल गे नामा माझा जेव्हां। ३।

तयाविण मज दाही दिशा ओस। न लगे चित्तास गोड काही। ४ ।
जनी म्हणे ऐसी आवड नामयाची। म्हणोनियां त्याची झालें दासी। ५ ।

## ❀ संत ज्ञानेश्वर स्तुती ❀

१५२. भाव अक्षरांची गांठी। ब्रह्मज्ञानाने गोमटी। १ ।
ते हे माय ज्ञानेश्वरी। संत जनां माहेश्वरी। २ ।
ज्ञानेश्वर मंगळमुनी। सेवा करी दासी जनी। ३ ।

१५३. गीतेवरी आन टीका। त्यांनी वाढियेली लोकां। १ ।
रानताटामाजीं। त्याने वोगरिली कांजीं। २ ।
या ज्ञानेशा वांचोनि। म्हणे नामयाची जनी। ३ ।

१५४. अळंकापुरवासिनी बैसे माझे मनी। सन्मुख इंद्रायणी वाहातसे। १ ।
ज्ञानाबाई आई आर्त तुझे पायी। धावोनियां येई दुडदुडा। २ ।
बहु कासाविस होतो माझा जीव। कनवाळ्याची कीव येऊ द्यावी। ३ ।
नामयाची जनी म्हणावी आपुली। पायी सांभाळिली मायबापें। ४ ।

१५५. अहो सखीये साजणी। ज्ञानाबाई वो हरणी। १ ।
मज पाडसाची माय। भक्ती वत्साची ते गाय। २ ।
कांगा उशीर लाविला। तुजविण शीण झाला। ३ ।
अहो बैसलें दळणीं। धांव घालीं म्हणे जनी। ४ ।

१५६. विवेक सागर। सखा माझा ज्ञानेश्वर। १ ।
मरोनियां जावें। बा माझ्याच्या पोटा यावें। २ ।
ऐसें करी माझ्या भावा। सख्या माझ्या ज्ञानदेवा। ३ ।
जावें वोवाळुनी। जन्मोजन्मी म्हणे जनी। ४ ।

१५७. मायेहुनि माय मानी। करी जिवाची ओंवाळणी। १ ।
परलोकींचें तारूं। म्हणे माझा ज्ञानेश्वरू। २ ।

वित्त गोत चित्त पाहे। सत्य वंदी गुरूचे पाय। ३।
पतिव्रते जैसा पती। जनी म्हणे सांगों किती। ४।

१५८. संत राउळा चालिले। ज्ञानेश्वर तंव बोले। १।
एवढें नवल सांगावें। दासी जनीचें पद ल्याहावें। २।
पाय जोडुनी विटेवरी। कटीं हात उभा हरी। ३।
रूप सांवळें सुंदर। कानीं कुंडले मनोहर। ४।
सोनसळा वैजयंती। पुढें गोपाळ नाचती। ५।
गरूडपारीं सन्मुख उभा। जनी म्हणे धन्य शोभा। ६।

१५९. ज्ञानेश्वर अभंग बोलिले ज्या शब्दां। चिदानंद बाबा लिही त्यांस। १।
निवृत्तीचे बोल लिहिले सोपानें। मुक्ताईचीं वचनें ज्ञानदेवें। २।
चांगयाचा लिहिणार शामा तो कांसार। परमानंद खेचर लिहित होता। ३।
सांगे पूर्णानंद लिही परमानंद। भगवंत भेटी आनंद रामानंद। ४।
सांवत्या माळ्याचा काशिबा गुरव। कूर्म्याचा वसुदेव काईत होता। ५।
चोखामेळ्याचा अनंतभट्ट अभ्यंग। म्हणोनी नामयाचे जनीचा पांडुरंग। ६।

१६०. सदाशिवाचा अवतार। स्वामी निवृत्ति दातार। १।
महाविष्णूचा अवतार। सखा माझा ज्ञानेश्वर। २।
ब्रह्मा सोपान तो झाला। भक्तां आनंद वर्तला। ३।
आदि शक्ति मुक्ताबाई। दासी जनी लागे पायीं। ४।

१६१. सोपानाची ऐसी मूर्ति। विश्वकर्ता ब्रह्मा म्हणती। १।
ऐसें बोले पुराणांत। सृष्टिकर्ता जो भगवंत। २।
जनी म्हणे हा सोपान। ब्रह्मा अवतरला पूर्ण। ३।

१६२. नामयाचा गुरू। तो हा सोपान सद्गुरु। १।
कऱ्हेतिरी करुनी वस्ती। ब्रह्मपुरी तिशी म्हणती। २।

माझ्या जिवींच्या जीवना। हृदयी राहें तू सोपाना। ३ ।
चित्त उद्धव ज्याची सत्ता। जनी म्हणे माझ्या ताता। ४ ।

१६३. वाचे म्हणता सोपान। प्राप्त वैकुंठचि जाण। १ ।
सोपानदेव करितां जप। समूळ नाशे त्रिविधताप। २ ।
सोपानदेव धरिता ध्याने। पुनः जन्मा नाही येणें। ३ ।
दासी जनी तल्लिन झाली। सोपान चरणी विनटली। ४ ।

१६४. जनीने बोलिले तैसेच लिहिले। साग्र परिसिले तुम्ही संती। १ ।
अहो ज्ञानदेवा असावे तुम्हा ठावे। येणे काय लहाणीव आणिली आम्हां। २ ।
माझी मज आण सांगते प्रमाण। सेवितें चरण तुझे स्वामी। ३ ।
जनीचे हो बोल स्वानंदाचे डोल। स्वामीमुखी बोल दुणावती। ४ ।
शुद्ध सत्व कागद नित्य करी शाई। अखंडित लिही जनीपाशी। ५ ।
हांसोनि ज्ञानदेवे पिटियेली टाळी। जयजयकार सकळी केला थोर। ६ ।

१६५. पंढरीच्या राया। ज्ञान देई नाम गाया। १ ।
मी तो मूढ तुझी दासी। ठाव दे, गा, चरणांपासी। २ ।
तुझे पदरीं पडले खरी। माझा सांभाळ करी, हरी। ३ ।
लक्ष लाविलें चरणीं। म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

१६६. आनंदाचा निधी दाखविला मज। तेणें चतुर्भुज मन माझें। १ ।
नामयाचे घरीं जन्म जाला। जन्मांतरींचा ठेवा विठो देखिला। २ ।
संत सनकादिक ज्या सुखें धाले। तें सुख माझ्या हृदयीं राहिले। ३ ।
साऱ्या चराचरा कळलें नाहीं। तें माझ्या हृदयीं बिंबलेसें। ४ ।
नामयाचे जनीस जाहलें सुख। देखतां पै मुख विठोबाचें। ५ ।

१६७. जनीचे बोलणे वाची नित्य कोणी। तयाचे आंगणी तिष्ठतसे। १ ।
जनीचिया पदां अखंडित गाये। तयाचे मी पाये वंदी माथां। २ ।

जनीचे आवडे जयासी वचन। तयासी नारायण कृपा करी। ३ ।
पांडुरंग म्हणे ऐक ज्ञानदेवा। ऐसा वर द्यावा जनींसाठी। ४ ।

## संत सेना महाराज कथा

१६८. सेना न्हावी भक्त भला। तेणें देव भुलविला । १ ।
नित्य जपे नामावळी। लावी विठ्ठलाची टाळी। २ ।
रूप पालटोनि गेला। सेना न्हावी विठ्ठल झाला। ३ ।
काखें घेउनी धोकटी। गेला राजियाचे भेटी। ४ ।
आपुले हातें भार घाली। राजियाची सेवा केली । ५ ।
विसर तो पडला रामा। काय करूं मेघ:शामा। ६ ।
राजा अयनियांत पाहे। चतुर्भुज उभा राहे । ७ ।
दूत धाडूनियां नेला। राजियानें बोलाविला। ८ ।
राजा बोले प्रीतीकर। रात्रीं सेवा केली फार। ९ ।
राजसदनाप्रति न्यावें। भीतरींच घेउनी जावें ।१०।
आतां बरा विचार नाहीं। सेना म्हणे करूं काई ।११।
सेना न्हावी गौरविला। राजियानें मान दिला।१२।
कितीकांचा शीण गेला। जनी म्हणे न्हावी झाला।१३।

१६९. ऐसी कीर्तनाची गोडी। वैकुंठींहुनी घाली उडी। १ ।
आपण वैकुंठींच नसे। भक्तापासीं जाण वसे। २ ।
जनी म्हणे कृपानिधी। भक्तभावाची मांदी शोधी। ३ ।

१७०. विठोबा चला मंदिरांत। गस्त हिंडती बाजारांत। १ ।
रांगोळी घातली गुलालाची। शेज म्यां केली पुष्पांची। २ ।
समया जळती अर्ध रात्रीं। गळ्यांमध्यें माळ मोत्यांची। ३ ।
नामदेवाला सांपडलें माणिक। घेतलें जनीनें हातांत। ४ ।
जनी घेउनी गेली राउळांत। गस्त हिंडती हकिमाची बाजारांत। ५ ।

१७१. विठ्ठलाचा छंद । वाचे गोविंद गोविंद । १ ।
हाचि बोला हो सिद्धांत। देव सांगे हो धादांत । २ ।
जनी म्हणे सांगेन आतां । कृपें ऐका पंढरीनाथा । ३ ।

१७२. जिव्हा लागली नामस्मरणीं । रित्या मापें भरी गोणी । १ ।
नित्य नेमाची लाखोली। गुरु आज्ञेनें मी पाळीं । २ ।
मज भरंवसा नामाचा । गजर नामयाच्या दासीचा। ३ ।
विटेवरी ब्रह्म दिसे । जनी त्याला पाहतसे। ४ ।

१७३. सोंगा सोंगा जाये। नवल जाउनी हांसताहे । १ ।
हांसोनियां बडवी टिरी । कोण नाठवी हे परी । २ ।
हा नाठवी आपणा। म्हणे जनी भुललें जाणा। ३ ।

१७४. देहभाव सर्व जाय । तेव्हां विदेही सुख होय। १ ।
तया निद्रें जे पहुडले । भवजागृति नाहीं आले। २ ।
ऐसी विश्रांती लाधली। आनंदकळा संचरली। ३ ।
त्या एकीं एक होतां। दासी जनी कैंचि आतां । ४ ।

१७५. प्रेमभावें तुम्ही नाचा । रामरंगें रंगो वाचा । १ ।
हेंचि मागों देवाजीला । आवडी शांती खरें बोला। २ ।
जैसी माय तान्हयातें । खेळउनी चुंबी त्यातें। ३ ।
तैंवि तुम्ही संतजना । सर्वां धरावी भावना । ४ ।
हरि कोठवळा झाला। म्हणे जनी भक्तीं केला । ५ ।

१७६. अर्थ जे काढिती उपनिषदांमाजी । सांडोनियां गोड भाजी घेती माठ। १ ।
भूगोलाचा स्वामी सुप्रसन्न झाला । त्यासी मागे पाला भाजीचा तो । २ ।
पुंडलिकें धन जोडिलें असतां । प्रार्थोनियां देतां न घेती हे । ३ ।
मग गडी हो पाहे देवचि येथोनि। जवळी होती जनी फावलें तिये । ४ ।

१७७. वेदांती हें बोलिले। सिद्धांती हें नेमियेले। १ ।
लागा लागा भक्तिवाटा। धरा हेंचि नेमनिष्ठा। २ ।
वेदबाह्य तें कर्म। सांडीं न करीं अधर्म। ३ ।
तोचि एक होय ज्ञानी। देवनिष्ठ म्हणे जनी। ४ ।

## मागणें

१७८. ऐसा वर देई हरी। गाई नाम निरंतरीं। १ ।
पुरवीं आस माझी देवा। जेणें घडे तुझी सेवा। २ ।
हेंचि आहे माझे मनीं। कृपा करीं चक्रपाणि। ३ ।
रूप न्याहाळुनियां डोळां। मुखीं नाम लागो चाळा। ४ ।
उदाराच्या राया। दासी जनी लागे पायां। ५ ।

१७९. साधु आणि संत। जन्म द्यावा जी कलींत। १ ।
मागणें तें हेचि देवा। कृपा करीं हो केशवा। २ ।
संत दयाळ परम। तया साक्षी आत्माराम। ३ ।
जनी म्हणे ऐसे साधु। तयापाशीं तूं गोविंदु। ४ ।

१८०. विटेवरी ब्रह्म दिसे। जनी त्याला पाहातसे। १ ।
देव भावाचा अंकित। जाणे दासाचे तें चित्त। २ ।
जनी मागे भक्ति देवा। तिचा मनोरथ पुरवा। ३ ।

१८१. देवा देंई गर्भवास। तरीच पुरेल माझी आस। १ ।
परि हे देखा रे पंढरी। सेवा नामयाचे द्वारीं। २ ।
करी पक्षि कां शुकर। श्वान श्वापद मार्जार। ३ ।
ऐसी आस हे मानसीं। म्हणे नामयाची दासी। ४ ।

१८२. ऐसा पुत्र देंई संतां। तरी त्या आवडी पंढरीनाथा। १ ।
गीता नित्य नेमें। वाची ज्ञानेश्वरी प्रेमें। २ ।

संतांच्या चरणा। करी मस्तक ठेंगणा। ३।
कन्या व्हावी भागीरथी। तुझे प्रेम जिचे चित्तीं। ४।
ऐसे करी संतजना। दासी जनीच्या निधाना। ५।

१८३. माझें दु:ख नाशी देवा। मज सुख दे केशवा। १।
आम्हां सुख ऐसें देई। तुझी कृपा विठाबाई। २।
चरणीं अनन्य शरण। त्यासि नाहीं जन्म मरण। ३।
जनी म्हणे हेंचि मागें। धण्या सर्व तुज सांगें। ४।

१८४. रुक्माई आईचें आहे ऐसें भाग्य। असावें आरोग्य चिरकाळ। १।
सख्या पुंडलिका आवडतें स्थळ। असावें चिरकाळ स्वस्ति क्षेम। २।
अहो संतजन घ्या आवडतें धन। असावें कल्याण चिरकाळ। ३।
जन्मोजन्मीं हेंचि मागें गोविंदासी। म्हणे जनी दासी नामयाची। ४।

१८५. परधन कामिनी समूल नाणीं मना। नाहीं हे वासना माया केली। १।
तृष्णा हे अधम न व्हावी मजला। प्रेमाचा जिव्हाळा देंई तुझ्या। २।
निरपेक्ष वासना देगा मज देवा। आणि तुझी सेवा आवडीची। ३।
शांतीची भूषणें मिरविती अंगी। वैष्णव आणि योगी म्हणावे ते। ४।
असो तो अकुळी असो भलते याती। माथां वंदी प्रीती जनी त्यासी। ५।

१८६. द्वारकेच्या राया। बुद्धि दे गा नाम गाया। १।
मतिमंद तुझी दासी। ठाव देंई चरणांपासीं। २।
तुझे पदरीं पडलें खरी। आतां सांभाळ करीं हरी। ३।
न कळे हरीची करणी। म्हणे नामयाची जनी। ४।

## संतस्तुति

१८७. संतांचा तो संग नव्हे भलतैसा। पालटावी दशा तात्काळिक। १।
चंदनाचे संगे पालटती झाडें। दुर्बळ लांकडें देवामाथां। २।

हें कां ऐसें व्हावें संगती स्वभावें। आणिकें न पालटावें देहालागीं। ३ ।
तैसा नि:संगाचा संग अग्रगणी। जनी ध्याय मनीं ज्ञानेश्वरा। ४ ।

१८८. संत हे कोण तरी देवाचे हे डोळे । पूजेविण आंधळे देवाचिये। १ ।
कोण्या नेत्रें देव पाहे तुजकडे । यासाठीं आवडे संत करी। २ ।
संत ऐसे करी देवाचे कान । सांडियेल्या ध्यान कोण ऐके। ३ ।
संत पुससी तरी देवाचे ते पाय । आगमा न गमे सोय मागाडीये। ४ ।
संत पुससी तरी देवाचें ते पाय । धरूनियां सोय दाविती हरी। ५ ।
संत म्हणसी तरी देवाचा हा गळा । जेणें रस आगळा वेदादिकां। ६ ।
संतजरी पुससी तरी देवाचें वदन। माझें तें वचन संत झाले । ७ ।
परादिया चारी सांडूनि मीपणीं। संत बोले वाणी विठोबाची। ८ ।
परेचिया चारी आनंदा माझारीं। संत झाले अंतरीं पडजीभ देवा । ९ ।
क्षर जे नासिलें अक्षर तें काढिलें। नि:शब्दाचें झालें बोले संत । १० ।
शब्द तो उडाला नाद तो बुडाला। भेद तो आटला माया भावीं । ११ ।
विठो वटावरीं पारंबिया झाले । केश ते वाढले माय संत । १२ ।
कुरळ होऊनियां देती ते सुढाळ। म्हणे जनी वोवाळ जीवेंभावे । १३ ।

१८९. आंधळ्याची काठी। अडकली कवणें बेटीं। १ ।
माझिये हरणी। गुंतलीस कोणे रानीं । २ ।
मुकें मी पाडस। चुकलें भोवें पाहें वास। ३ ।
तुजवीण काय करूं । प्राण किती कंठीं धरूं। ४ ।
आतां जीव जाऊं पाहे । धांव घालीं माझे माये। ५ ।
माझी भेटवा जननी । संतां विनवी दासी जनी। ६ ।

१९०. आलीया जन्मासी । शरण जावें विठोबासी। १ ।
तेणें सुफळ संसार। हो का नारी अथवा नर। २ ।
व्रत करा एकादशी। नाम कथा अहर्निशीं। ३ ।

ोय पापांचें निर्मूळ। वंशीं सुखाचे सोहाळे। ४।
 लगे योग याग तपें। तुम्हां सांगितलें सोपें। ५।
ेचि तुम्हांसी विनंती। म्हणे दासी धरा चित्तीं। ६।

९१. आले व्रत एकादशी। जनी गेली राउळासी। १।
ुक्का घेऊनिया माळा। पाणी भरोनी भोपळा। २।
ेतां दुरोनी देखिली। अवघी घामाघूम झाली। ३।
ोईल देवासी विटाळ। जाली फराळाची वेळ। ४।
ुलें - माळा विखुरली। तुंब्याची ते गत जाली। ५।
ाहीं प्रेमाचें भरीत। देवा जोडी दोन्ही हात। ६।
ेत्रीं अश्रूंचिया धारा। केला संकल्प सारंगधरा। ७।
नी बाहेर घातली। थोर गहिवरें दाटली। ८।

९२. पंढरपूर । जग मुक्तीचें माहेर। ध्रु।
आषाढी मासीं एकादशी। यात्रा दाटे चारी दिवसीं।
ांकर डोलतसे कैलासी। गिरिजावर। १।
ीमा, चंद्रभागा दोन्ही। वाहाती आनंदें करूनी।
ात्रा उतरतसे मधुनी। जळ सुंदर। २।
ंत सनकादिक येती। टाळ मृदुंग वाजती।
ोष अमरपुरीं उमटती। बहू गजर। ३।
ांदून वेणुनाद भावें। स्नान पद्माळा करावे।
र्शन विठोबाचें घ्यावें। उभा विटेवर। ४।
क वेळ संसारा येउनी। पांडुरंग पहावा नयनी।
नी ध्यातसे निशिदिनीं। सारंगधर। ५।
ग मुक्तीचें माहेर। पंढरपूर।

१९३. सावळा गोविंद सावळें हें लेणें। सावळ्यानें मन वेडें केलें। १ ।
सावळ्याच्या कानीं सावळी कुंडलें। सावळी पाउलें आलिंगिलीं । २ ।
सावळी कस्तूरी सावळी हे शोभा। सावया का उभा पाहियेला। ३ ।
सावळा तो वेळू सावळी ते गाय। सावळी रखुमाई पाहियेली । ४ ।
जनी म्हणे आतां सावळा भेटून। जावें लिंबलोण केलें आजी। ५ ।
मज सावळ्यानें घातियेली मिठी। आता माझ्या पोटीं, नारायणा। ६ ।
देह माझा देव सावळा गोविंद। उभा, रे गोविंद नारायणा। ७ ।
अंगावरी लोट पूर दाट आला। संत हे लावला नारायण । ८ ।
चैतन्य चेतलें भक्ती मुक्तावली। मुलीची माउली नारायण । ९ ।
जनी नामयाची मूर्ती गोविंदाची। उभी आनंदाची पंढरीत । १०।

१९४. पाहतां पंढरीराया। त्याच्या मुक्ति लागे पायां। १ ।
पुरुषार्थें चारी। त्याचें मोक्ष आर्जव करी । २ ।
धन संपत्तीचा दाता। होय पाहतां पंढरीनाथा। ३ ।
संताचे चरणीं। लोळे नाचे दासी जनी । ४ ।

१९५. विष्णुमुद्रेचा अंकिला। तोचि वैष्णव एक भला। १ ।
अहं जाळोनी अंगारा। सोहंभस्मी तीर्थ सारा । २ ।
विष्णु माया द्वारावती। भक्तिमुद्रा त्या मिरवती। ३ ।
पंचायतन पूजी भावें। अहं सोहं भस्मीं नांवें। ४ ।
प्रेमतुळसी कानीं। म्हणे नामयाची जनी। ५ ।

१९६. वैष्णव तो एक इतर तीं सोंगें। ठसे देउनी अंगें चितारिती। १ ।
जिचे योनि जन्मला तिसी दंडूं लागला। तीर्थरूप केला देशधडी। २ ।
नाइकोनी ब्रह्मज्ञान जो का दुराचारी। अखंड द्वेष करी सज्जनांचा। ३ ।
विद्येच्या अभिमानें नाइके कीर्तन। पाखांडी हें म्हणे करिती काई। ४ ।
पंचरस पात्रा कांता हे बुडविती। उद्धरलों म्हणती आम्ही संत। ५ ।

ोर्तनाचा द्वेष करी तो चांडाळ । तयाचा विटाळ मातंगीसी । ६ ।
ष्णव तो एक चोखामेळा महार । जनी म्हणे निर्धार केला संतीं । ७ ।

९७. पंढरीचा वारकरी । त्याचे पाय माझे शिरीं । १ ।
ो कां उत्तम चांडाळ । पायीं ठेवीन कपाळ। २ ।
ांद्य होय हरिहरा । सिद्ध मुनि ऋषेश्वरा । ३ ।
ुखीं नाम गर्जे वाणी । म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

९८. आले वैष्णवांचे भारे । दिले हरिनाम नगारे । १ ।
ावघी दुमदुमली पंढरी । कडकडाट गरुडपारीं । २ ।
ाळ मृदंग धुमाळी । रंगणीं नाचे वनमाळी । ३ ।
ासा आनंद सोहळा। दासी जनी पाहे डोळां । ४ ।

९९. स्त्री जन्म म्हणवुनी न व्हावें उदास । साधुसंतां ऐसें केलें जनीं । १ ।
ांतांचे घरची दासी मी अंकिली। विठोबानें दिल्ही प्रेमकळा । २ ।
वेदुर सात्त्विक माझिये कुळीचा । अंगिकार त्याचा केला देवें । ३ ।
। विचारितां कुळ गणिका उद्धरिली । नामें सरती केली तिहीं लोकीं। ४ ।
ऋषींची कुळें उच्चारिलीं जेणें । रौरवी तेणें वस्ती केली । ५ ।
ामयाची जनी भक्तीतें सादर। माझें तें साचार विटेवरी। ६ ।

## ❀ आत्मस्वरूपस्थिति ❀

२००. सांवळी ते मूर्ति हृदयीं बिंबली। देहो बुद्धि पालटली माझी साची। १ ।
धन्य माझी भक्ति धन्य माझा भाव। हृदयीं पंढरीराव राहतसे। २ ।
धन्य माझा जन्म धन्य माझा वंश । धन्य विष्णुदास स्वामी माझा। ३ ।
आशा तृष्णा कैशा मावळल्या दोन्ही। चित्त विठ्ठलचरणीं जडोनि ठेले । ४ ।
नामयाचे जनी विश्रांति पैं झाली। हृदयीं राहिली विठ्ठलमूर्ती। ५ ।

२०१. वामसव्य दोहींकडे। देखे कृष्णाचें रूपडें। १ ।
आतां खाले पाहूं जरी। चहुंकडे दिसे हरी। २ ।
चराचरी जें जें दिसे। तें तें अविद्याची नासे। ३ ।
माझें नाठवे मीपण। तेथें कैंचें दुजेपण। ४ ।
सर्वांठायीं पूर्ण कळा। दासी जनी पाहे डोळां। ५ ।

२०२. दळूं कांडूं खेळूं। सर्व पाप ताप जाळूं। १ ।
सर्व जिवामध्यें पाहूं। एक आम्ही होउनी राहूं। २ ।
जनी म्हणे ब्रह्म होऊं। ऐसें सर्वांघटीं पाहूं। ३ ।

२०३. चरण विठोबाचे देखिले। साही रिपु हारपले। १ ।
नाहीं नाहीं म्हणती आम्ही। सांगसी त्या लांगू कामीं। २ ।
नाहीं तरी जाऊं देशीं। जनी नामयाची दासी। ३ ।

२०४. वैराग्य अभिमानें फिरविलें जातें। म्हणवोनी याते भाव खुंटा। १ ।
संचित मातृका वैरणी घातली। अव्यक्तिं दळिलीं व्यक्ताव्यक्त। २ ।
नामरूपा आदि दळियेलें सर्व। पीठ भरी देव पंढरीचा। ३ ।
नवल हा देव बैसला दळणीं। नाहीं केली जनी नामयाची। ४ ।

२०५. भ्रांती माझें मन प्रपंची गुंतलें। श्रवण मनन होउनी ठेलें। १ ।
बापें बोधिलें बापें बोधिले। बोधुनी कैसी तद्रुप झाले। २ ।
निजध्यासें कैसा अवघाचि सांपडला। कीं विश्वरूपीं देखिला बाईयांनो। ३ ।
नामयाची जनी स्वयंबोध झाला। अवघाचि पुसिला ठाव देखा। ४ ।

२०६. संतमहानुभाव येती दिगंबर। नम्रतेचें घर विरळा जाणें। १ ।
निवाले मीपण तें जें ठायीं नाहीं। सोहं शब्द सोई तेथें कैंची। २ ।
पाहतां हा कोण दावितां हा कोण। पाहतां दावितां हे खूण विरळा जाणें। ३ ।
नामयाची जनी वस्तु पै झाली। अवघ्यांसी बुडाली परब्रह्मीं। ४ ।

२०७. त्या वैष्णवांच्या माता। तो नेणे देव ताता। १।
तिहीं कर्मे हें पुसिलें। अकर्म समूळ नाहींसें केलें। २।
कानाचा हो कान। झालें धरूनियां ध्यान। ३।
डोळियाचा हो डोळा। करूनी झालें प्रेम सोहळा। ४।
तोही वसे नरदेही। जनी दासी वंदी पायीं। ५।

२०८. देहभाव पूर्ण जाय। तेव्हां हें धैर्य सुख होय। १।
तया निद्रे निजले। भाव जागृती नाहीं आले। २।
ऐसी विश्रांति लाधली। आनंद कळा संचरली। ३।
तेथें सर्वांग सुखी झालें। लिंगदेह विसरलें। ४।
त्या एकी एक होता। दासी जनी नाहीं आतां। ५।

२०९. जोड झाली रे शिवासी। भ्रांत फिटली जिवाची। १।
आनंदची आनंदाला। आनंद बोधचि बोधला। २।
आनंदाची लहरी उठी। ब्रह्मानंद गिळिला पोटीं। ३।
एक पण जेथें पाहीं। तेथें विज्ञप्ति उरली नाहीं। ४।
ऐसी सद्गुरुची करणी। दासी जनी विठ्ठल चरणी। ५।

२१०. बाई मी लिहिणें शिकलें सद्गुरुरायापासीं। धृ०।
ब्रह्मीं झाला जो उल्लेख। तोचि नादाकार देख।
पुढें ओंकाराची रेख। तूर्या म्हणावें तिसी। १।
माया महतत्त्वाचें सुभर। तीन पांचाचा प्रकार।
पुढें पंचविसांचा भार। गणती केली छत्तीसीं। २।
बारा सोळा एकविस हजार। आणीक सहाशांचा उबार।
माप चाले सोहंकार। ओळखिले बावन्न मात्रेसी। ३।
चार खोल्या चार घरीं। चौघे पुरुष चार नारी।
ओळखुनी सर्वांशी अंतरीं। राहिले पांचव्यापासीं। ४।

पांच शहाणे पांच मूर्ख । पांच चाळक असती देख।
पांच दरवडेखोर आणिक । ओळखिलें दोघांसी । ५ ।
एक बीजाचा अंकूर । होय वृक्षाशीं विस्तार ।
शाखापत्रें फळ फुलाभार । बीजापोटीं सामावे । ६ ।
कांतीण तंतूशीं काढून । वरी क्रीडा करिती जाण।
शेवटी तंतूशीं गिळून । एकटी राहे आपैसी । ७ ।
वेदशास्त्र आणि पुराणा । याचा अर्थ आणितां मना।
कनकीं नगाच्या भूषणा। अनुभव वाटे जीवासीं । ८ ।
नामदेवाच्या प्रतापांत । शिरीं विठोबाचा हात ।
जनी म्हणे केली मात । पुसा ज्ञानेश्वरासी। ९ ।

२११. नम्रतेविण योग्यता मिरविती। ते केवीं पावती ब्रह्मसुख। १ ।
लटिके नेत्र लावूनि ध्यान पैं करिती । ते केवीं पावती केशवातें। २ ।
एक संत म्हणविती नग्न पैं हिंडती । अंतरींची स्थिती खडबड । ३ ।
झालेपणाचे गुण दिसताती सगुण। वस्तु ते आपण होऊनि ठेली। ४ ।
सागरीं गंगा मिळोनि गेली जैसी । परतोनि तियेसी नाम नाहीं। ५ ।
नामयाची जनी निर्गुणीं बोधिली । ठेवा जो लाधली पांडुरंग । ६ ।

२१२. शब्दाचें ब्रह्म लौकिकी हो दिसे। जैसे ते फांसे मइंदांचे। १ ।
ज्ञानी तो कोण विज्ञानी तो कोण । दोहींचा आपण साक्षभूत। २ ।
स्वयें सुखें धाला आपणातें विसरला । तो योगी राहिला नाहीं येथें। ३ ।
नामयाची जनी सागरीं मिळाली । परतोनि मुळीं केवीं जाय। ४ ।

२१३. अखंडित ध्यानीं । पांडुरंग जपे वाणी। १ ।
पांडुरंग नाम जप । हेंचि माझें महा तप । २ ।
ऐसें आलें प्रत्ययासी । सहज तेणें तत्त्वमसी । ३ ।
पावलिया हो स्वपद । सहज विराला तो शब्द । ४ ।
संदेह अवघाचि फिटला । जनी म्हणे उदयो झाला। ५ ।

२१४. देव खाते देव पीते। देवावरी मी निजतें। १।
देव देते देव घेते। देवासवें व्यवहारिते। २।
देव येथें देव तेथें। देवाविणें नाहीं रीतें। ३।
जनी म्हणे विठाबाई। भरूनि उरलें अंतरबाहीं। ४।

२१५. श्रीमूर्ति असे बिंबली। तरी हे देहस्थिति पालटली। १।
धन्य माझा इह जन्म। हृदयीं विठोबाचें नाम। २।
तृष्णा आणि आशा। पळोन गेल्या दाही दिशा। ३।
जनी म्हणे नामा पाहें। द्वारीं विठ्ठल उभा आहे। ४।

२१६. जनी दृष्टी पाहे। जिकडे तिकडे हरि आहे। १।
मग म्हणे वो देवासी। तुमच्या नामयाची दासी। २।
नामयाचा प्रसाद। झाला जनीला आनंद। ३।

२१७. धरिला पंढरीचा चोर। गळां बांधोनियां दोर। १।
हृदय बंदिखाना केला। आंत विठ्ठल कोंडिला। २।
शब्दें केली जडाजुडी। विठ्ठल पायीं घातली बेडी। ३।
सोहं शब्दाचा मारा केला। विठ्ठल काकुलती आला। ४।
जनी म्हणे बा विठ्ठला। जीवें न सोडीं मी तुला। ५।

२१८. झाली पूर्ण कृपा आहे। ऐसा पूर जो कां पाहे। १।
ऐसा पूर जो कां पाहे। गुरुपुत्र तोचि होये। २।
पूर्णपदीं जो स्थापिला। जनी म्हणे धन्य झाला। ३।

२१९. नित्य हातानें वारावें। हृदय अंतरीं प्रेरित जावें। १।
ऐसा स्वरूपाचा पूर। आला असे नेत्रांवर। २।
स्वरूपाचा पूर आला। पाहातां डोळा झाकुळला। ३।
जनी म्हणे ऐसा पूर। पाहें तोचि रघुवीर। ४।

२२०. गगन सर्वत्र तत्वता । त्यासी चिखल लांवू जातां । १ ।
तैसा जाण पांडुरंग। भोग भोगुनी नि:संग। २ ।
सिद्ध सनकादिक। गणगंधर्व अनेक । ३ ।
जैसी वांझेची संतती। तैसी संसार उत्पत्ती। ४ ।
तेथें कैंचें धरिसी ध्यान। दासी जनी ब्रह्म पूर्ण। ५ ।

२२१. काळाचिये लेख। नाहीं ब्रह्माविष्णु मुख्य। १ ।
युगा एक लव झडे । तोहि न सरे काळापुढें। २ ।
अविद्येनें नवल केलें । मिथ्या देह सत्य केलें। ३ ।
महीपाळ स्वर्गपाळ । तेही ग्रासले समूळ। ४ ।
वर्म चुकलीं बापुडीं। दासी जनी विठ्ठल जोडी । ५ ।

२२२. रक्तवर्ण त्रिकुट स्नान । श्रीहाट पाहे श्वेतवर्ण । १ ।
शामवर्ण तें गोलाट । नीळबिंदू औट पीट। २ ।
वरि भ्रमर गुंफा पाहे । दशमद्वारीं गुरु आहे। ३ ।
नव द्वारातें भेदुनी। दशमद्वारीं गेली जनी। ४ ।

२२३. शून्यावरी शून्य पाहे। तयावरी शून्य आहे। १ ।
प्रथम शून्य रक्तवर्ण । त्याचें नांव अध:शून्य। २ ।
उर्ध्वशून्य श्वेतवर्ण । मध्य शून्य शामवर्ण। ३ ।
महा शून्य वर्ण नीळ। त्यांत स्वरूप केवळ। ४ ।
अनुहात घंटा श्रवणीं। ऐकुनी विस्मित जाहाली जनी। ५ ।

२२४. ज्योत पहा चमकली । काय सांगूं त्याची बोली। १ ।
प्रवत्ति निवृत्ति दोघीजणी । लीन होती त्याच्या चरणीं । २ ।
परापश्यंती मध्यमा। वैखरेची झाली सीमा। ३ ।
चारी वाचा कुंठित जाहाली। सोहं ज्योत प्रकाशली। ४ ।
ज्योत परब्रह्मीं जाणा। जनी म्हणे निरंजना। ५ ।

२२५. ज्योत परब्रह्मीं होय । खेचरी दर्पणीनें पाहे । १ ।
ईडा पिंगळा सुषुम्ना । तिन्ही पाहे हृदयभुवना । २ ।
हळू हळू रीघ करी । सूक्ष्म हृदय अंतरीं । ३ ।
हृदय कमळावरी जासी । जनी म्हणे मुक्त होसी । ४ ।

२२६. नाहीं आकाश घडणी । पाहा स्वरूपाची खाणी । १ ।
स्वरूप हें अगोचर । गुरु करिती गोचर । २ ।
गोचर करिताती जाणा । दृष्टि दिसे निरंजना । ३ ।
नाहीं हात पाय त्यासी । जनी म्हणे स्वरूपासी । ४ ।

२२७. माझे मनी जें जें होतें । तें तें दिधलें अनंतें । १ ।
देह नेउनी विदेही केलें । शांति देउनी मीपण नेलें । २ ।
मूळ नेलें हें क्रोधाचें । ठाणें केलें विवेकाचें । ३ ।
निज पदीं दिधला ठाव । जनी म्हणे दाता देव । ४ ।

२२८. पहिली माझी ओवी । ओवीन जगत्र ।
गाईन पवित्र । पांडुरंग । १ ।
दुसरी माझी ओवी । दुजा नाहीं कोठें ।
जनीं वनीं भेटे । पांडुरंग । २ ।
तिसरी माझी ओवी । तिजा नाहीं ठाव ।
अवघाचि देव । पांडुरंग । ३ ।
चवथी माझी ओवी । वैरिलें दळण ।
गाईन निदान । पांडुरंग । ४ ।
पाचवी माझी ओवी । माझिया माहेरा ।
राहे निरंतर । पांडुरंग । ५ ।
सहावी माझी ओवी । सहाही शिणले ।
गुरुमूर्ती भेटले । पांडुरंग । ६ ।

सातवी माझी ओवी । आठवे वेळोवेळीं ।
देखिला म्यां डोळा । पांडुरंग । ७ ।
आठवी माझी ओवी । अठ्ठाविसी युगें ।
उभा चंद्रभागे । पांडुरंग । ८ ।
नववी माझी ओवी । संपलें दळण ।
चुकवी मरण । पांडुरंग । ९ ।
दहावी माझी ओवी । दहा अवतारीं ।
जनी संवसारीं । पांडुरंग । १० ।

२२९. सुंदर माझें जातें गे फिरे जे बहुते। ओंव्या गाऊं कौतुकें तूं येरे बा विठ्ठला। १ ।
जीवशिव दोनी खुंटे गे प्रपंचाचे नेटें गे । लाबुनी पांची बोटें गे तूं येरे बा विठ्ठला। २ ।
सासु आणि सासरा दीर तो तिसरा। ओंव्या गाऊं भ्रतारा तूं येरे बा विठ्ठला। ३ ।
बारा सोळा गडणी अवघ्या कामिनी । ओंव्या गाऊं बसूनि तूं येरे बा विठ्ठला। ४ ।
प्रपंच-दळण दळिलें पीठ भरिलें। सासुपुढें ठेविलें तूं येरे बा विठ्ठला। ५ ।
सत्त्वाचें आधण ठेविलें पुण्य वैरिलें । पाप तें उतूं गेलें तूं येरे बा विठ्ठला। ६ ।
जनी जातें गाइल कीर्त राहिल। थोडासा लाभ होईल तूं येरे बा विठ्ठल। ७ ।

## संत जनाबाईंचा निश्चय

२३०. दळितां कांडितां । तुज गाईन अनंता । १ ।
न विसंबे क्षणभरी । तुझें नाम गा मुरारी। २ ।
नित्य हाचि कारभार । मुखीं हरि निरंतर । ३ ।
मायबाप बंधुबहिणी । तूं बा सखा चक्रपाणि। ४ ।
लक्ष लागलें चरणासी । म्हणे नामयाची दासी। ५ ।

२३१. चला पंढरीसी जाऊं। रखुमादेवीवर पाहूं। १ ।
हाती टाळी मुखी हरी। नाम गाऊं महाद्वारी। २ ।
स्नान करूं भिवरेसी । पुंडलिका पायांपाशीं । ३ ।

डोळे भरून पाहूं देवा । तेणें विसरू देहभावा । ४ ।
ऐसा निश्चय करूनी । म्हणे नामयाची जनी । ५ ।

२३२. जनी म्हणे नामयासी । चला जाऊं पंढरीसी । १ ।
आला विषयाचा कंटाळा । जाऊं भेटूं त्या गोपाळा । २ ।
आवडीनें जगजेठी । गळां घालुनियां मिठी । ३ ।
आवडीनें गुज कानीं । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

२३३. जात्यावरील गीतासी । दळणमिशें गोविंदासी । १ ।
देह बुद्धीचें वैरण । बरवा दाणा हो निसून । २ ।
नामाचा हो कोळी । गुरुआज्ञेंते मी पाळीं । ३ ।
मज भरंवसा नामयाचा । गजर दासी जनीचा । ४ ।

२३४. तुझा लोभ नाहीं देवा । तुझी करिना मी सेवा । १ ।
नाहीं अंगीं थोरपण । मिथ्या धरिसी गुमान । २ ।
रागा येउनी काय करिशी । तुझें बळ आम्हांपाशीं । ३ ।
नाहीं सामर्थ्य तुज हरी । जनी म्हणे धरिली चोरी । ४ ।

२३५. तुझे चरणीं घालीन मिठी । चाड नाहीं रे वैकुंठीं । १ ।
सर्वभावें गाईन नाम । सखा तूंचि आत्माराम । २ ।
नित्य पाय वंदिन माथा । तेणें नासे भवभय व्यथा । ३ ।
रूप न्याहाळीन दृष्टी । सर्व सुखें सांगेन गोष्टी । ४ ।
दीनानाथा चक्रपाणि । दासी जनी लावी ध्यानीं । ५ ।

२३६. आतां भीत नाहीं देवा । आदि अंत तुझा ठावा । १ ।
झालें नामाचेनि बळकट । तेणें वैकुंठ पायवाट । २ ।
ज्ञान वैराग्य विवेक बळें । तें तंव अम्हांसवें खेळे । ३ ।
दया क्षमा आम्हांपुढें । जनी म्हणे झाले वेडे । ४ ।

२३७. माझे चित्त तुझें पायीं । ठेवीं वेळोवेळां डोयीं । १ ।
मुखीं उच्चार नामाचा । कायामनें जीवें वाचा । २ ।
धरणें तें ऐसें धरूं । जनी म्हणे विठ्ठल स्मरूं । ३ ।

२३८. आम्ही पातकांच्या राशी । आलों तुझ्या पायांपाशीं । १ ।
मना येईल तें तूं करीं । आतां तारीं अथवा मारी । २ ।
जनी म्हणे सृष्टीवरी । एक असमी तूं बा हरी । ३ ।

२३९. मना लागीं हाचि धंदा । रामकृष्ण हरि गोविंदा । १ ।
जिव्हे करूं नित्य नेम । सदा विठोबाचें नाम । २ ।
नामामध्यें नामसार । जप करी निरंतर । ३ ।
म्हणे जनी राम म्हणा । मंत्र सकळ हा जाणा । ४ ।

२४०. स्मरण तें हेंचि करूं । वाचे रामराम स्मरूं । १ ।
आणिक न करूं तें काम । वाचे धरूं हाचि नेम । २ ।
सुकृताचें फळ । जनी म्हणे हें केवळ । ३ ।

२४१. मनामागें मन लावूं । तेथें सर्व सुख पाहूं । १ ।
मग आम्हां काय उणे । दया करी नारायण । २ ।
जनी म्हणे ऐसें मन । करूं देवा हो आधिन । ३ ।

२४२. सत्त्वरजतमें असे हें बांधिलें । शरीर दृढ झालें अहंकारें । १ ।
सांडीं अहंकार धरीं दृढभाव । हृदयीं पंढरीराव धरोनियां । २ ।
नामयाची जनी भक्तीसी भुलली । ते चरणीं राहिली विठोबाचे । ३ ।

२४३. नित्य सारूं हरीकथा । तेथें काळ काय आतां । १ ।
वनवासी कां धाडिलें । कृपाळें बा हो विठ्ठलें । २ ।
आशा मनशा तृषा तिन्ही । ह्या तो ठेविल्या बांधोनि । ३ ।
काम क्रोध विषय झाले । हे तों मोहोनि राहिले । ४ ।
अवलोकुनि कृपा दृष्टि । जनी म्हणे देंई भेटी । ५ ।

२४४. करूं हरींचें कीर्तन । गाऊं निर्मळ ते गुण। १ ।
सदा धरूं संतसंग। मुखीं म्हणूं पांडुरंग। २ ।
करूं जनावरी कृपा । रामनाम म्हणवूं लोकां। ३ ।
जनी म्हणे कीर्ति करूं । नाम बळकट धरूं। ४ ।

२४५. आनंदाचे डोहीं । जो कां समूळ झाला नाहीं । १ ।
कीर्तनें जन्मला। हरीभक्तीनें शिंपिला। २ ।
आळवितसे अंतवरी । वाचा नाम लाहो करीं । ३ ।
समूळ झाला नाहीं। देहें जनी विठ्ठल पायीं। ४ ।

२४६. मी तों समर्थाची दासी । मिठी घालीन पायांसी। १ ।
हाचि माझा दृढभाव। करीन नामाचा उत्सव। २ ।
आम्हां दासीस हें काम। मुखीं विठ्ठल हरिनाम। ३ ।
सर्व सुख पायीं लोळे । जनी संगें विठ्ठल बोले । ४ ।

२४७. नामयाचें ठेवणें जनीस लाधलें। धन सांपडलें विटेवरी । १ ।
धन्य माझा जन्म धन्य माझा वंश। धन्य विष्णुदास स्वामी माझा। २ ।
कामधाम माझे विठोबाचे पाय। दिवसनिशीं पाहे हारपली। ३ ।
माझ्या वडिलांचें दैवत तोहा पंढरीनाथ । तेणें माझा आर्त पुरविला। ४ ।
संसारींचें सुख नेघे माझे चित्तीं । तरीच पुनरावृत्ति चुकविल्या। ५ ।
नामयाचे जनी आनंद पैं झाला । हृदयीं बिंबला पांडुरंग। ६ ।

२४८. धन्य ज्याचे चरणीं गंगा ओघ झाला । मस्तकीं धरिला उमाकांतें। १ ।
धुंडितां ते पाय शिणला तो ब्रह्मा । बोल ठेवी कर्मा आपुलीया । २ ।
शुक सनकादिक फिरती हरिजन । नारदादि गाणें जयासाठीं। ३ ।
ते चरण आम्हांसी गवसले अनायासी। धन्य झाली दासी जनी म्हणे। ४ ।

२४९. डोईचा पदर आला खांद्यावरी । भरल्या बाजारीं जाईन मी । १ ।
हातीं घेईन टाळ खांद्यावरी वीणा। आतां मज मना कोण करी । २ ।
पंढरीच्या पेठे मांडियेले पाल । मनगटावर तेल घाला तुम्ही । ३ ।
जनी म्हणे देवा मी झालें वेसवा । रिघालें केशवा घर तुझें । ४ ।

## उपदेश

२५०. भक्तिभावें वळे गा देव। महाराज पंढरीराव । १ ।
पंढरीसी जावें । संतजना भेटावें । २ ।
भक्ति आहे ज्याचें चित्तीं । त्याला पावतो निश्चिती। ३ ।
भाव धरा मनीं । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

२५१. बांधोनियां हात गयाळ मारिती । दंड ते करिती मोक्षासाठीं। १ ।
गेले ते पितर मोक्षालागीं तुझे । आतां देंई माझे दक्षिणेसी । २ ।
बापुडे केंश बोडिती मिशीदाढी । मग दक्षणा हिरडी खातसे हे। ३ ।
फार काय सांगों मेल्याविण मुक्ती। नाहीं ते वांछिती स्वप्न सुख। ४ ।
अनंत जन्म मृत्यु होतां जैसें दु:ख । त्याहूनि विशेष आहे तेथें। ५ ।
भांबावले जन धांवे आटाआटी। सांडुनियां कोटि अनंत पद। ६ ।
नलगे गाळावें नलगे तळावें । नलगे मरावें मुक्तीसाठीं । ७ ।
मुक्ति लागे पायां जाऊनियां पाहे । जीव जातां देह जनी नाहीं। ८ ।

२५२. धनियाचें पडपे गेला । जीव जिवें नाही झाला। १ ।
देहीं देह हारपले । गेह गेहातीत झालें। २ ।
झाला आश्रम आश्रमा । जनी म्हणे धरा प्रेमा। ३ ।

२५३. झाली जगाचिये सीमा । वस्तुभाव येर व्योमा। १ ।
पहा हो अधिकारी । नको असोनी भिकारी । २ ।
पट तंतूंचा घडला । घट मृत्तिकेचा केला । ३ ।
पहा श्वानसमची पंडित । जनी म्हणे एकचि मात। ४ ।

२५४. नाद पडे कानीं । मृग पैज घाली प्राणी । १ ।
आवडी अंतरीं । गज मेला पडे गारी । २ ।
चोख पाहे अंग । दिपें नाडला पतंग । ३ ।
गोडी रसगळा । मच्छ अडकला गळा । ४ ।
गंधें अलि नेला । म्हणे जनी तोचि मेला । ५ ।

२५५. भृंगीचिया अंगीं कोणतें हो बळ । शरिरें अनाढळ केली आळी । १ ।
काय तिनें तपमुद्रा धरियेली । म्हणोनियां झाली भृंगी अंगें । २ ।
अरे बा शहाणिया तैसा करीं जप । संतयोगें पाप नाहीं होय । ३ ।
नामयाची जनी पिटिती डांगोरा । संदेह न धरा करा पूजा । ४ ।

२५६. जहाज तारिलें तारिलें । शेवटी उगमासी आलें । १ ।
भाव शिडासी लाविला । नाम फरारा सोडिला । २ ।
कथा भरियेलें केणें । घ्यारे नका दैन्यवाणें । ३ ।
एका मनाचा विसार । आधीं देउनी निर्धार । ४ ।
केणे देतो फुकासाठीं । आर्तभूत व्हावें पोटी । ५ ।
आर्तभूत व्हारे । जनी म्हणे केणें घ्यारे । ६ ।

२५७. हेंचि देवांचे भजन । सदा राहे समाधान । १ ।
येर अवघे संसारिक । इंद्र देव ब्रह्मादिक । २ ।
वरकडाचा पाड किती । जनी देवास बोलती । ३ ।

२५८. चोरा संगतीनें गेला । वाटे जातां नागवला । १ ।
तैसी सांडोनियां भक्ती । धरी विषयाची संगती । २ ।
अग्निसवें खेळे । न जळे तो परी पोळे । ३ ।
विश्वासला चोरा । जनी म्हणे घाला खरा । ४ ।

२५९. जगीं विठ्ठल रुक्मिणी । तुम्ही अखंड स्मरा ध्यानी । १ ।
मग तुज काय उणें । झाले सोयरे त्रिभुवनें । २ ।

साराचें जें सार। भवसिंधु उतरी पार। ३।
मन ठेउनी चरणीं। म्हणे नामयाची जनी। ४।

२६०. सुखें संसार करावा। माजी विठ्ठल आठवावा। १।
असोनियां देहीं। छाया पुरुष जैसा पाहीं। २।
जैसा सूर्य घटाकाशीं। तैसी देहीं जनी दासी। ३।

२६१. अंगी ल्याला शांती। दया क्षमा सर्वांभूतीं। १।
तेथे जाऊन पाहे देवा। ब्रह्मादिक करिती सेवा। २।
आवडी असे पैं कीर्तनीं। लवे संतांचे चरणीं। ३।
जैसी दया पुत्रावरी। तेंचि पाहे चराचरीं। ४।
बहु अपराध केला। म्हणे जनी तो रक्षिला। ५।

२६२. मृदु वाहे पाणी। वृज मानी ऐसें लाणी। १।
क्षमा ऐसी जिवीं। क्रोधभूत हें पृथ्वी। २।
गंधमाता सरी। करुनी आपुली कस्तुरी। ३।
गुणदोष मना नाणीं। म्हणे बहिरी होय जनी। ४।

२६३. आपणची सारा। पाहावें कीं नारीनरां। १।
पटा कारणे हे जनी। पांडुरंग तंतु मनीं। २।
भावेंवीण भजले। भिउनियां झांकीं डोळे। ३।
म्हणे काय पाहूं येथे। भिन्न नव्हे वस्तु जेथें। ४।
भिन्नाभिन्न नाहीं मनीं। म्हणे नामयाची जनी। ५।

२६४. संत आले महाद्वारीं। चोर पडले देवावरी। १।
नवल जहालें पंढरपुरीं। अखंड बैसे दासी घरीं। २।
जगामध्यें कीर्ती जाली। दासी जनी प्रगटली। ३।

२६५. संत आले दारवंटा। आपण वाजवतो घंटा। १।
यापासी देव नाहीं। ऐसें जाण लवलाही। २।

करी दंभाची जो पूजा। नाहीं संताहुनी दुजा। ३ ।
न करी संतासी नमन। देवा नाहीं समाधान। ४ ।
अहंकाराची हे करणी । व्यर्थ जाले म्हणे जनी। ५ ।

२६६. ज्ञानदेव म्हणे नामदेवाप्रती। ऐकावी विनंती एक माझी। १ ।
पृथ्वीचें हें तीर्थ करावें अंतरीं । पहावे महंत साधुसंत। २ ।
जीवन्मुक्त तुज नाहीं कांहीं काज । इच्छा आहे मजसाठी यावें। ३ ।
नामदेव म्हणे पुसावें विठ्ठला । आज्ञा देतां मला मीही येतों। ४ ।
जनी म्हणे ऐसे बोलोनिया नामा। गेले निजधामा राउळासी । ५ ।

२६७. वैष्णवांचा राव सखा ज्ञानदेव। निवृत्तीचा भाव उघड दावी। १ ।
वैराग्यशिरोमणी वैष्णव अग्रणी । ते माय बहिणी मुक्ताबाई। २ ।
राजाई, गोणाई आणि नामदेव। वैष्णवांचा राव म्हणवीतसे। ३ ।
त्यासी त्रिभुवन सोवळें वर्तन । सदाकाळ वाचें वनमाळी अखंडित। ४ ।
धैर्याचे संबळी ज्ञानानें संपुष्टी। पाऊलें गोमटी विठ्ठलाचीं। ५ ।
आवडीच्या तुलसी वाहियेल्या वरी। धूपदीप सारी जाळियेला । ६ ।
सुमन सोऽहं चंदनाचा लेपू। अलक्ष्य तो दीपु उजळीला। ७ ।
तो अतीत स्वार्थभूत भक्त। अखंड विरक्त डोलताती । ८ ।
तंतुतंत जाणा म्हणोनिया । अखंड स्मरणा करिताती बाई। ९ ।
त्या वैष्णवांचे चरणी करा ओवाळणी । म्हणे दासी जनी शरीराची । १० ।

२६८. नरहरी हिरण्यकश्यपास । तोचि श्रीराम रावणास । १ ।
द्वापारीं कृष्ण माग दास । विठ्ठल कलियुगीं भक्तांसी। २ ।
तोचि प्रल्हाद दुजा अंगज । तोचि उद्धव भक्त प्रसिद्ध। ३ ।
तोचि हा नामा भाग्य अगाध। विठ्ठल विहार जयासी। ४ ।
पद्मिनी दासी दे त्या घरी । तेचि मंथरा कैकैचे घरीं । ५ ।
तेचि कुब्जा कंस अनुचरी । प्रस्तुत नामा घरीं जनी नामें। ६ ।

एवं जन्मांतर पुरातन । विठ्ठला सांगे स्वमुखें करून। ७ ।
सत्य ज्ञानेश्वरा, तुझी आण। म्हणोनि जनी वाहतसे। ८ ।

२६९. आक्रोशें ध्यानासीं आणी पुरुषोत्तमा । पृथ्वीयेसी क्षमा उणी आणी। १ ।
अखंडित शुद्ध असावें अंतर। लोणिया कठोर वाटे मनीं। २ ।
बोलें ते वचन बहु हळुवट । सुमना अंगीं दाट जडभार। ३ ।
नाम तें स्मरण अमृत संजिवनी। म्हणे दासी जनी हेंचि करा । ४ ।

२७०. आम्ही आणि संत संत आणि आम्ही । सूर्य आणि रश्मि काय दोन। १ ।
दीप आणि सारंग सारंग आणि दीप । ध्यान आणि जप काय दोन । २ ।
शांति आणि विरक्ति विरक्ति आणि शांती। समाधान तृप्ति काय दोन। ३ ।
रोग आणि व्याधी व्याधी आणि रोग। देह आणि अंग काय दोन। ४ ।
कान आणि श्रोत्र श्रोत्र आणि कान । यश आणि मान काय दोन । ५ ।
देव आणि संत संत आणि देव। म्हणे जनी भाव एक ऐसा । ६ ।

२७१. संत आणि देव मानी जो वेगळे। तेणें येथें आगळे केले दोष । १ ।
माता ते वेगळी कुच ते उरींचे । म्हणोनियां त्याचें मर्दन करी। २ ।
पाप तें वेगळें पुण्य तें आगळें। म्हणोनि गरळें पितो मद। ३ ।
दिवस उगवतां पाहों नये त्यातें। जेणें हो संतांतें द्वेषियेलें। ४ ।
तयाचा विटाळ वाहे रजस्वला। म्हणे जनी चांडाळ बोलावूं नका। ५ ।

२७२. पाणी तेंचि मेघ मेघ तेंचि पाणी। काय या दोन्हीपणीं वेगळीक। १ ।
माती तेचि धूळ धूळ तेचि माती। भेंडा आणि भिंती काय दोन । २ ।
साखरीं गोडी गोडी साखरेसी। थिजलें तुपासी काय दोन्ही। ३ ।
डोळा तें बुबुळ बुबुळ तो डोळा । शांति ज्ञानकळा काय भिन्न। ४ ।
वदन ते ओंठ ओंठ तें वदन। क्षेम आलिंगन काय दोन। ५ ।
जीभ ते पडजीभ पडजीभ ते जीभ। आशा आणि लोभ काय दोन। ६ ।
संत तेचि देव देव तेचि संत । म्हणे जनी मात गोष्टी भिन्न। ७ ।

२७३. प्रपंचीं जो रडे। ब्रह्मवन त्यातें जडे। १ ।
ऐसा अखंडित ब्रह्मीं । विठ्ठला जो कर्माकर्मी। २ ।
पुत्रदेह ध्याया ध्यानीं। कांता धन हे कामिनी। ३ ।
सिंधूसी सांडावा। जनी म्हणे गा सदैवा। ४ ।

२७४. भजन करी महादेव । राम पूजी सदाशिव। १ ।
दोघे देव एक पाहीं । तयां ऐक्य दुजें नाहीं। २ ।
शिवा रामा नाहीं भेद । ऐसे देव तेही सिद्ध । ३ ।
जनी म्हणे आत्मा एक । सर्व घटीं तो व्यापक । ४ ।

२७५. पतंग सुखावला भारी । उडी घाली दीपावरी । १ ।
परि तो देहांतीं मुकला। दोहीं पदार्थी नाडिला । २ ।
विषयांचे संगती । बहु गेले अधोगती। ३ ।
ऐसे विषयानें भुलविले । जनी म्हणे वांयां गेले । ४ ।

२७६. विवेकाची पेंठ । उघडी पंढरीची वाट । १ ।
तेथें नाहीं कांही धोका । उठाउठी भेटे सखा । २ ।
मरोनियां जावें । शरण विठोबासी व्हावें । ३ ।
म्हणे नामयाची जनी। देव करा ऐसा ऋणी। ४ ।

२७७. शरीर हें जायाचें नश्वर आणिकांचें । म्हणाल जरी त्यांचे काय काज। १ ।
आंबरसें चोखिला बीज साले सांडिला । पुढें तेणे उभविला दुजा एकू। २ ।
समूळ साल माया सांडुनियां दिजे। वरि अहं बीज जतन करा । ३ ।
तें बीज भाजोनि करा ओंवाळणी । संतांचे चरणीं समूळ देह । ४ ।
पुढें त्या बीजांची न करावी दुराशा। न धरावी आशा पुढिलांची । ५ ।
आहे नाहीं देह धरीं ऐसा भाव। म्हणे जनी देव सहज होसी। ६ ।

२७८. नाना व्रत तप दान। मुखीं हरी स्मरण। १।
येथें असों द्यावा भाव। पुरवी अंतरीचें देव। २।
हाचि विश्वास धरुनी। कृपा करील चक्रपाणि। ३।
भक्तिभाव ज्याचा पुरा। त्यासी धांवतो सामोरा। ४।
लक्ष लावा पायांपाशी। म्हणे नामयाची दासी। ५।

२७९. परेचें अंतर जाणल्याची खूण। सदा ब्रह्म जाण नारायण। १।
तयापलीकडे शून्याचें देऊळ। पुसूनिया स्थळ दावी आतां। २।
तयापलीकडे नाग, कूर्म दोन्ही। ब्रह्म रुद्रमणी भेदूनिया। ३।
तयापलीकडे मौनाचें शिखर। मस्तकीं हा थोर मेरूमणी। ४।
जनी गेली तेथें फिरली माघारी। सत्य म्हणे हरी मीचि आतां। ५।

२८०. परा मावळली वृत्ती चाळवली। विश्रांतीसी आली माय सखी। १।
मी तो कांहीं नेणे दारवंट्यालागुनी। पाहतांना जगीं मी हारपले। २।
मजला कळेना घातलें अंजन। नेलें कीं निधान ब्रह्मरंध्रीं। ३।
अणूहुनी लहान पोकळीचा देठ। तयामार्जी भेटे जीवलग। ४।
जनी गेली तेथे उघडली वेळा। कोटी सूर्यकळा जन्मा आली। ५।

२८१. चैतन्याचे डोळे। उघडले आजी। १।
ब्रह्ममयें पीडले जी। एकरूप। २।
हेलावला पर। झाले नामारंभ। ३।
जीवें तो पतंग। ज्योती जाली। ४।
खुंटली हे मती। ठक पडे मना। ५।
नारायण जाणा। उभा राहे। ६।
वीराले मी जाला। पडीले मोहना। ७।
पांडुरंग झाला। मीचि आतां। ८।
जनी अणूहुनी। मौनाचे मस्तकीं। ९।
भरे तिहीं लोकी। नारायणा। १०।

२८२. राजराजेश्वरी अंबा। राजराजेश्वरी ।धृ.।
अहो अहो अंबाबाई। जीव प्राण तुझे पायीं। १।
तुझ्या नामाचा महिमा। वर्णू न शके वेद ब्रह्मा। २।
मज घेतले पदरीं। टाकूं नको, माते, दुरी। ३।
कृपाळू तू माऊली। चित्त द्यावें बोबड्या बोली। ४।
तुझे कृपेचे अंकित। बोलिलें हें मी उचित। ५।
जनी म्हणे मापक अंबा। विचरे चराचर हो अंबा। ६।

२८३. लोह जालें सोनें। परिसाचेनि संगें।
तैसा पांडुरंग। जाला मज। १।
युगानयुग मी। तुझी केली सेवा।
मोकलीसी, देवा। धन्य तुझी। २।
केली जीवासाठीं। ठाऊक तुम्हांला।
जाणोनि, विठ्ठला। नेणसी तूं। ३।
जनी म्हणे जोडी। जन्मोजन्मीं माझी।
भीड तुझी, देवा। राखियेली। ४।

२८४. शूराचें तें शस्त्र कृपणाचें धन। विध्वंसिल्या प्राण हातां नये। १।
गजमाथां मोती सर्पाचा तो मान। गेलियाही प्राण हातां नये। २।
सिंहाचे तें नख पतिव्रतेचें स्तन। गेलियाही प्राण हातां नये। ३।
विराल्यावांचून देह अहंभाव। जनी म्हणे देव हातां नये। ४।

२८५. संसारीं निधान लाधलें जनां। सद्गुरुचरणा सेवीं बापा। १।
कायावाचामन तयास देऊ। वस्तु मागून घेऊ अगोचर। २।
तें गोचर नव्हे जाण गुरुकृपेवीण। एऱ्हवी तें आपणा माजी आहे। ३।
असतां सम्यक परि जना चुकामुक। भुलली निष्टंक मंत्रतंत्रें। ४।
माळ वेष्टण करीं टपोर घेती शिरीं। नेम अष्टोत्तरीं करिताती। ५।

जो माळ करविता वाचेसि वदविता । तया हृदयस्था नेणे कोणी । ६ ।
सोहं आत्मा प्रगट जो दाखवी वाट । सद्‌गुरु वरिष्ठ तोचि जाणा । ७ ।
तया उत्तीर्णता व्हावया पदार्था । न देखों सर्वथा जनी म्हणे । ८ ।

२८६. कीर्तनासी जातां मार्गी टाकी पाय । अश्वमेघ होय फळ तया । १ ।
ओखद तरी तेथें घडे हिंसा । जन्मवेद भाषा वेदापाशीं । २ ।
गंगा वाराणसी धरोनि पदरीं । चाललीसे नारी दोहींकडे । ३ ।
आमच्या बापाची ऐकावया कीर्ति । जाऊं म्हणोन घेती ऐक्य कथीं । ४ ।
कीर्तनासी जावें कैसें कोणेपरी । असूं द्या अंतरीं गोष्ट हित । ५ ।
वऱ्हाडी धांवे जैसा प्रयोजनीं । तान्हेलें तें पाणी पुसावया । ६ ।
व्याकुळ तें एक चुकलें बाळक । त्या धांवे शोकें हांका मारी । ७ ।
अशी कथे जातां गंगा त्या चरणीं । म्हणे दासी जनी भाक माजी । ८ ।

२८७. कीर्तनाचा रस आवडे नरासी । लागती पायांसी मुक्ति चाऱ्ही । १ ।
वारी पंढरीची निश्चय ज्यां केला । वारकरी झाला पंढरीचा । २ ।
मोक्षाचा जो मोक्ष मुक्तीची जे मुक्ती । जनी म्हणे किती सांगूं फार । ३ ।

## भगवान श्रीकृष्ण जन्म, बालक्रीडा व काला

२८८. गौळण सांगे गौळणीला । पुत्र झाला यशोदेला । १ ।
एक धांवे एकीपुढें । वाटीताती सुंठवडे । २ ।
वाण भरोनिया ताटी । यशोदेच्या घरा दाटी । ३ ।
ऐसी गलबल झाली । दासी जनी हेल घाली । ४ ।

२८९. मग म्हणे नंदाजीला । पुत्रमुख पाहूं चला । १ ।
स्नान घालूनि त्यासी । वस्त्रें दिधलीं ब्राह्मणांसी । २ ।
परब्रह्म तें पाहुनी । ब्रह्मीं मिळे दासी जनी । ३ ।

२९०. आलिया ब्राह्मणासी दान । द्रव्य दिधलें अपार जाण । १ ।
गाई म्हसींची खिल्लारें । ब्राह्मणा दिधलीं अपारें । २ ।

कामधेनूची दुभनी । कल्पवृक्षाची दाटणी । ३ ।
ऐसा आनंदसोहळा । दासी जनी पाहे डोळां । ४ ।

२९१. ब्रह्मा वंदी ज्याचे पाय। त्याची यशोदा ते माय। १ ।
साम्राज्याचा जो दानी। मागे यशोदेसी लोणी। २ ।
क्षीरसागर ज्याचे चरणीं। त्याला पायावरतें न्हाणी। ३ ।
देव ब्रह्मांड पालकीं। त्याची टाळू हातें माखी। ४ ।
शुक सनकादिक योगी। जनी म्हणे दळूं लागी। ५ ।

२९२. अहो गोकुळींच्या देवा । आदि अंत तुम्हां ठावा। १ ।
न लगे पुसावें हो कोणा । आदि अंत हो सुजाणा। २ ।
जनी म्हणे हो गोकुळीं। किती खासी उष्टावळी। ३ ।

२९३. असो थोरथोरांची मात । तूंचि मिळालासी गोपाळांत। १ ।
त्यांच्या शिदोऱ्या सोडिसी। ग्रासोग्रासीं उच्छिष्ट खासी। २ ।
न म्हणे सोंवळे ओवळें । प्रत्यक्षचि तें ओवळें। ३ ।
स्वानंदाचे डोहीं हात। धुतले सर्वांही निश्चित। ४ ।
हातीं काठ्या पायीं जोडे। दासी जनी वाट झाडे। ५ ।

२९४. राधा आणि मुरारी। क्रीडा कुंजवनीं करी। १ ।
राधा डुल्लत डुल्लत। आली निजभुवनांत। २ ।
सुमनाचे सेजेवरी। राधा आणि तो मुरारी। ३ ।
आवडीनें विडें देत। दासी जनी उभी तेथ । ४ ।

२९५. अहो यशोदेचा हरी। गोपिकांसी कृपा करी। १ ।
वेणु वाजवितो हरी । सर्व देवांचा साहाकारी। २ ।
धांवे धांवे गाईपाठीं । जनी म्हणे जगजेठी । ३ ।

२९६. स्तन पाजायासी। आली होती ते माउसी। १ ।
तिच्या उरावरी लोळे। विठो माझा क्रीडा खेळे। २ ।
मेल्यें मेल्यें कृष्णानाथा। सोडीं सोडीं रे अनंता। ३ ।
लिंग देह विरविलें। जनी म्हणे या विठ्ठलें। ४ ।

२९७. मांडियेला डाव। कौरवांनी दुष्ट भाव। १ ।
टाकियेला फांसा। पांडव गेले वनवासा। २ ।
वना गेले पांडवबळी। दिनकरें दिधली थाळी। ३ ।
पांडवांची कृष्णाबाई। जनी म्हणे माझी आई। ४ ।

२९८. दुःशासन द्रौपदीसी। घेउनी आला तो सभेसी। १ ।
दुर्योधन आज्ञा करी। नग्न करावी सुंदरी। २ ।
आतां उपाय कृष्णा काय। धांवें माझे कृष्ण माय। ३ ।
निरी ओढितां दुर्जन। झालें आणिक निर्माण। ४ ।
ऐसी असंख्य फेडिलीं। देवीं तितुकीं पुरविलीं। ५ ।
तया संतां राखिलें कैसें। जनी मनीं प्रेमें हांसे। ६ ।

२९९. दुर्योधना मारी। पांडवासी रक्षी हरी। १ ।
पांडवा वनवासीं जाये। तयापाठीं देव आहे। २ ।
उणें न पडे तयांचे। काम पुरवी हो मनाचे। ३ ।
जनी म्हणे विदुराच्या। कण्या भक्षी हो प्रीतीच्या। ४ ।

३००. ऐशापरी पांडवांतें। रक्षियेलें दीनानाथें। १ ।
शंखचक्र आयुधें करीं। छाया पितांबर करी। २ ।
हस्त ठेऊनियां माथा। सुखी असा निर्भय चितां। ३ ।
आज्ञा घेउनी सर्वांची। देव गेले द्वारकेसी। ४ ।
सरला थालिपाक आतां। पुढें सावधान श्रोतां। ५ ।

कथा पुढील गहन । घोषयात्रा निरूपण । ६ ।
येथुनी अध्याय कळस । जनी म्हणे झाला रस । ७ ।

३०१. ऋषि म्हणती धर्मदेवा । आमचा आशिर्वाद घ्यावा । १ ।
पांडवपालक गोविंद । तिहीं लोकीं गाजे ब्रिद । २ ।
भक्तिभावें केला वश्य । हरि सांभाळी तयास । ३ ।
रात्रंदिवस तुम्हांपासीं । दुजा ठाव नाहीं त्यासी । ४ ।
देव द्रौपदीतें सांभाळी । उभा पाठीसी वनमाळी । ५ ।
वनीं सांभाळी पांडवांसी । सुदर्शन त्याजपाशीं । ६ ।
हरिभक्तिं जाहला ऋणी । म्हणे नामयाची जनी । ७ ।

३०२. भक्त जें जें कर्म करिती । तें तूं होसी कृपामूर्ती । १ ।
हें तों नवल नव्हे देवा । भुललासी भक्तिभावा । २ ।
वाग्दोर धरुनी दांतीं । चारी घोडे चहूं हातीं । ३ ।
धूतां लाज नाहीं तुला । दासी जनी म्हणे भला । ४ ।

३०३. पांडवांचे घरीं । रात्रंदिवस मुरारी । १ ।
तैंसा सखा नामयाचा । एके ठायीं जेवायाचा । २ ।
त्याच्या उच्छिष्ठाचा ग्रास । जनी हाते उचली त्यास । ३ ।

३०४. अहो द्रौपदीच्या बंधू । तारक देवा कृपासिंधू । १ ।
पांचाळीसी वस्त्रें देत । पुरवितो जगन्नाथ । २ ।
जनी म्हणे भाग्यवंत । तिच्या भावाचा अंकित । ३ ।

३०५. बाप श्रोतियाचा राजा । कैसी उभारिली ध्वजा । १ ।
एक झाला परिक्षिती । ऐसे पवाडे गर्जिती । २ ।
भागवतीं रससुखें । द्रौपदी वाढी सावकाशें । ३ ।
ज्याची ऐकतां गर्जना । कंप काळाचिया मना । ४ ।
सात दिवस वृष्टि झाली । जनी म्हणे मात केली । ५ ।

३०६. भिल्लणीचीं फळें कैशीं । चाखोनी वाहातसे देवासी । १ ।
भावें तिचीं अंगिकारी । सर्वांहुनी कृपा करी । २ ।
गुज वान्नरांसी पुसावें । राक्षसांतें हो जिंकावें । ३ ।
वान्नर अवघे भुभु:कार । बोलताती रामासमोर । ४ ।
आज्ञा करावी आम्हांसी । रावण आणितों तुम्हापासीं । ५ ।
तुझ्या नामाच्या प्रतापें । हनुमंत गेला जो संतापें । ६ ।
सीताशुद्धि करूनी आला । दासी जनीस आनंद झाला । ७ ।

३०७. मारूनियां त्या रावणा । राज्य दिधलें बिभिषणा । १ ।
सोडवुनी सीता सती । राम अयोध्येस येती । २ ।
ख्याति केली रामायणीं । म्हणे नामयाची जनी । ३ ।

३०८. देव भक्तांचा अंकित । कामें त्याचीं सदा करीत । १ ।
त्याचें पडों नेदी उणे । होय रक्षिता आपण । २ ।
जनी म्हणे भक्तिभाव । देवदास ऐक्य जीव । ३ ।

३०९. काम लागे कृष्णापाठीं । केली स्मशानाची गांठी । १ ।
परम कामें भुलविला । कृष्ण स्मशानासी नेला । २ ।
भुलविला मनीं । रुद्र पाहोनी मोहनी । ३ ।
कन्येचिये पाठीं । ब्रह्मा लागे हतवटी । ४ ।
काम पाराशरालागीं । ज्ञानासी लाविली आगी । ५ ।
काम गेला शुकापाठीं । म्हणे जनी मारी काठी । ६ ।

३१०. योगीं शीण झाला । तुजवांचुनी विठ्ठला । १ ।
योग करितां अष्टांग । तुजविण शुका रोग । २ ।
बैसला कपाटीं । रंभा लागे त्याच्या पाठीं । ३ ।
तै त्वांचि सांभाळिला । जेव्हां तुज शरण आला । ४ ।

सांगोनी पुत्रातें । त्वांचि छळिलें कश्यपातें । ५ ।
अमराच्या राया । म्हणे जनी सुखालया । ६ ।

३११. द्रौपदीकारण । पाठीराखा नारायण । १ ।
गोरा कुंभाराच्यासंगें । चिखल तुडवूं लागे अंगें । २ ।
चोखामेळ्यासाठीं । ढोरें ओढी जगजेठी । ३ ।
जनीसंगें दळूं लागे । सुरवर म्हणती धन्य भाग्यें । ४ ।

३१२. स्कंधी ऋषि तो वाहिला । बळीनें द्वारपाळ केला । १ ।
भक्ता आधीन होसी । त्याच्या वचनीं वर्तसी । २ ।
त्याचे गर्भवास सोसी । कष्टी होता अंबऋषी । ३ ।
सर्व दुःखासी साहिलें । जनी म्हणे बरवें केलें । ४ ।

३१३. भूत झालें ऋषि पोटीं । लावियेलें मृगापाठीं । १ ।
विश्वामित्रा घाला घाली । पोटीं शकुंतला आली । २ ।
भगांकित केला । इंद्र भूतानें झडपिला । ३ ।
तेचि झालें हें भारत । म्हणे जनी केली मात । ४ ।

३१४. ब्राह्मणाचें पोर । मागे दूध रडे फार । १ ।
माता म्हणे बालकासी । दूध मागें देवापासी । २ ।
क्षिराब्धीची वाटी । म्हणे जनी लावी ओंठीं । ३ ।

३१५. दोहीकडे दोही जाया । मध्यें गोरोबाची शय्या । १ ।
गोरा निद्रिस्थ असतां । कपट करिती त्याच्या कांता । २ ।
गोरोबाचे दोन्ही हात । आपुल्या हृदयावरी ठेवित । ३ ।
जागा झाला गोरा भक्त । जनी म्हणे त्या निद्रित । ४ ।

३१६. चोखामेळा संत भला । तेणें देव भुलवीला । १ ।
भक्ति आहे ज्याची मोठी । त्याला पावतो संकटीं । २ ।

चोख्यामेळ्याची करणी। तेणें देव केला ऋणी। ३ ।
लागा विठ्ठल चरणीं । म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

३१७. यातिहीन चोखामेळा । त्यासी भक्तांचा कळवळा। १ ।
त्याचा झाला म्हणियारा। राहे घरीं धरी थारा। २ ।
देव बाटविला त्यानें। हांसे जनी गाय गाणें। ३ ।

३१८. चोखामेळा अनामिक । भक्तराज तोचि एक। १ ।
परब्रह्म त्याचे घरीं । न सांगतां काम करी। २ ।
नेमी जनी नीच दासी । रंगीं वेढी नांगर पिशी। ३ ।

३१९. भक्तीसाठी याति नाही। नाही तयासी ते सोई । १ ।
जो कां भक्त यातिहीन । देव करी त्याचा मान। २ ।
त्यासी भक्ताचा आधार। वाट पाहे निरंतर। ३ ।
जनी म्हणे भक्तासाठी। विठो सदा गोण्या लोटी। ४ ।

३२०. पंढरीच्या राया । माझी विनवणी पायां। १ ।
काय वर्णू हरिच्या गोष्टी । अनंत ब्रह्मांडें याचे पोटी । २ ।
सेना न्हावी याचे घरी। अखंड राबे विठ्ठल हरी। ३ ।
राम चिंता ध्यानी मनी। म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

## राजा हरिश्चंद्र आख्यान

३२१. अपूर्व कोणे एके काळी । देव सभेच्या मंडळी। १ ।
करी त्रैलोक्य भ्रमणा । करी वाहे ब्रह्मवीणा । २ ।
देती सर्वही सन्मान । सिद्ध साधू योगी जन। ३ ।
सांगे अपूर्व काहाणी । म्हणे नामयाची जनी। ४ ।

३२२. नारद सांगे मृत्युलोकी । हरिश्चंद्र पुण्यश्लोकी । १ ।
कैसा सत्वाचा समुद्र। ऐसा नाही नृपवर । २ ।

नारदाची ऐकून गोष्ट । सुखावला तो वसिष्ठ। ३ ।
कोप विश्वामित्रां आला । कैसा वाढविता शिष्याला । ४ ।
तपतेजें सूर्यराशी । छळीन म्हणे हरिश्चंद्रासी । ५ ।
उदय पश्चिमे दिनकर। सत्व ढळीना नृपवर । ६ ।
वसिष्ठाच्या ऐकुनी बोला । विश्वामित्रा क्रोध आला । ७ ।
जरी उतरेल माझ्या तुकी । देईन आपुल्या तपासी। ८ ।
ऐसा दोघांचा संवाद । होता उठला नारद। ९ ।
इंद्र म्हणे का निर्फळ । शब्दाशब्दी वाढेल कळ ।१०।
ऐसे ऐकतां वचन । जनी म्हणे केले गमन।११।

३२३. इंद्रसभे झाला वाद । करु रायासी सावध। १ ।
येरीकडे ब्रह्मऋषी। कृपे वोळला शिष्यासी । २ ।
नवी व्याली जैसी गाय। पक्षी अंडजी झेपाय। ३ ।
बाप माझा तैशापरी। होय शिष्याचा साहाकारी। ४ ।
येऊनिया मागेल तूर्ते । छळ करील गाधिसुत। ५ ।
बापा सावध अंतरी । सत्व ढाळील नानापरी। ६ ।
धरी श्वापदांच्या झुंडी । तुझ्या देशात भवंडी । ७ ।
मानी शब्दाला आमुच्या। वना न जावें ऋषीच्या । ८ ।
ऐसे बोलोनी रायासी । गेला वसिष्ठ तपासी । ९ ।
तुझ्या सत्वालागी हानी । करु इच्छी म्हणे जनी।१०।

३२४. विश्वामित्रें तत्क्षणी। सिद्ध आश्रमा येऊनी । १ ।
बैसे येऊनी आश्रमासी। करी मातंग यागासी । २ ।
सहस्र अवदान आहुती । होता प्रगटली शक्ति। ३ ।
विश्वामित्रें तयेवेळे । देवी वरदानाचे बळें। ४ ।
व्याघ्र हिंडती राने राने । बंद केले येणे जाणे। ५ ।

कृषा न जाती कृषिक। तीर्थयात्रेसी पांथिक । ६ ।
धेनु न जाती वनासी । वाट नाही वेव्हारासी। ७ ।
प्रजा जाऊन राजसभे । हात जोडोनियां उभे । ८ ।
ऐसी प्रजेची हे वाणी । राजा विचार तो मनीं । ९ ।
गुरुवचन धरितां चित्ती । माझी होईल अपकिर्ती । १० ।
राव निघाला स्वारीसी । म्हणे नामयाची दासी । ११ ।

३२५. नाना वाजंत्र्याच्या ध्वनी । राजा आरुढला वहनी। १ ।
राव प्रवेशला वनी। अवघी श्वापदे मारुनी। २ ।
आश्रमी आणायासी राव। केले ऋषीनें लाघव। ३ ।
मृग कनकाचा साजरा। आला रायाच्या सामोरा। ४ ।
गुणी लाविलासे बाण। घेऊ पाहे त्याचा प्राण। ५ ।
येरु कीलान मारुनी जाय। धरणी न ठेवी तो पाय। ६ ।
राव लागे तया पाठी । दम न समावे पोटी । ७ ।
प्रवेशला तये वनी । देखे अपूर्व नयनी । ८ ।
धेनुव्याघ्र एके स्थानी । चाटी एकमेंका दोन्ही। ९ ।
निर्वैर श्वापदगण । राव विस्मय करी देखोन । १० ।
पुढे जाता सुगंध पाणी । राव स्नानातें करुनी । ११ ।
भाव पूजिला गिरिजावर । नमन केले जोडुनी कर । १२ ।
विश्वामित्रे वनी तया। दोघी रुपसा नयनी। १३ ।
रायापुढे नृत्य करी। टाळ विणा झणत्कारी । १४ ।
द्रव्य आणविले अपारे। राव देतो आपुल्या करें। १५ ।
नाही द्रव्यासी कारण। तुझ्या स्वरुपासी लीन। १६ ।
बोले मुनिवर्य दासी । राजा कोपला मानसी । १७ ।
आज्ञा केली प्रधानासी । मारा बाहेर घाला यासी । १८ ।
रक्तवदन आश्रमासी । म्हणे नामयाची दासी । १९ ।

३२६. ऋषी अंगणी कामिनी । लोळती येऊनी दोघीजणी। १ ।
तुम्हा दिला कोणें त्रास । त्याचा करीन मी ग्रास । २ ।
आम्ही बोलिलों रायासी । घेत नाहीं उचितासी । ३ ।
ऐसें बोलतां वचन । राव कोपला दारुण। ४ ।
केलें प्रधानें ताडण। बाहेर घातलें मारून । ५ ।
त्यांच्या परिसोनी बोला । विश्वामित्र कोपें आला। ६ ।
म्हणे रायासी अधमा । माझी प्रताप महिमा। ७ ।
वसिष्ठाच्या पडिभारें । मातलासी द्रव्यें थोरें । ८ ।
निर्वैर श्वापदांसी । कारे मारिलें तयासी। ९ ।
वधूनियां शेवटीं त्यासी। मारियेल्या तापस दासी। १०।
पुढें रसाळ आहे कथा। निद्रा लागेल नृपनाथा। ११।
स्वप्नीं मागेल दानासी । म्हणे नामयाची दासी। १२।

३२७. विश्वामित्र द्विजचिन्ह। स्वप्नीं प्रगटे आपण । १ ।
देखोनियां द्विजवरातें। नमियेलें जोडुनी हातें । २ ।
राव बोले उदारपणीं । काय इच्छा आहे मनीं । ३ ।
दयावंत धर्ममूर्ती । तुझी तिहीं लोकीं कीर्ती। ४ ।
अंकुश कडिया लेखणी। राया वोपी माझ्या पाणी । ५ ।
उदारपणें देसी जरी । उदक घालीं माझे करीं। ६ ।
कृपा करूनी आम्हांवरी । आलें पाहिजे नगरीं। ७ ।
येथें संकल्पावांचून। नाहीं होत माझें येण। ८ ।
ायें घेऊन जीवन। ऋषिहस्तकीं घालून। ९ ।
एक नवल देखे दृष्टी। काळपुरुष उभा पाठीं। १०।
लोहदंड घेउनी करी । घालूं पाहे त्याचे शिरीं। ११।
णों झाला भयाभीत । राव स्वप्नांत बरळत। १२।

राव बैसला उठोन । करी देवाचें स्मरण । १३ ।
तारामती पुसे राया । कांहो बरळलां स्वामिया । १४ ।
राज्यदान सुकृतकोटी । एक काळापुरुष पाठीं । १५ ।
लोहदंड घेऊन करीं । घालूं पाहे माझे शिरीं । १६ ।
येरु म्हणे या जीवनीं । करा स्नानातें जाउनी । १७ ।
अग्निमुखीं द्यावें दान । स्वप्न दोष नासती जाण । १८ ।
म्हणे प्रधान महाराजा । दान करा कांहीं द्विजा । १९ ।
ऐसें बोलतां वचन । आला विश्रामित्र जाण । २० ।
राजा बोले कर जोडून । शयनीं देखियेलें स्वप्न । २१ ।
ह्याच स्वरूपा प्रमाण । ऐसा देखिला ब्राह्मण । २२ ।
सिंहासन समेदिनी । राया दे गा मजलागोनी । २३ ।
आतां मार्गें दक्षणेसी । म्हणे नामयाची दासी । २४ ।

३२८. ऋषि म्हणे रे समर्था । असो स्वप्नींची हे वार्ता । १ ।
इच्छा धरून आलों येथें । औट तुक दे कनकातें । २ ।
कृपा करून द्याल जरी । उदक घालीं माझे करी । ३ ।
दया करा आम्हांवरी । आलें पाहिजे नगरीं । ४ ।
येथें संकल्पावांचून । नाहीं हात माझें येणें । ५ ।
रायें घेउनी जीवन । ऋषी हस्तकीं घालून । ६ ।
विश्वामित्र शिबिकासनीं । राव चालिला घेउनी । ७ ।
मार्गी वाद्यांचा लाघव । अयोध्येसी आला राव । ८ ।
राव प्रवेशला नगरीं । विश्वामित्र बैसला द्वारीं । ९ ।
दंड पडताळुनि हातीं । लक्षियेली तारामती । १० ।
उभी थरथरां कांपत । राया जाणविली मात । ११ ।
राव म्हणे ऋषेश्वर । कोण्या अन्यायानें मार । १२ ।

केला संकल्प आम्हांसी। तूं कां गेलासी सदनासी।१३।
हात बांधोनियां राया। दंडहस्तें मारी तया।१४।
तंव आला रोहिदास। चरणीं ठेवी मस्तकास।१५।
मेरु रक्तांबर नयन। पुसे कवणाचा कवण।१६।
राव म्हणे कुळभूषण। आहे आमुचा नंदन।१७।
राजा पाचारी भांडारी। आणा कनकातें झडकरी।१८।
मज दिलें राज्यदान। तेंचि घेसी तूं परतोन।१९।
छत्र मुद्रा सिंहासन। ऋषि हस्तकीं ओपून।२०।
ई तों आलें राज्यदानें। औट भार कनक देणें।२१।
धनवंत सौदागर। उभे रायाचे समोर।२२।
धन देतों जी अपार। सोडा रायाला सत्वर।२३।
विश्वामित्र म्हणे त्यांसी। काय करावें द्रव्यासी।२४।
क्षितिवरी जितकें धन। तेंहि माझेंचि संपूर्ण।२५।
नाहीं कोणाचा उपाव। जनी म्हणे रक्षील देव।२६।

३२९. राव म्हणे अहो ऋषि। काशीखंड वाराणशी।१।
येथें जाऊनियां आम्ही। ऋण फेडूं तुमचें स्वामी।२।
एक मासाची अवधी। तुम्ही द्यावी कृपानिधी।३।
ऋषि म्हणे खरें बोला। नातरी शापीन तिघांला।४।
रोहिदास म्हणे त्यासी। गहाण राहीन तुम्हांपाशी।५।
पितृवचनाचें ऋण। त्यांचा उतराई होईन।६।
ऋण हत्या आणि वैर। नाहीं चुकत मेल्यावर।७।
ऐसी बाळकाची वाणी। ऐकूनि दचकला मनीं।८।
ऋषि बोलला नृपासी। नको राहूं आमुचे देशीं।९।
नेकें निकें त्यासी म्हणे। बाहेर आलीं तिघेजणें।१०।
मनी निघाला त्वरित। झाला लोकांचा आकांत।११।

लोट पूर जाती पळा। नेत्रीं उदक ढळढळां। १२।
कैसा ब्राह्मण पहा हो। नृपचंद्रालागीं राहो। १३।
राजा बाहेर दवडुनी। पाहे आमुचाचि धणी। १४।
नगरलोकांसी फिरवुनी। राव निघाला तेथुनी। १५।
अलंकार देखियेला। मागें विश्वामित्र आला। १६।
माझ्या राज्यांतील संपत्ती। तारामती धरिली हातीं। १७।
घेई भूषण उतरोनी। म्हणे नामयाची जनी। १८।

३३०. विश्वामित्र जाऊनि पुढें। वणवा लाविला चहूंकडे। १।
धूम्रें दाटलें अंबर। ज्याळा येती भयंकर। २।
विश्वामित्रें काय केलें। राया बाळातें चुकविलें। ३।
दोघे न पडती दृष्टि। होवोनियां परम कष्टी। ४।
म्हणे अहा कटकटा। काय लिहिलें अदृष्टा। ५।
मेले वणव्यांत जळोनी। ऐसें आलें तिचे मनीं। ६।
पिटी ललाट करतळें। अंग टाकी धरणी लोळे। ७।
म्हणे बाळा रोहिदासा। भेट देईं गा पाडसा। ८।
सूर्यवंशीं चुडारत्ना। प्राणपति गा निधाना। ९।
राव दृष्टी न पडतां। अग्नि खाईन तत्वतां। १०।
ऐसें विचारलें मनीं। म्हणे नामयाची जनी। ११।

३३१. धर्मशिळे आली राणी। ऋषि दचकला मनीं। १।
अग्नि विझवोनी अंगें। सतीपुढें आला रागें। २।
म्हणे कवणाची कवण। अग्नि खासी कवण्या गुणें। ३।
येरी म्हणे पांथिकातें। पति बाळ चुकले मातें। ४।
तुम्हीं असतील देखिले। मज सांगा जी वहिले। ५।
ऋषि बोले तिजलागून। मेले अग्नींत जळून। ६।
तारामती नेउनी तेथें। दाखविलीं दोन्ही प्रेतें। ७।

त्वचा अंगींची जळाली। हात पाय गोळा झालीं। ८ ।
देखे नृपाचें ते मढें। पाहें वल्लभा मजकडे। ९ ।
रूसूं नका बोला वेगें। गुजगोष्टी मजसंगें। १०।
रोहिदास कवळी पोटीं। लावी लल्लाट लल्लाटीं। ११।
शोक करी तारामती। अस्त झाला तो गभस्ती। १२।
प्रेत कवळी कां निर्फळ। गेला गेला हंसनीळ। १३।
आतां प्राप्त झाली निशी। व्याघ्र भक्षील तिघांसी। १४।
सति पुढोनियां प्रेत। नेलें ओढोनी परत। १५।
उदर फोडोनी त्वरीत। टाकियेलें काढुनी आर्त। १६।
रागें गुरगुरी तो जाणा। भय दावी क्षणक्षणा। १७।
येरी नेत्र झांकियेले। पंचप्राण आकर्षिले। १८।
तारामती सांडील प्राण। लटिकें प्रतिज्ञा वचन। १९।
पतिपुत्र दोघेजण। आला घेऊनी ब्राह्मण। २०।
नाहीं व्याघ्र ना वणवा। मृगजळाचा हेलावा। २१।
तिघेजणें एक झालीं। दासी जनीं आनंदली। २२।

३३२. पंथ क्रमितां तिघांसी। आडवा आला कपटवेषी। १ ।
होवोनियां वृद्ध विप्र। हातीं काठी भार्याकुमर। २ ।
म्हणे धन्यरे नृपेशा। तुझी कीर्तिघोष ठसा। ३ ।
भेरी गर्जती त्रिभुवनीं। धांवून आलों मी ऐकुनी। ४ ।
आज्ञा करावी जी स्वामी। तुमचे शरणागत आम्ही। ५ ।
करुणा दाखवी रायासी। दीन आम्ही तीर्थवासी। ६ ।
पुढें प्रवास कठीण। पायीं नाहीं पायतण। ७ ।
तिघां वोपोनियां जोडे। जनी म्हणे जाती पुढें। ८ ।

३३३. आज्ञा करूनी सूर्यासी। तापवी द्वादश कळेसी। १ ।
बाप तपाच्या सामर्थ्ये। आज्ञा वंदिली आदित्यें। २ ।

पर्वताच्या लाह्या होती । असा प्रकाशला गभस्ती । ३ ।
रोहिदास म्हणे तात । बहू झालों तृषाक्रांत । ४ ।
भाकितसें हो करूणा। सत्वर मेळवीं जीवना । ५ ।
प्राप्त न होतां जरी तोय। जीव माझा जाऊं पाहे। ६ ।
बाळ कडे घेऊनियां । पैल दिसे तेथें छाया । ७ ।
उदक प्राशन करुनी । पंथ क्रमूं म्हणे जनी । ८ ।

३३४. पुढें जातां कष्टप्रेम । निर्मी मोहाचा आश्रम। १ ।
धर्मपोयेची कुसरी । शोभा रमणीय साजिरी। २ ।
वृक्ष लागले अंबरी। डोलताती नानापरी। ३ ।
फणस कर्दळी गंभेरी । आंबे नारळी खर्जुरी । ४ ।
चिंचा पपया जांभळी। गुंज खिरण्या रायकेळी । ५ ।
सीताफळें कवठें निंब । बोरें परीच्या दाळिंब। ६ ।
जाई मोगरा सेवंती। चांफा बकुल मालती। ७ ।
पारिजातक हे चमेली। झेंडू गुलाबास मखमली। ८ ।
तुळसी मंजुळ शोभती । नानापरी पुष्पजातीं। ९ ।
प्राप्त वसंताचा काळ। मधु कुंजती कोकिळ ।१०।
रंभा ऐशा देवांगना। सर्व शृंगारी भूषणा।११।
वेलवाळा तोयें सारी । उभ्या तिष्टताती द्वारीं ।१२।
सुगंध वनीं शीतळ जळ । ऐसें शोभे रम्यस्थळ ।१३।
ऐसी देखोनी वाटिका । चोज नाहीं नृपनायका ।१४।
म्हणती हे धर्मपोये। जनी म्हणे पुढें जायें ।१५।

३३५. पोई अव्हेरितां राय । मागें ऋषि धांवताहे। १ ।
धन्य धन्य रे नरेंद्रा । हातीं धरी हरिश्चंद्रा । २ ।
उष्ण न ध्यायी कहार। मार्गी श्रम झाला फार। ३ ।
करा आश्रम पुण्यता। आम्हां घडों द्यावों तीर्था । ४ ।

येथें केलिया आराम । व्यर्थ जाती वायां श्रम । ५ ।
क्रमा चार दिवस । पहा पोईचा हा वास । ६ ।
द्यावी आम्हां सर्व जोडी । कृपा कराल ती थोडी । ७ ।
करा आनंदें भोजन । सेवा सिद्ध उद्कपान । ८ ।
म्हणे जावें आश्रमाला । पुढें पंथासी लागला । ९ ।
त्राहें त्राहें रे जगदीशा । सत्व रक्षिसील कैंसा । १० ।
ऐसा छळक हा ऋषि । नेणों पार कैसा नेशी । ११ ।
आमची चिंता तुजला हरी । जनी म्हणे कृपा करी । १२ ।

३३६. ऋषि आश्रमा येउनी । येतां देखे ताराराणी । १ ।
माव करुनि तात्काळ । कैसा निर्मिला नृपाळ । २ ।
येऊनि आश्रमासी पाहे । डोळां देखियेला राय । ३ ।
शुद्ध सुमन सेजे नीरा । घालिताती विंझणवारा । ४ ।
सुगंध चंदन चर्चिती । नानापरींच्या उत्पादेती । ५ ।
रत्नखचिताची झारी । राय घेऊनियां करीं । ६ ।
आनंदे प्राशन । पुढें दिव्यान्न भोजन । ७ ।
ऐसें करितां अवलोकन । राजा पाहे शामवदन । ८ ।
नव्हे तेंचि कैसे झालें । सूर्या अंधत्व आलें । ९ ।
पुष्पभार शेषावरी । कैसा आजि झाला भारी । १० ।
ध्रुव मेरू गजबजिला । तैसी परी झाली रायाला । ११ ।
जोडोनियां करपद्मा । म्हणे बरी केली सीमा । १२ ।
ऐसें होतें जरी मनीं । तरीकां राज्य दिलें दानीं । १३ ।
बुद्धि भविष्यानुसार । मी तों आहे येथें स्थीर । १४ ।
म्हणोनियां पुढे जाय । अव्हेरिलें धर्मपोय । १५ ।
मार्गी देखियेलें राया । जनी म्हणे लागे पायां । १६ ।

३३७. येतां देखोनिया बाळ। ऋषि धांवला तात्काळ। १ ।
कडे घेऊनि तयाला। ऋषि आश्रमासी आला। २ ।
तुझें मायबापीं प्रेम। होय पाहोनी आराम। ३ ।
सुखें करूनी भोजन। सुवासित उदकपान। ४ ।
करूनी क्रमियेलें पंथा। तिहीं सांगितली वार्ता। ५ ।
बाळ येतसे मागून। त्याचा परामर्ष करणें। ६ ।
म्हणोनि सारिलें विंदान। पुढें वाढिलें द्विव्यान्न। ७ ।
रडे मोकलुनी धाय। येथें कल्पांती न राहे। ८ ।
पुढें लागला पंथासी। ऋषि तटस्थ मानसीं। ९ ।
वदनीं बोट घाली वोजा। ऋषि करीतसे चोजा। १० ।
ऐसें सत्वादिकांपुढें। तप खद्योत बापुडें। ११ ।
काय करणें ऐशियांसी। व्यर्थ मुकलों तपासी। १२ ।
मार्गी तिघें एक झालीं। दासी जनी आनंदली। १३ ।

३३८. ऐसें क्रमितां अवधारीं। विश्वेश्वराची नगरी। १ ।
देखियेली वाराणसी। थोर आनंद मानसीं। २ ।
म्हणती घ्यावें शिवदर्शन। तेणें श्रम निवारण। ३ ।
म्हणे कठोरे दक्षणा। बरा होसी चुकावणा। ४ ।
जोका राजा सूर्यवंशीं। छत्र चामरें जयासी। ५ ।
माथा बांधोनिया तृण। घाली विक्रया आपण। ६ ।
राणी म्हणे प्राणेश्वरा। आधीं विक्रा माझा करा। ७ ।
रोहिदास कर जोडुनी। चरणीं मस्तक ठेवुनी। ८ ।
आधीं माझिया द्रव्यासी। तुम्ही द्यावें कौशिकासी। ९ ।
ऐसें दोघांचे उत्तर। नवल करी ऋषिश्वर। १० ।
काय करा याच्या बोला। म्हणे वजनीं सोनें घाला। ११ ।

अग्निहोत्री तो ब्राह्मण। उभा रायापें येऊन ।१२।
देई तारामती तुक। एक भार हा कनक ।१३।
रोहिदास म्हणे ताता। माता सनेह माझ्या चित्ता।१४।
राव बोलिला वचन । थीघ्र यावें बा भेटोन।१५।
उभी राहोनी वेल्हाळा। पोटीं बाळाचा उमाळा ।१६।
अश्रु ढाळिती लोचन । हा हा शब्दें करी रूदन ।१७।
बोले कौशिक ये माते । स्नेह सोड चाल पंथें ।१८।
करुनियां ताडातोडीं । पाहे कवतुक आवडी ।१९।
माता म्हणे बाळकासी । ममता असूं दे मजपाशीं।२०।
रोहिदास ताराराणी । तेही घेतली ब्राह्मणीं ।२१।
मोल देऊनियां दुणें। राव घेतला डोंबानें।२२।
घेऊनियां घरा आला । येऊन सांगतो भार्येला।२३।
सेवक आणिला तुम्हांसी । सेवा घ्यावी आवडे तैसी।२४।
घागर घेऊनियां हातीं । पाणी आणी शीघ्र गति।२५।
कुंभ घेऊनि चालला । खडा हाणोनि फोडिला।२६।
रिक्तपाणी येतां त्यासी। अवघे घुमसिती रायासी ।२७।
हा तो पहिलाच शकून। पुढें येणें काय करणें।२८।
म्हणती हा तो नव्हे भला। यासी ठेवा स्मशानाला ।२९।
राव रक्षी स्मशानासी । म्हणे नामयाची दासी ।३०।

३३९. अनामिक त्यासी पुसे । तुमचें भोजनाचें कैसें । १ ।
कर संपुष्ट जोडुनी । राव विनवी मधुर वचनीं । २ ।
जेणें निघे तुमचें काम । राखा माझाही स्वधर्म। ३ ।
नृपा दिलें कोरें अन्न। सुखें करावें भोजन। ४ ।
धान्य घेऊनियां करीं। राव आला गंगातीरीं। ५ ।
स्नान संध्या नेम सारी । राजा स्वयंपाक करी। ६ ।

गाय अग्नीचा पैं ग्रास । ठाव वाढिला धर्मास। ७ ।
ग्रास घालावा वदनीं । आला विश्वामित्र मुनी। ८ ।
बैसावें जों भोजनासी। अकस्मात पावे ऋषी । ९ ।
एक भाग भक्षियेला। दुजा राजाचा उचलिला ।१०।
तृप्त होवोनि ऋषेश्वर। उठे देउनी ढेंकर ।११।
पदर कसुनी कटासी। सदा सादर सेवेसी ।१२।
निराहार शक्तिहीन। दिसे जैसा रंक दीन।१३।
ऐसा छळी प्रतिदिनी। म्हणे नामयाची जनी ।१४।

३४०. येरीकडे ताराराणी। द्विजा घरीं वाहे पाणी। १ ।
छिद्र पाडोनी रांजणा । पाणी त्यामध्यें थारेना। २ ।
नानापरीचें गांजणें । देती गाळी हो प्रदानें। ३ ।
पाणी वाहणें कीं खेळा। होऊं आली सांजवेळा। ४ ।
काळ कौशिक ब्राह्मणें । नित्य अग्निहोत्र करणें। ५ ।
रोहिदासा आज्ञा करी। समिधा आणाव्या झडकरी । ६ ।
संगें घेऊनियां गडी। वना चालीला तांतडी । ७ ।
धरुनियां सर्पवेष । रोहिदासा केला दंश। ८ ।
येउनी सांगती मातेस । सर्पे खादलें पुत्रास। ९ ।
गेला चंद्र उतरोनी। दिसे जैसी म्लान वदनी ।१०।
करुणा आली ब्राह्मणासी। जाय सांभाळी पुत्रासी ।११।
रडे मोकलोनी धाय । म्हणे आतां मी करूं काय।१२।
काय करुं आतां कैसे। कोठें गेलें हो पाडस।१३।
प्राण राहिला संकटीं। करा पाडसाची भेटी।१४।
निबिड अंधार काळोख। दीर्घस्वरें मारी हांका ।१५।
ठेंचा पायीं अडखळत। पुढें पायासी लागत ।१६।
बाळ कवळोनी हातें। जनी म्हणे शंख करीत।१७।

३४१. वेष धरोनी ब्राह्मण। तिसी करी संभाषण। १ ।
खेद न करीं मानसीं। काय करणें होणारासी। २ ।
वेगीं संस्कारी याला। दिवसा मागतीं जाकामाला। ३ ।
घेऊनियां प्रेतासी। वेगीं चेतवी अग्नीसी। ४ ।
ज्वाळा अवलोकितां नयनीं। राव आला तत्क्षणीं। ५ ।
म्हणे कोण गे तूं येथें। येरी म्हणे तुमचा सुत। ६ ।
कैचा सुत कैसा काय। आमचा हक्क कोठें आहे। ७ ।
करुणा ग्लानी करी त्याची। म्हणे गोष्ट हे तों कैंची। ८ ।
बरेपणें जाई आतां। दंड बैसतील माथां। ९ ।
घेईं प्रेत ओसंगळी। वेगें प्रवेशे देउळीं। १० ।
आडवें प्रेत झोपीं जाय। ऋषि धांवे लवलाहे। ११ ।
उदर चिरोनियां नखीं। मांस कळलें घाली मुखीं। १२ ।
येऊनियां नगरनारी। जनी म्हणे शंख करी। १३ ।

३४२. धांवा धांवा नगरवासी। लास भक्षिते लेंकुरासी। १ ।
अवघे होऊनियां गोळा। कोणी न जाती देऊळा। २ ।
जाळ करोनी पाहती। शेण धुळी धोंडे माती। ३ ।
मारोनी बाहेर घातली। केली डोंबाचे हवालीं। ४ ।
हिच्या करा शिरच्छेदाला। तंव तो आज्ञापी रायाला। ५ ।
रायें घेऊनियां तिला। आणियेलें ठिकाणाला। ६ ।
म्हणे करीं हो स्मरण। तुझें कुळदैवत कोण। ७ ।
स्वर्ग पुसोनियां धारा। घाव घाली जो शिरा। ८ ।
ऋषि धांवला सत्वरी। वरच्यावरी कर धरी। ९ ।
म्हणे माग मी प्रसन्न। येरी बोले हास्यवदन। १० ।
रोहिदासा ऐसा पुत्र। हरिश्चंद्र राजा भ्रतार। ११ ।

याचक विश्वामित्र ऐसा । जन्मोजन्मीं दे जगदीशा । १२ ।
बापा भली केली सीमा । तप वोपितों मी तुम्हां । १३ ।
गगनीं विमानें दाटती । सुमनभार वरूषती । १४ ।
वेगीं उतरली विमाने । नामयाची जनी म्हणे । १५ ।

३४३. दूत विनविती कर जोडुनी । म्हणती आरूढावें विमानीं । १ ।
ऋषि म्हणे न घडे ऐसें । ह्याची तृप्ती नाहीं आस । २ ।
पटावरोनी काढिला । पटीं बैसवीन ह्याला । ३ ।
थोर वाजत गाजत । विप्र मंत्रघोष करीत । ४ ।
विजयी झाला हरिश्चंद्र । आडवा पावला परिवार । ५ ।
लक्षानुलक्ष आरत्या करिती । नगरनारी वोवाळिती । ६ ।
ऋषि अभिषेकिती रायाला । थोर मनीं आनंदला । ७ ।
राया प्राप्ती जाला पट । गुढी उभवी वसिष्ठ । ८ ।
येथवरी हरिश्चंद्र आख्यान । नामयाची जनी म्हणे । ९ ।

## थालीपाक

३४४. थालीपाक ऐकतां । हरि वारी जन्मव्यथा । १ ।
दुर्योधनाच्या घरासी । आला दुर्वास हो ऋषी । २ ।
सेवें बहुत तोषविला । वर मागू तूं इच्छिला । ३ ।
शिष्यासह रानीं जावें । इच्छाभोजन मागावे । ४ ।
अंतरे शाप द्यावा । आता जातो वर द्यावा । ५ ।
हर हर शब्द थोर केला । झाला वनांत गलबला । ६ ।
नवल सर्वांसी वाटलें । जनी म्हणे ऋषि आले । ७ ।

३४५. मध्यरात्रीं ऋषिसहित । आला दुर्वास वनांत । १ ।
पंडुसुत जागे झाले । ऋषि समस्त वंदिले । २ ।
धर्म भीमाकडे पाहे । सत्वहानि होत आहे । ३ ।

द्रौपदीनें धांवा केला। निजला देव जागा झाला। ४ ।
ऋषि तृप्त केले वनीं । म्हणे नामयाची जनीं। ५ ।

३४६. करचरण प्रक्षाळुनी । उभी ठेली वृंदावनीं। १ ।
जोडोनियां करकमळ । म्हणे धांव रे गोपाळ । २ ।
कृष्णा पाहतोसी काय । सत्वहानि होत आहे । ३ ।
ऋषि स्नानासी कोपिष्ट । गेले सांगोनियां स्पष्ट। ४ ।
दिवसा कर्माचा उगाणा । सर्व सारोनियां जाणा । ५ ।
आतां येतों शीघ्र गती । अन्नें वाढा पात्रावरुतीं। ६ ।
अन्न न देखतां डोळां । भस्म करीन सकळां । ७ ।
गेला घालोनि संकटीं । लाज राखें जगजेठी । ८ ।
कोणी नाही रे निर्वाणीं। म्हणे नामयाची जनी। ९ ।

३४७. ताट विस्तारी रुक्मिणी । देव बैसले भोजनी । १ ।
इतुक्यामध्यें अकस्मात् । ध्वनि उमटली कानांत। २ ।
धांवा ऐकतां श्रवणीं । ताट लोटी चक्रपाणि। ३ ।
उठिला खडबडोनि कैसा। पावे बहिणीचिया क्लेशा। ४ ।
उभी वृंदावनीं बाळा । पुढें देखिला सांवळा। ५ ।
मुगुट कुंडलें मेखळा। वैजयंति वनमाळा। ६ ।
शंख चक्र आयुधें करी। दिसे घवघवीत हरी। ७ ।
झळके पीतांबर कासे । नयनीं कोंदला प्रकाशे । ८ ।
पाहतां आनंदली मनीं । म्हणे नामयाची जनी । ९ ।

३४८. रत्नाचे मंचकीं पहुडे चक्रपाणि । चोळीत रूक्मिणी चरणांबुज। १ ।
कानीं पडियले द्रौपदीचे बोल। उठे धननीळ तांतडीनें । २ ।
म्हणे रुक्मिणी ऐक एक गोष्ट । पडिलें संकटी तान्हें माझें। ३ ।
टाकिला गरुड अनवाणी पाय । जनी म्हणे माय धांविन्नली। ४ ।

३४९. वंदोनी श्रीकृष्ण चरण। हरूषें घाली लोटांगण। १ ।
म्हणे तूंचि माझ्या मना। स्वस्थ करीं गा नारायणा। २ ।
आश्रमासी येतां ऋषी। तोंवरी आयुष्य प्राणासी। ३ ।
ऐकतांचि हांसे देव। न दिसे प्राप्तीचा उपाव। ४ ।
अवकाळीं कैचें अन्न। विचारितां दिसे विघ्न। ५ ।
त्यांचें असो बळ तैसें। कांहीं वोपावें आम्हांस। ६ ।
स्वस्थ नव्हे माझें मन। क्षुधा लागली दारूण। ७ ।
ताटीं विस्तारिला मेवा। तुझा ऐकोनियां धांवा। ८ ।
न जेवितां आलों येथें। बहु झालों क्षुधाक्रांत। ९ ।
सत्वर मेळवीं भोजनीं। म्हणे नामयाची जनी। १०।

३५०. हांसें आलें द्रौपदीसी। बापा वचन परियेसी। १ ।
सर्व अरिष्ट भंजना। तुजलागीं बाहों कोणा। २ ।
एक भाव तुझे पायीं। यावेगळें कांही नाहीं। ३ ।
थाळी माजी पाहतां अन्न। होय क्षुधेचें हरण। ४ ।
थाळी दाखवी देवासी। कैचा विश्वास तुजसी। ५ ।
धांडोळितां कष्टें बहुतें। किंचित शाखापत्र तेथें। ६ ।
निर्मी कैवल्याचा दानी। म्हणे नामयाची जनी। ७ ।

३५१. कर पसरिला भगवंते। घाली द्रौपदी देंठाते। १ ।
म्हणे पावो विश्वंभर। बोले द्रौपदी सुंदर। २ ।
देतां तृप्तीचा ढेकर। धालें त्रैलोक्य अपार। ३ ।
दावी कौतुक श्रीपती। पर्वत अन्नाचे पाहाती। ४ ।
उष्ण घवघवीत कैसी। वाफा उठती आकाशीं। ५ ।
नानापरिचीं दिव्यान्नें। डोळां दाविली नारायणें। ६ ।
चोज सर्वांचिया मनीं। म्हणे नामयाची जनी। ७ ।

३५२. येरीकडे गंगातीरीं। कवतुक दाखवी श्रीहरी। १ ।
धर्मासहित साहीजण। ऋषिलागी देती अन्न। २ ।
रत्नखचित मंडपा आंत। पंगती बैसल्या आनंदभूत। ३ ।
नानापरिचें दिव्य अन्न। वाढी द्रौपदी आपण। ४ ।
मिठी पडली वदनी। म्हणे नामयाची जनी। ५ ।

३५३. म्हणती माथां असतें तोंड। अन्नें भक्षितो उदंड। १ ।
कैंचीं पोटें आमुचीं लहान। गोड धर्माघरचें अन्न। २ ।
उदरें सागराच्या ऐसीं। करूनी यावें धर्मापाशीं। ३ ।
तृप्ति द्रौपदीच्या हातें। नित्य भक्षाया अन्नातें। ४ ।
वदन करवेना तळी। वरूती चंद्राची मंडळी। ५ ।
तंद्री लागलीसे नेत्रा। कोण सांभाळितें धोत्रा। ६ ।
तरी आवडी भोजनीं। म्हणे नामयाची जनी। ७ ।

३५४. ऐशा धाल्या ऋषिपंक्ती। ढेकर आनंदाचे देती। १ ।
तृप्ति बाणली सर्वांसी। तरी आवड अन्नापाशीं। २ ।
उठले हात प्रक्षाळुनी। विडे घेतले सर्वांनीं। ३ ।
न बैसवे सुखासनीं। अवघे प्रवर्तले शयनीं। ४ ।
ते देखोनि निद्रिस्थ। साही जणें झालीं तैसीं। ५ ।
माया निर्मियेली जैसी। आतां गुप्त झालीं तैसीं। ६ ।
कोणा न कळे याची करणी। म्हणे नामयाची जनी। ७ ।

३५५. म्हणे पाचारा भूदेवा। धर्म म्हणे जावें भीमा। १ ।
गंगातिरासी येऊन। नमियेले ऋषिजन। २ ।
त्वरा करा ऋषिजन। पात्रीं विस्तारलें अन्न। ३ ।
म्हणती बापा ऐसें नव्हे। पोट आहे किंवा काय। ४ ।
आतां स्वस्थ प्रसादें। तृप्त झालीं ऋषिवृंदें। ५ ।
कैंचा नष्ट दुर्योधन। आम्हां धाडिलें दुर्जनें। ६ ।

कष्टी करितां अंबऋषी। चक्र लागलें पाठीसी। ७ ।
तेचि गोष्टी झाली आतां। शीघ्र पळावें तत्वता। ८ ।
माझा आशीर्वाद धर्मा। नित्य कल्याणची तुम्हां। ९ ।
ऋषि निघाले तेथुनी। म्हणे नामयाची जनी। १०।

३५६. ऐसा योग घडे ज्यातें। धन्य माता आणि तात। १ ।
अखंड वासना। ब्रह्मार्पण देवार्चना। २ ।
ब्रह्मभावें हो देवा। ऐसा पूजी जो भूदेवा। ३ ।
नम्रता चरणीं। म्हणे जनी सरली मनीं। ४ ।

## पाळणा

३५७. जो जो जो जो रे गोरक्षा। जगदोद्धारा जगदीशा। १ ।
शुद्ध सुमनांची सेज। भक्तिभावें आंत नीज। २ ।
माता उन्मनी केवळ। निर्जी निजले गोपाळ। ३ ।
मागें घालुनी आनंदा। सुखें निजे बा गोविंदा। ४ ।
अद्वय नाम गीतीं गातां। दासी जनी कैंची आतां। ५ ।

## अभंग

३५८. पुण्यवंत पाताळ लोकीं नेला। दरिद्री तो भाग्यवंत केला।
चोरट्याचा बहुमान वाढविला। किर्तिवानाचा अपमान केला। १ ।
धुंद झाला तुझा दरबार। धृ०।
वैरियासीं दिधली मोक्षसिद्धि। कपटिया दिधली महानिधी।
सेवकाच्या ढुंगा न मिळे चिंधी। चाळकासी त्रैलोक्य भावें वंदी। २ ।
पतिव्रता ती वृथा गुंतविली। वेश्या गणिका ती सत्यलोका नेली।
कळी स्वकुळा लावियेली। यादववृंदा ही गोष्ट बरी नाही केली। ३ ।
सत्ववानाचा बहु केला छळ। कीर्तिवानाचें मारियेलें बाळ।
सखा म्हणविसी त्याचें नासी बळ। जनी म्हणे मी जाणें तुझे खेळ। ४ ।

३५९. माझें अचडें बचडें छकुडें गे राधे रूपडें।
पांघरुं घालीती कुंचडें। धृ०।

हरि माझा गे सांवळा। पायीं पैंजण वाजे खुळखुळा।
यानें भुलविल्या गोपिबाळा। १।
हरि माझा गे नेणता। करी त्रिभुवनाचा घोंगता।
जो कां नांदे त्रिभुवनीं। २।
ऐसें देवाजीचे गडी। पेंद्या सुदाम्याची जोडी।
बळिभद्र त्याचा गडी। ३।
जनी म्हणे चक्रपाणि। खेळ खेळतो वृंदावनीं।
लुब्ध झाल्या त्या गौळणी। ४।

३६०. विठोबा मला मूळ धाडा। धांवत येईन दुडदुडां।
चरणीं लोळेन गडबडा। माझा जीव झाला वेडा। १।
कर ठेवूनि कटावरी। उभा राहिला विटेवरी।
मुकुट घातला शिरी। कलगी खोविली वरी। २।
पितांबर नेसूनियां पिंवळा। गळां तुळसीच्या माळा।
किं रूप सुंदर सांवळा। तेज झळके झळाळा। ३।
नामदेवाचें कौतुक। मला सांपडलें माणीक।
विठोबा पाहुनी तुझें मुख। हारपली माझी तहान भूक। ४।
विठोबा तुझी संगत बरी। जैसा चंदन मैलागिरी।
संत चालले पंढरी। निशाण पताक जरतारी। ५।
जसी मोहोळासी लुब्ध मासी। तसी तूं सखी माझी होसी।
सुख दुःख सांगेन तुजपासी। माझा जीव होईल खुषी। ६।
काळी मध्यान रात्र झाली। फेरी विठ्ठलाची आली।
जनी म्हणे चूक पडली। भेट नाही विठ्ठलाची झाली। ७।

३६१. नवल वर्तलें नवल वर्तलें नवल गुरूचे पायीं।
कापुर जळूनि गेला तेथें काजळीं उरली नाहीं। १।

साखर पुरूनी ऊंस काढिला कान झाला डोळा ।
निबर बायको भ्रतार तान्हा सासरा तो भोळा । २ ।
नवल वर्तलें नवल वर्तलें नवल चोजवेना ।
डोहामाजी मासोळीनें वांचविलें जीवना । ३ ।
नवल वर्तलें नवल वर्तलें अनाम चक्रपाणि ।
गोकुळ नेलें चोरूनी तेथें कैंची दासी जनी । ४ ।

३६२. खंडेराया तुज करिते नवसू । मरूं देरे सासू खंडेराया । १ ।
सासू मेल्यावरी तुटेल आसरा । मरूं दे सासरा खंडेराया । २ ।
सासरा मेलिया होईल आनंद । मरूं दे नणंद खंडेराया । ३ ।
नणंद मरतां होईन मोकळी । गळां घालीन झोळी भंडाराची । ४ ।
जनी म्हणे खंडो अवघे मरूं दे । एकटी राहू दे पायापाशीं । ५ ।

## दशावतारवर्णन

३६३. ऐसा हा देवानें थोर पवाडा केला । पूर्व अवतारीं झाला हयग्रीव । १ ।
मग अंबऋषिसाठीं पडियेला संकटीं । मच्छ झाला पोटीं समुद्राच्या । २ ।
होउनी कच्छप पर्वत धरिला । वराहें मारिला दैत्य भार । ३ ।
तयाचा सहोदर मृत्यु नाहीं ऐसा वर । तेव्हां अवतार नारसिंह झाला । ४ ।
अर्धनारी नटेश्वर दुसरा तो वामन । भार्गव तो निधान दाशरथी । ५ ।
होऊनियां कृष्ण कंस वधियेला । आतां बुद्ध झाला सखा माझा । ६ ।
लीला अवतारीं हरि करी खेळ नाना । म्हणे जनी जाणा तैं मी होत्यें । ७ ।

३६४. बघायला गेले क्रियमाण शिडी । घालूनियां उडी तेथें आले । १ ।
पुरवीं या नवसा म्हणवी गा देवा । टोंचियेले जीवा गळ देहीं । २ ।
आठ चारी फेरे फिरविती त्यासी । पाहती नवसासी पुरले नाहीं । ३ ।
दुःख सुख तेथें पाहुनी प्रमाण । करिती समान क्रीयमाण । ४ ।
दुरूनी पाहती दावी जनी दासी । म्हणे नामयासी पहावें स्वामी । ५ ।

३६५. शेष बाणातें पुसत। कोणे काजा आला येथे। १ ।
बाण करी हाहाकार। मुखें पडलीया धूर। २ ।
वृक्ष पाडी हो मक्षिका। तैसें येथें झालें देखा। ३ ।
काय शिखंडीचे बाण। करिती भीष्माचें पतन। ४ ।
तेथें मागितलें पाणी। म्हणे नामयाची जनी। ५ ।

३६६. अहो मांडियला खेळ। बुद्धि रंग बुद्धिबळ । १ ।
कैंचा शह आला । प्याद्या खालीं फरजी मेला। २ ।
शहबाजु झाली। जनी म्हणे मात केली। ३ ।

## भक्तिस्वरूप

३६७. भक्ति ते कठीण इंगळाची खाई । रिघणें त्या डोहीं कठीण असे। १ ।
भक्ति तें कठीण विषग्रास घेणें । उदास पैं होणें जीवें भावें। २ ।
भक्ति ते कठीण भक्ति ते कठीण। सोसी जो तो बाण वार घडे जया। ३ ।
भक्ति ते कठीण विचारुनि पाहे जनी । भक्ति योगें संतसमागमीं सर्व सिद्धी । ४ ।

३६८. कौसल्या नवस। करिताहे माता।
राम, आतां माझ्या। पोटा यावें । १ ।
नवस पुरवी। शेषशायी देवा।
वैकुंठीचा द्यावा। पुत्र मज । २ ।
रामचंद्र ऐसा। पुत्र ज्याल्यावरी।
चढे नभीं गिरी। वैकुंठाची । ३ ।
पुरवी मनोरथ। येऊनी देऊळा।
राहीन मी गळा। आण तुझी । ४ ।
जनी म्हणे आतां। निवतील डोळे।
वैकुंठीचा खेळे। राम माझा । ५ ।

३६९. अहो, यशोदेचे घरीं । लीला दाखवी मुरारी । १ ।
चरणीं नूपुर फणसी वाळे । यशोदाचे घरीं खेळे । २ ।
सरी वाकी मोहनमाळा । देव देखीला हो डोळां । ३ ।
वाकडा कोडा जडित तोडे । कैसें येउनिया रडे । ४ ।
हातीं घेउनिया नवनीत । तो हा यशोदेचा सुत । ५ ।
दृष्ट लागेल गोविंदाला । जनी म्हणे माझ्या बाळा । ६ ।

३७०. कोठें गेला होता । उशीर कां जाला ।
आतां तरी आला । वेळ जाली । १ ।
कोमेजलें कां मुख । काय चिंता मनीं ।
सांगा, चक्रपाणी । मजा आतां । २ ।
कस्तूरीचा टिळा । काशानें पुसला ।
चंदन कां गेलें । होती उटी । ३ ।
वजयंती माळ । कशानें तुटली ।
पदक कां भिजलें । घाम आला । ४ ।
जनीसाठीं । घातियेली उडी ।
येतांना तांतडी । श्रम झाला । ५ ।

३७१. ऐक, देवराया, किती विनवूं मी । करुणेचा देवो उडी घाली । १ ।
भिल्लिणीची बोरें उच्छिष्ट भक्षिली । कृपदृष्टी केली तीजवरी । २ ।
ऐकोनिया तूं, बा, घातियेली उडी । गजेन्द्र तांतडी सोडविली । ३ ।
रुक्मांगद राजा करी एकादशी । नगरी वैकुंठासी नेली देवें । ४ ।
जनी तुज काय केला, रे, अन्याय । पांडुरंगा पाय दावी मातें । ५ ।

३७२. धन्य वंश जयाचा । वारकरी पंढरीचा । १ ।
जन्मोजन्मीचा अंकिला । त्यानी देव ऋणी केला । २ ।
होय पितर उल्हास । यमपुरी नाही त्यास । ३ ।
धन्य तयाची जन्नी । म्हणे नामयाची जनी । ४ ।

३७३. थोराच्या संगती । लाभ झाला पंगती। १ ।
परिस मणी संग । हा ढवळ्याचा पांग। २ ।
कस्तुरी संगती। तिच्या मोला विके माती। ३ ।
जनी म्हणे संता संग । लाभ झाला पांडुरंग। ४ ।

## संत नामदेव महाराज यांच्या कुटुंबातील संतमंडळाचे अभंग

## संत नारायणांचे अभंग

### करुणा

३७४. देवा माझें मीपण ठेवी आपुले चरणी।
घाली माझे मनी रुप तुझें । १ ।
मग मी लोकाचारी असेन वर्तता । राहीन चिंतिता चरण तुझे । २ ।
चंदनाची वृत्ति वेधले तरुवर। सबाह्य अभ्यंतर काय झाले। ३ ।
सरिता सिंधुसी मिळोनि हरपली। सागरची झाली एकसरें। ४ ।
लवण जळाचे प्रवृत्ति जसे । ऐक्यभावें न दिसे वेगळे कार्ही । ५ ।
नारा म्हणे शरण आलो केशीराजा । ऐसा भाव माझा करी गां वेगी। ६ ।

३७५. तुज मी अनन्य शरण । सर्व पांडुरंगा जाण। १ ।
माता बाळा कोपे रागें । द्यावे आहाराते मागे । २ ।
जाय कडीयेसी नेघे। परी तिच्या अंगसंगे। ३ ।
झणे खेटी परतें लोटी। परी सदा पायी घाली मिठी। ४ ।
नारा म्हणे नामयाचा। बापा सांभाळावी वाचा। ५ ।

३७६. तुज भांडवल मोक्ष एक गांठी । तो केला पावन तुझ्या नामें। १ ।
आतां गौप्य काय आहे तुझ्यापाशी। जें तूं मज देशी पांडुरंगा। २ ।
चतुर्विध मुक्ती दृष्टि वोळंगती । ध्यातां तुझे चित्ती चरणकमळ। ३ ।
आणिका ऋद्धि सिद्धि दाखविसी आस । या दासीचा अभिलाष कोण करी। ४ ।

भूतळीचें वैभव निजकर्मभोग। तें तुज उद्वेग करणें बहू। ५ ।
नारा म्हणे नामयाने सांगितले बीज । तेंचि मजसी गुज बोल कांहीं। ६ ।

३७७. तुझे चरणी चित्त रंगले अनुरागें । बहू जन्म वियोगें शिणलो होतों। १ ।
उठवितां येथुनी मुरकुंडी घाली। कृपेची साउली देखुनी तुझी। २ ।
आहाळले पोळले तापत्रई विराले । तृष्णा विभांडीले नानापरी। ३ ।
कामक्रोध मदमत्सरु अहंकार। देह निरंतर जाजावलें। ४ ।
बुडतीया जरी अवचितां सांगडी । तें जीवें न सोडी तैसें झालें । ५ ।
विनवी नामयाचा विष्णुदास नारा। वंशपरंपरा दास तुझा । ६ ।

३७८. माझ्या विठोबाचे श्रीमुख साजिरें। झळकती कुंडले मनोहर । १ ।
मना तें तू आठवी आसनी शयनी । भोगिसी उन्मनीं सहज सुख। २ ।
गगनी असो पैं न येतो मार्तंड । तैसे तूं अखंड करी ध्यान। ३ ।
कमलकळिके जैसा भ्रमर आसक्त। तैसा तूं निश्चित राहें चरणी। ४ ।
जैसा कां समंधु जीवन जळचरें। येणेचि निर्धारि दृढ धरी। ५ ।
नारा म्हणे माझ्या बापाचे साधन। सांपडली खूण अंतरीची । ६ ।

३७९. तापत्रय तापलें देहे असे पीडिलें । वासना विभांडले मन माझें। १ ।
विठोबावेगळें न देखें मी सुख। पाहेन तुझें मुख एकवेळ। २ ।
सुखाची साउली पाहीन दृष्टीभरी । जाईन महाद्वारीं लोटांगणी । ३ ।
हरला शीणभाग जन्मजन्मांतरीचा । नारा नामयाचा शरणांगत। ४ ।

३८०. पुंडलिकाद्वारी होतसे वेव्हार। नामयाची पोरे भांडताती । १ ।
येऊनियां चौघे उभे ठेले सत्वर। बोलताती पोरें नामयाची । २ ।
आमुचा अंकी लागताती पुराणी। नामयाचे ऋणीं बांधलासी । ३ ।
नामयाचा नारा बैसलासे दारी । विठोबावरी आळ आला । ४ ।

३८१. कैंचे आम्हां जाति कुळ । कैचें आम्ही धर्मशीळ । १ ।
तुझ्या नामीं अनुसरलों । तिही लोकीं सरते झालो । २ ।
नारा विनवी विष्णुदास । आमुचे वंशी हा विश्वास । ३ ।

३८२. आम्हा व्रत एकादशी । देव केशव तीर्थ तुळसी । १ ।
अणिक नेणों बा साधन । आमचा विषय हरिकीर्तन । २ ।
संतसंगती निरंतर । प्रेमधन हें भांडार । ३ ।
विनवी विष्णुदास नारा । आमुची ऐसी हे परंपरा । ४ ।

३८३. कोटी यज्ञांची ही फळे । त्याहुनी हरिनाम आगळे । १ ।
तें फळ वेगळें सांगावया । नाही उपमा द्यावया । २ ।
महापातकांचिया राशी । नामें पावती मोक्षासी । ३ ।
दोन अक्षरांसाठी । गणिका घातली वैकुंठीं । ४ ।
हरिनामाचा संग्रह करा । म्हणे विष्णुदास नारा । ५ ।

३८४. काळा अलोट अभंग । हरीचे दास अंतरंग । १ ।
हाकारिती वेळोवेळां । कृष्णा गोविंदा गोपाळा । २ ।
कंठी तुळसीच्या माळा । नेत्री अश्रुंचिया किळा । ३ ।
गुढिया झळकती रोमांकुरी । कंप न धरेचि शरीरीं । ४ ।
आंतु बाहेरी निरंतरी । मागा पुढां अवघा हरी । ५ ।
संतचरणींचा रज:करण । नारा नामयाचा प्राण । ६ ।

३८५. सुख दु:खा भेटों गेंलें । चित्त चैतन्या मिळालें । १ ।
आला अनुभव नामाचा । ठेवा लाधला प्रेमाचा । २ ।
जन्ममरणाची काळजी । तुटोनी गेली तये वेळी । ३ ।
सरले संकल्प विकल्प । हृदयी देखिलें विठ्ठलरुप । ४ ।
शून्य जाले भावाभाव । अवघा आतुडला केशव । ५ ।
नारा म्हणे नामयाचा । मज विश्वास नामाचा । ६ ।

## संत विठ्ठलांचे अभंग

### निजठेवाप्राप्तीविषयीं विठ्ठलांचे धरणे

३८६. साधुसंतजना करितो प्रार्थना। भेटवा देवराणा द्वारकेचा। १।
तनमन प्राण वेधले त्याचे पायी। येऊनिया राही हृदयकमळी। २।
गोपाळांचे मेळी खेळे वनमाळी। यमुने पांबळी वेणु वाहे। ३।
शंख चक्र करी मोरपिच्छ शिरी। कानी मकराकारी मुक्ताफळे। ४।
गळां वनमाळा कांसे सोनसळा। देखुनि व्रजबाळा तन्मय झाल्या। ५।
नंदाचे नंदनें मोहरिले मन। लागलेंसे ध्यान गोविंदाचे। ६।
विठा नामयाचा चरणीचा रज। भेटवा यादवराज द्वारकेचा। ७।

३८७. हरिनामाचा ध्वनि ऐकोनी श्रवणी। जाईन लोटांगणी तेथवरी। १।
माझे सखे अवघे वैष्णवजन। त्यांचे मज दर्शन कैं होईल। २।
एक उभे गाती एक बैसुनी ऐकती। हृदयी आलिंगिती गोपिनाथु। ३।
ऐशियांचे संगती आहे बाप माझा। विनवतो विठा सहजा नामयाचा। ४।

३८८. मग साधुसंत म्हणती विठ्या जाय। मग तूं याचे पाय सोडूं नको। १।
अठ्ठाविस युगे एकाचे धरणे। तेथे हे मागणे दुसरे कोठे। २।
एकाची मागणी मागें पै होईल। मग तुजसी येईल बोलतां दुःख। ३।
म्हणोनी पंढरिनाथु खुणची दावीतुं। नामयाचा विठा पुसतु वेव्हारी धीटु। ४।

३८९. विठानामाचा आला पंढरपूरा। भेटला सोयरा विटेवरी। १।
सुखदुःख अवघे सांगितले श्रीहरी। धरणे तुझे द्वारी घेईन देवा। २।
नामयासारिखा आणिक कोणी आहे। सृष्टीमाजी पाहे विचारुनी। ३।
नामा माझा सखा जिवाचा तो जिव। त्याचा आहे भाव माझे ठायी। ४।
मजवाचुनि नामा दुजें नेणे काही। मी त्याचे हृदयी सदा असें। ५।
नामयाने नाम जोडिले निधान। ठेविले सर्व धन तुझ्या पायी। ६।
समर्थासी काही बोलूं नये आतां। ठेवणे कृपानाथा देई वेगी। ७।

चहू युगी नामा सांगातेचि आहे। वेगळा काही नोहे क्षणभरी । ८ ।
माझिया बापाची तुजजवळ ठेवी। विठा म्हणे द्यावी केशीराजा । ९ ।

३९०. पूर्वजन्मी आराधितां । तुझे वर्म आले आमुच्या हातां ।
नामदेवें सांगितले जाता । ते सर्वथा देईजे । १ ।
आमुचे वडिली गा जोडिले । तें तुझे पायी गा ठेविले ।
गौप्य करितां नोव्हे गा भले । दे उगले गा दातारा । २ ।
आमुचे आम्हासी गा देतां । कां बा नये तुझ्या चित्ता।
गार्‍हाणे देईन संता । चौघा देखतां घेईन । ३ ।
तुझा दारवंटा राखेन हरी। तुज रिघों नेदी बाहेरी।
जरी मोकलिसी अधांतरी । तरी हे लाज कवणातें। ४ ।
आणिक काहीं न मागें तूं ते । सेवा वृत्ती द्यावी मातें ।
मज निरवावें संताते। आपुला दास म्हणोन । ५ ।
नामयाचा विठा म्हणे । यांत काही करिसी उणे ।
तरी आमुच्या वडिलांचे निरुपणें। बांधलासी गा विठ्ठला । ६ ।

३९१. आमुचा नामा तुज गेला निरवुनी। मी तुजवांचोनी नेणों कवण । १ ।
कायावाचामनें जोडिले जें बापें । ते दिधलें तुज पै ठेवावया। २ ।
तें देगा आमुचे नको करुं विचारू । नामा तुझा डिंगरू त्याचे आम्ही। ३ ।
जुने नाणें आमुच्या वडिलांचे ठेवणे । बहूता कष्टी तेणे जोडियेलें। ४ ।
ते आम्हालागोनी ठेविले तुझ्या पायी। आमुचे आम्हा देई केशीराजा। ५ ।
तूं अनाथा कोंवसा दीनाचा कृपाळू । तरी आमूचा सांभाळू करी कां वेगे। ६ ।
आमुचे संचितार्थ आम्हासी देउनी । यश घे त्रिभुवनी म्हणे विठा। ७ ।

३९२. आमुचें ठेवणें जुगादीचें नाणें। जातां नामयानें सांगितलें । १ ।
इतके दिवस पाहिली तुझी वाट। परि तूं उदास न बोलसी। २ ।
तुजवांचोनी आम्हां कोण असे पोषिता। देईं कृपावंता नामप्रेम। ३ ।

आम्ही तुझीं सेवकें रंकाहुनी रंक। कठीण बोलणें निकें वदें तुज । ४ ।
म्हणोनि वेळोवेळां लागे तुझ्या पायीं। लटकीच गोवाई करूं नको। ५ ।
तुज आम्हासी वेगळीक नाही । तरी तूं न धरी कांहीं दुजाभाव। ६ ।
आपुलें म्हणावें अंधारीं ओळखावें। नामप्रेम द्यावें म्हणे विठा। ७ ।

३९३. आमुचा बाप अत्मज तुझा। तूं बा आम्हां होसी आजा। १ ।
कैसें आम्हां धरिलें दुरी। सांग कृपाळूवा हरी । २ ।
तूं आमुचा मूळपुरूष। आम्ही अवघे तुझे अंश। ३ ।
आम्ही तुझी तिसरी पिढी। संत जाणताती प्रौढी। ४ ।
अरे कायशीं शतें लोटलीं। कैशी लाघावळी तुटली। ५ ।
हांसोनि बोले केशीराज। विठ्या अवघें घेईं मज । ६ ।

३९४. माझिया बापाचा तुजपाशीं ठेवा। विठा म्हणे द्यावा केशीराजा। १ ।
ठेविलें ठेवणें झाडकरी देईं । वेव्हार कांहीं लावूं नको । २ ।
आपुलें मागतां कोण आड येईल। आतां जाणवेल तुझे माझे। ३ ।
विटेसहित चरणीं घालीन मिठी। करीन संवसाटी जन्मोजन्मीं। ४ ।
विठा म्हणे मज खवळिसी वांयां। पिसाळलिया पायां झोंबेन तरी। ५ ।

३९५. मायबापें काय नसती आमुचीं। लेंकरें आमचीं त्याचे हातीं । १ ।
माझें देईं माझ्या हातीं लवलाही। होईं उतराई केशीराजा । २ ।
तुझ्या पायीं माझा बांधीन गळा। न भियें कळिकाळा सत्य जाण। ३ ।
जितुकें देणें तितुकें घेईन मी आतां। नामयानें जातां सांगितलें। ४ ।
रगटया पाटोळ्यासी पडियेली मिठी। आतां जगजेठी तुज मज। ५ ।
बोरी काटे काही केळी फाटे। नामयाचे विठे खवळलें। ६ ।

३९६. खवळलों आतां न भियें रे तुज। सांडियेली लाज लौकिकाची। १ ।
आम्हीं दीन सिंपे यातीचें हो हीन। दे माझें ठेवणें केशीराजा। २ ।
साठी लक्ष चौऱ्याण्णव कोडी। त्यांतून एक कवडी न सोडीं मी। ३ ।

आणिक याहुनी असेल आगळें। ते घेईन बळें न सोडीं तुज। ४ ।
तुज थोरपण काईगा हें देवा । आम्हां दुर्बळाचा ठेवा अभिलाषसी। ५ ।
पोरटीं म्हणोनि अभिलाष करिसी। ते कोठें निस्तरिसी म्हणे विठा। ६ ।

३९७. तुज काय देवा न पुरतें आलें। विश्वासें ठेविलें अभिलाषसी। १ ।
लाजिरवाणें नको करूं देवा आतां। देईं गा कृपावंता नामप्रेम। २ ।
शरणागता वज्रपंजर म्हणवीसी। तरी कां तूं न देसी आम्हां आमुचें। ३ ।
माझ्या नामयानें जन्मोनि जोडिलें। तें दे गा वहिलें म्हणे विठा। ४ ।

३९८. उदार चक्रवर्ती लक्ष्मीचा पती। तरी कां काकुळती चित्तीं वाहासी। १ ।
आम्हां दुर्बळाचें ठेवणें कां ठेविलें। दिवाळें निघालें काय तुझें। २ ।
ज्याचें घेसी त्याचें ऐसेंचि करिसी। तें न चले मजपाशीं केशीराजा। ३ ।
चौघाचारीं तुज वेढीन आतां। मग बैसेल माथां अपकीर्ति। ४ ।
अठराही बोलती साही सत्य वाचा। उदार ठायींचा कां न होसी। ५ ।
देणें घेणें तुज न सुटे सर्वथा। विचारूनि आतां पाहें मनीं। ६ ।
नामयाचें ठेवणें तुजजवळीं आहे। न सोडीं तुझे पाय म्हणे विठा। ७ ।

३९९. माझिया बापाची मिराशी गा देवा। तुझी चरणसेवा पांडुरंगा। १ ।
उपास पारणें राखें दारवंटा। केला भोगवटा आम्हांलागीं। २ ।
तुजपरतें दुजें नेणें अणिक कांहीं। देखें सर्वांठायीं रूप तुझें। ३ ।
तुझ्या सुखें धाला तुजमाजी निवाला। आपुला विसरला देहभाव। ४ ।
आम्हांसी घातलें तुझिये आभारीं। विठा अंगिकारीं नारायणा। ५ ।

४००. हाट करी आम्ही आठवडे मुळींचे। पंढरपुरीचे वारकरी। १ ।
खेप ठिकाणाची वस्तु सवंगाची। सवाई निढळाची उणी नव्हे। २ ।
चोहाटा चौकाचा दुकान नाक्याचा। जागा मिराशीचा पुरातन। ३ ।
हरिनाम घेणें नित्य हमेशाही। तेव्हां तोटा नाहीं कोणें काळीं। ४ ।
विठा म्हणे वजन केली वैकुंठीची। गुणी निर्गुणींची कडासन। ५ ।

४०१. माझिया बापासी तुझाचि विश्वास । म्हणवी तुझा दास अंतरंग । १ ।
वृत्तिसहित मन ठेवुनी तुझ्यापायीं । तुजपरतें कांहीं जाणेचिना । २ ।
तों आम्हांलागी शब्दें न पुससी । विसरोनी गेलासी दीनानाथा। ३ ।
जागे ठाणांतरी पंढरी चोहोटा। राखे दारवंटा रात्रंदिवस। ४ ।
छत्रचवरे धरूं हाडपीं डोळे करूं । जाणवी आवसरु सेवा विधी। ५ ।
शरीर प्राणाचा देऊनियां बळी । धरिले हृदयकमळीं चरण तुझे। ६ ।
विठा म्हणे तुज नाहीं आठवण। सहज तूं निर्गुण पंढरीराया । ७ ।

४०२. भूतळीचीं तीर्थे नामा जंव करी। गांजीयलें पोरी नामयाच्या। १ ।
तुमचें ठेवणें केशवाचे पायीं। आणिकाचे वाहीं पडों नका। २ ।
वांयां मृगजळ दाविसील आम्हां । सर्वथा पुरूषोत्तमा न सोडीं मी। ३ ।
झोंडाचें ठेवणें ठेवावें कवणें । झोंडापरिस होणें झोंड जेंणें। ४ ।
नामयाचा विठा झोंड पैं झाला। विठो उभा केला भक्तिसुखें। ५ ।

४०३. माझा ठेवा दाखवीं लवलाही। बांधीन मी पायीं जीव तूझ्या। १ ।
सिद्धच ठेवणें नामयानें ठेविलें। त्यासी कां लाविलें आडवे हे। २ ।
दोही कटावरी ठेऊनियां हात। कैसा हा पाहात घर घेणें। ३ ।
तुझिया पायी बांधीन मी गळा । न भीयें कळिकाळा सत्य जाण। ४ ।
दारकोंड करोनि बैसेने दारवंटा। नामयाचा विठा हालों नेदी। ५ ।

४०४. पंढरीराया माझिया बापें । प्रसन्न केलें तुजप्रतापें। १ ।
आम्हां दिलें तुझे हातीं । पाळीं म्हणे प्रेम भक्ती। २ ।
तृप्ती सहित माझिया मना। क्षेम घालीन तुझिया चरणा। ३ ।
तुझें गुणनाम किर्तन । हे मज देईं गा जीवदान। ४ ।
देऊनियां प्रेमाचें भातुकें। खेळविसी त्या कौतुकें। ५ ।
विठा म्हणे नामयाचा। प्रसाद तुझीये कृपेचा। ६ ।

४०५. तुझ्या प्रेमाचे कारणें । म्हणे म्या घेतलें धरणें। १ ।
विठोबा देगा झडकरी । मी तर न सोडीं निर्धारीं । २ ।
शीर फोडीन कर्वती। नये तुज काकुळती । ३ ।
देह घालीन गोरांजनीं। मोकलिसी मजलागोनी। ४ ।
तुझे द्वारीं देईन प्राण । तरी तूं पाहासी निर्वाण। ५ ।
विठा म्हणे पंढरिराया । आम्हां शिणवूं नको वाया। ६ ।

४०६. तुजसारिखा पंढरिनाथा । स्वामी शिरावरी असतां । १ ।
तरी मी आणिकांचा मागता। लाज कोणासी समर्था । २ ।
असोनी क्षीरसिंधू जवळी । क्षुधाक्रांत तळमळी । ३ ।
कामधेनु तें वोळगतां। न पुरे कामना सर्वथा । ४ ।
विठा म्हणे नारायणा। आतां शरण जाऊं कोणा। ५ ।

४०७. जननी बाळका कोपे रागें। परि ते आहार तिजची मागे। १ ।
तैसा तुजची शरण। पंढरिराया निरूता जाण । २ ।
खेटी म्हणोनि परतें लोटी। परि ते चरणीं घाली मिठी। ३ ।
टाकोनी जाय कडीये नेघे । परि तें धांवे तियेचि मागें। ४ ।
विठा म्हणे पंढरिनाथा। आम्हां नुपेक्षीं सर्वथा । ५ ।

४०८. हिंडतां श्रमलों बहु श्रम झाला। अझुनि माझी तुला करूणा न ये। १ ।
मज काय देतां होईल तुझें उणें। किती होसी कृपण पांडुरंगा। २ ।
येउनी धरणें बैसलों महाद्वारीं । झालों पैं भिकारी पंढरीचा। ३ ।
विठा म्हणे देवा माझें मज देया । लौकिक कां वायां करितोसी। ४ ।

४०९. जननी बाळकांचें जीवन। तरी तें नेणे भूकतहान। १ ।
तरी ते कशानें वांचती। विचारावें कमळापती । २ ।
वत्सालागी धेनु तान्हीं। लागूं नेदी आपुल्या स्तनीं। ३ ।
कूर्मी आपुलिया बाळा । न अवलोकीं वेळोवेळां । ४ ।
विठा म्हणे जगज्जीवना । आतां नुपेक्षावें दीना। ५ ।

४१०. आमुचा बाप आम्हां सांगे। भाक दिधली पांडुरंगें। १।
तुम्हां न विसंबे सर्वथा। तुमचा भार माझ्या माथां। २।
करीन तळहात साउली। तुमची अवघी वंशावळी। ३।
विठा म्हणे विसरलासी। आम्हां शब्दीं न पुससी। ४।

४११. पितृभजन जरी पुंडलिक न करिता। तरी कां हा झोंड येता पंढरीसी। १।
वेव्हार करितां आम्हासी जिंकिलें। जन्ममरण केलें देशधडी। २।
विठा म्हणे यानें बुडविले अपार। पुढती हा चोर कबुल नाहीं। ३।

४१२. माझे बापाचे धने बडिवार बोलसी। ते तूं घेवोनि आलासी उजागरपणें। १।
उगलाची देईं लावूं नको दावा। केशवा ठावा आहे तुझा जीवभाव। २।
सरता आमुचेनि झालासी। तें तूं आणिका सांगसी कोण्या तोंडें। ३।
सांगतां बहुत होईल पैं व्याजें। मग सोई मज तुज लाविती कां। ४।
ते म्हणती ऋणबोडा हा ठायींचा। अहो यासी बोलावाचा बुद्धिवंता। ५।
तूं नामयाच्या विठ्या धीर आणि चतुर। तुजसी खेचर काय बोलिला। ६।

४१३. उदमाचा करून झाडा। कर्म कदबा अवघा फाडा। १।
मग येणें जाणें नाहीं। पुढें वेव्हार न लगे कांहीं। २।
व्याज मुद्दल देऊन उजू। तिहीं लोकीं व्हावें रूजू। ३।
केशव म्हणे लिगाड तोडा। सुखसागर विठ्ठल जोडा। ४।

४१४. निज आत्मज्ञान डोहीं। जे बुडोन गेले पाहीं। १।
तनु त्याग होतां त्यांची। मग सगुणा भेटी कैची। २।
अहंभाव वांटून प्याले। ते जिवंतचि मुक्त झाले। ३।
केशव म्हणे डोळां। ते पहावे वेळोवेळां। ४।

४१५. तुझे पाय माझिया गळ्यासी। करीन एक मग देसी उगलाची। १।
आपुलें मागतां झणें धिक्कारिसी। चोरासी सांगसी निजगुज। २।

ांपडलीया लाथ बुक्की साहावी । जीवीं धूर धरावी विठो ऐसी । ३ ।
मग होणार ते हो या शरीरा । सांपडलीया धरा जीवें भावें । ४ ।
धुरेसी झगडा करावा सैरा । या रांडपोरां खवळासी काय । ५ ।
केशव म्हणे विठा झुंजार तूं भला । खेचरु दाखविला ठेवा तुझ्या बापाचा । ६ ।

८१६. खेचरापासी जाय पुससी मागसी तें आहे । येरा आणिका काय उमगेना । १ ।
जाय जाय वेगीं लवलाहे पाहें । खेचराचे पाय सोडूं नको । २ ।
तो सांगेल तें उगलेंच घेई । आणिकाचे बाहीं पडूं नको । ३ ।
केशव म्हणे नामयाच्या विठ्या भक्तराया । आलिंगुनी चहूं बाह्या दिधलें क्षेम । ४ ।

८१७. तंव धांउनी गेला चरणीं लागला । देवा तूं दाखविला ठेवा माझ्या मायबापाचा । १ ।
ताऊन तो धरीन न सोडीं मी आतां । जे मज पंढरीनाथा ग्वाही दिधली । २ ।
तंव खेचरू तेथें स्नानसंध्या करी । तंव ओढोनी पाय धरी विठा नामयाचा । ३ ।
तंव तो अवचिता खडबडोनी भ्याला । कोठोनी घाला पडिला धाडी मजवरी । ४ ।
उठी परता तूं कोणाचा रे काय । ठांई ठांई राहें हालूं नको । ५ ।
तुझिया वडिलासी जाब देईन । धरोनी नेईन हें पोर कोणाचें । ६ ।
गाडिकें लडिवाळ आपुलें बा धांवे पायीं । तुज कोणी नाहीं मग तूं निलाजिरे । ७ ।
छंद ना बंद झोंबतोसी धीटा । बांधेन चोहटा चौघाचारी । ८ ।
फजीत करतील तुज किं मज जाण ।
खेचर विसोबा म्हणती जा तुज विठोबाची आण । ९ ।

८१८. केशवाचे पाय जाणें मी आणिक कांहीं नेणें ।
म्हणोनि जीवेंप्राणें अनुसरलो । १ ।
पाय ते अतू पाय ते अतू । पाय ते अतू खेचराचे । २ ।
पायांपरतें सुख आणिक नाहीं । विटेवरी पाय ध्येई मज । ३ ।
म्हणेनी पूढतां पुढतीं विठा लागे पायीं । म्हणे खेचर आई विनंति ऐका । ४ ।

४१९. चराचरीं जाणा एक खेचरू। त्याचीं पाउलें साचारू धरिलीं आम्हीं। १ ।
आतां पाउलें न सोडूं। पाउलें न सोडूं वेव्हारू विठा। २ ।
या पाउलाकारणें व्यवहारू झाला। खेचर वदला विठ्ठल साक्ष। ३ ।
तेंचि पाउलें साधुसंत आम्हा । विठा म्हणे परब्रह्मा पावन केलें। ४ ।

४२०. तंव खेचरू ऐसी शिकवण बोली। कैसी खूण लाधली सांग विठ्या। १ ।
जयाचा तुज जाहला बहूत। तो झाला शरणागत विठोबासी। २ ।
वेद पुराणें शास्त्रे ते साक्ष देती। जे खेचर म्हणती ब्रह्मबीज। ३ ।
भारत आणि भागवत जया मुखें पाठ। संध्यागायत्री निष्ठा त्रिकाळ जप। ४ ।
जें केशवासी न कळे अखंड दंडे। ऐशीं बोलणीं उदंडें बोलोनी जाती। ५ ।
जाती आणि गोत वडील लहान थोर। अवघें पंढरपूर साक्ष देती। ६ ।
साधुसंतजन आणि महानुभाव। हरीचे दास सर्व सांगताती। ७ ।
जें खेचर विसोबा ज्ञानधन लाधला। ठेवा तो दिधला नामयासी। ८ ।

४२१. सुखाचा निज ठेवा तुमचा केशवा। भाग्यें नामदेवा जोडलासी। १ ।
तेणें तुझी सेवा केली मनोभावें। म्हणोनियां देवें घेतली धांव। २ ।
उदंड हें निधान निक्षेपें ठेविलें। थोडें बहूत दिधलें भाग्यवंता। ३ ।
अभिलाषी वस्तु तुझे पायीं ठेविलीं। ते आज्ञा उगवली म्हणे विठा। ४ ।

४२२. माझा बाप माय विठोबा रखुमाई। वडील बंधु भाई पुंडलिक। १ ।
साधुसंत जन सोईरे हे जाण। वंदीन चरण भावें त्यांचे। २ ।
निजाचे सोईरे कां गा नोळखासी। भ्रमें भुललासी मायाजाळीं। ३ ।
पाळिलों पोसिलों जन्मोनी जयाचा। उतराई त्याचा कांई होऊं। ४ ।
पाहेपा परतोनी मुळीचा तूं कोण। सद्गुरूशी शरण रिघे वेगीं। ५ ।
सद्गुरू दयाळें लेवविलें अंजन। मज जनार्दन अवघा भासे। ६ ।
विठा म्हणे तारीं आपुल्या शरणागता। अनाथाच्या नाथा पांडुरंगा। ७ ।

## करुणापर मागणें

४२३. न लगे आयुष्य भविष्य संपत्ति। नाम लक्ष्मीपति द्यावें मज। १।
तेणें तिहीं लोकीं होईन सरता। आणिक कृपावंता न मागे कांहीं। २।
नामयाचें प्रेम मज देई देवा। न घालावें खेवा संसारासी। ३।
वडिलाचें ठेवणें तुवा अभिलाषिलें। ते देईं वहिलें पांडुरंगा। ४।
संसारतारका भक्तजन पाळका। यादवकुळटिळका केशवराया। ५।
भवमूल छेदका गोपीमनरंजका। होसी बंधुसखा यादवकुळां। ६।
विठ्याचा तूं स्वामी भक्तिप्रेम सुख। यदुवंशटिळक यादवराया। ७।

४२४. तुजविण जिवलग सोईरे। मज तों नाहींबा दुसरे। १।
विठों धांवें दवडादवडी। भक्त आपुला सोडवीं। २।
बहुत गांजिलों संसारीं। जोजावलों मदमत्सरीं। ३।
विषयसर्पे डंखियला। लोभदंभें भक्षियला। ४।
कामक्रोधाचीये धाडी। पडिलोंसे बांदवडी। ५।
विठा म्हणे राखें लाज। होसी आमुचा पूर्वज। ६।

४२५. बोलुं रे वेदांतीं बोलुं रे सिद्धांतीं। बोलूं नेती नेती अनिर्वाच्य। १।
बोल बोल रे तूं मना। बोल नारायणा समर्पिला। २।
माझा बाप बोल बोलुनियां गेला। केशव बांधिला बोल बोलें। ३।
नामयाचा विठा बोल नाही विसरला। केशव उभा केला भक्तिसुखें। ४।

४२६. बोल तो सधरू बोले तो उदारू। बोल राज्यधरू धीर धर्म। १।
बोल तो न कळे बोल तो न कळे। बोल तो न कळे जाणतेया। २।
बोलाच्या आधारें बोलाच्या विचारें। बोले सर्व सार जिणोनियां। ३।
बोले जें अव्यक्त स्वरूप विचारू। ब्रह्म बोल सारू विठा म्हणे। ४।

४२७. तूंचि येसी तूंचि जासी। तूंचि भोगिसी गर्भवास। १ ।
नेणों आम्ही आणिक बापा। तुम्ही याची कृपा चिरंजीव। २ ।
पापपुण्य दोन्ही तूंचि भोगिसी। आमुचा नेदिसी भक्तिवांटा। ३ ।
नामयाचा विठा म्हणे केशवराजा। मी दाईज तुझा वांटेकरी। ४ ।

४२८. पायीं घातलां तोडरु । देखूनि पळाला संसारू। १ ।
आले हरीदास नेटके । भेणें पळालीं पातकें। २ ।
गळां घालुनि तुळसी माळ । वीर करिती कोल्हाळ। ३ ।
हांकारिती सहस्र नामें । रंगीं नाचताती प्रेमें । ४ ।
पताका झळकती अंबरीं। वैष्णव नाचती गजरीं । ५ ।
विठा केशवाचा नटू । बोले कळिकाळासि धटू। ६ ।

४२९. मी तुझा पोसणा अगा नारायणा। झणीं केविलवाणा दिसों देसी। १ ।
तुझा म्हणवितां आणिका शरण जातां । लाज माझ्या चित्ता वाटे थोर। २ ।
रावाचा सेवक रंकाचिये द्वारी। फिरतां घरोघरीं लाज कोणा। ३ ।
विठा म्हणे देवा मी तुझा शरण। मागतसें दान नाम तुझें। ४ ।

४३०. जावोनी वेव्हार सांगेन पंढरी। जेथें पुंडलिक द्वारीं उभा केला। १ ।
देवोनी जाय कां घेवोनी जाय। आतां न सोडीं पाय केशवाचे। २ ।
एक अंगेसी एक जांगेसी । तरी जावें हृषिकेशी न सोडीं तुज। ३ ।
वेव्हारा सन्निधी पुंडलिक लोभा। विठा महणे उभा तेणें केला। ४ ।

४३१. उभया धरणें आपण बैसला। म्हणोनि भला भला वेव्हारू हा। १ ।
आमुच्या वेव्हारीं साक्ष हा एकू। पुंडलिकें लोकु उद्धरिला। २ ।
नाहीं तरी वेव्हारू अवघाचि खोटा। पुंडलिकाचे चोहटा उभा असे। ३ ।
ऐसें सात पांच वेव्हारीं बुडविले येणें। विठा म्हणे धरणें जीवीं पाय तुझे। ४ ।

:३२. मी तुझा अंकिला अगा पंढरिनाथा। ब्रीद आपुलें आतां साच करीं। १ ।
ातितपावन ऐसें बोलती पुराणें। तारियले हीन अनंत याती। २ ।
हणोनि ब्रीदाचा तोडर तुझ्या पायीं। गर्जताती घाई वेदश्रुती। ३ ।
ोठा म्हणे मज देईं चरणसेवा। आणिक केशवा न मागें कांहीं। ४ ।

:३३. तीर्थ तपें व्रतें देवातें जोडिलें। तें नामदेवासी दिधलें प्रेमसुख। १ ।
क्यसुख परब्रह्म साधिलें। यश जें जोडिलें त्रिभुवनींचें। २ ।
ान्य तुझें नाम धन्य तुझें नाम। धन्य देवा प्रेम तुझें पायीं। ३ ।
ामा गोतामाजी पायाळु जन्मला। देव भावें आला भूमंडळीं। ४ ।
ग्रर्गींचें ठेवणें उमगिलें तेणें। केशवनाम नाणें अगणित। ५ ।
त्रीं लेईला भक्तीचें अंजन। उमगिलें निधान नामनाणें। ६ ।
ोठा म्हणे देवा तें प्रेम पायीं। न मागतां देईं केशिराजा। ७ ।

३४. दासी देवा अनुसरावे। कां आणिका शरण जावें। १ ।
ाभालाभ जेथीचा तेथे। श्रम अन्यथा तो व्यर्थ। २ ।
ण्योदक भागीरथी। नेदी चातकासी तृप्ती। ३ ।
वित स्तवितां चकोरा। काय वर्षे अमृतधारा। ४ ।
ासवीविण कोण बाळा। पाळी निज दृष्टी स्नेहाळा। ५ ।
ग्रामीचिया मनोभावा। करणें ते परम सेवा। ६ ।
ास विठा म्हणे मीन। कैसा वाचे उदकेविण। ७ ।

३५. घेतां देतां तू तिही लोकी उदार। माझा कां अव्हेर केला बापा। १ ।
झी सेवा देईं तुझी सेवा देईं। तुझी सेवा देईं श्रीविठ्ठला। २ ।
ठा म्हणे केशवा नको हा संसार। तुझे चरणी अभ्यंतर ध्यान देईं। ३ ।

३६. विश्वंभरा तुझे नाम गा दुर्लभ। परी केले सुलभ नामदेवें। १ ।
माची सांगडी लावूनिया कांसे। नामदेवें कैसे उतरिलें। २ ।

नाम मज देईं आणिक न मागों काईं । प्रेम तुझे पायी असों द्यावे । ३ ।
पतितपावना देवकीनंदना । हरि नारायणा पद्मनाभा । ४ ।
मुखी तुझे नाम आवडी प्रेमाची । मग वैकुंठीचीं चाड नाही । ५ ।
सुखाच्या सागरा केशवा उदारा । तो आम्हा सोयरा जिवलगू । ६ ।
द्यावा प्रेमसौरसू नामामृतरसू । विठा विष्णुदासु विनवीतसे । ७ ।

४३७. माय वेल्हाळी वेल्हाळी । ब्रह्मरसा पान्हावली । १ ।
दोहणार चवघेजण । धार सुटेना अझून । २ ।
साहा लागले कासेसी । अठरा करिती निदिध्यासी । ३ ।
न कळे ब्रह्मादिकां वांटा । म्हणे नामयाचा विठा । ४ ।

४३८. आनंदे नाचत पंढरीसी जाऊं । गीतीं गुण गाऊं विठोबाचे । १ ।
पंढरी पावन पुण्यभूमि जाणें । विठ्ठल दर्शने दोष जाती । २ ।
आनंदें हो प्रेमें नाचों महाद्वारी । आठवूं अंतरी घडीघडी । ३ ।
आम्हा वैष्णवांचा कुळधर्म कुळींचा । घोष हरिनामाचा सदा वाचे । ४ ।
विठा नामयाचा चरणी झाला लीन । सांपडले निधान विटेवरी । ५ ।

४३९. विठोबाचे उपकार शिरी । चुकविली फेरी चौऱ्यांशीची । १ ।
भ्रमणा दुःखाच्या बहुत वेदना । म्हणोनि नारायणा शरण आलों । २ ।
अनाथांच्या नाथा तूं दीनांचा गोसावी । तोडर तुझ्या पायी शोभे देवा । ३ ।
कर्ता करविता सर्व तुझी सत्ता । विश्वाचा चाळिता चित्तवृत्ती । ४ ।
विठा म्हणे नाम स्मरे त्याचे मुखीं । बहु केलें सुखी शरणागतें । ५ ।

४४०. पतितपावन ऐकिलासी कानीं । म्हणोनि चक्रपाणि शरण आलों । १ ।
जपतप नेणों मूढ मतिहीन । बोबडें गाईन नाम तुझें । २ ।
मग कृपाळुवा जी वोळला संपूर्ण । ओलावलें मन भक्तिबोधें । ३ ।
विठा म्हणे पूर्वपुण्य काहीं होतें । तरीच पंढरिनाथें अंगिकारिले । ४ ।

४४१. साधुच्या दर्शना लाजसी गव्हारा । दासीच्या घरा पुष्पे नेसी । १ ।
वेश्यादासी मुरळी जनाची ओंवळी । ते तुज सोंवळी वाटे कैसी। २ ।
तिची गुडगुडी उच्छिष्ट अमंगळ । ते तूं धरिसी तोंडी सर्वकाळ । ३ ।
कुलस्त्रीसी चिंध्या दासीस लुगडी। लेकरे उघडी दैन्यवाणी। ४ ।
या कर्मास्तव झालासी पोरटा । नामयाचा विठा सांगतसे । ५ ।

४४२. ऐसें सुख कोठें आहे । मुक्ति मागोन करिसी काय। १ ।
ांडोनी पंढरीची वारी । मोक्ष मागे तो भिकारी। २ ।
ांडोनी वाळवंट । कां बा इच्छिसी वैकुंठ। ३ ।
ुखीं कवळ काल्याचे । ऐसें वैकुंठीं बा कैंचे। ४ ।
ामयाचा विठा खेळे । बाप नामचीं माझें भोळें। ५ ।

४३. धरोनी हनुवटी । मेळवीन दृष्टादृष्टी। १ ।
हणे मी ऐसाचि पाहीन । चरण धरोनी राहीन। २ ।
ेवीं कमळणी दीनकरा । चातका वरुषे जळधारा । ३ ।
ाळक जननी ये भावीं । चकोर चंद्रातें आळवी । ४ ।
ृपणाचें ठेविलें धन । तेथुनी न निघे त्याचें मन । ५ ।
वेठा विनवी अनुसंधानें । तुज असतां मज काय उणें । ६ ।

४४. नामयाचे वंशीं मैंद जन्मला। मार्ग हा पाडिला वैकुंठींचा । १ ।
ातरावीचे पाश घेऊनियां हातीं। वाट दिवसरातीं पाडीतसे। २ ।
ंदाच्या हाता आला सावकार । भांडारी कुबेर घरीं ज्याचे। ३ ।
ामयाचा विठा सत्य हा मैंद । भुलवुनी गोविंद म्हणवीतसे। ४ ।

४५. नामयाचे वंशीं जन्मलो लबाड। साधिलें घबाड विटेवरीं । १ ।
पंचासी आम्हीं सोडिलें उदक । वैकुंठनायक आप्त केला । २ ।
ोकीकाची लाज निश्चयें सोडिली। दृढ मिठी दिली विठोपायीं। ३ ।
बाड म्हणती निर्माण पैं झालें। तेथें बुडविलें मीतूंपण। ४ ।
ामयाचा विठा सत्याचा लबाड। प्रपंच काबाड ब्रह्म केलें। ५ ।

४४६. नामयाचे वंशी जन्मा आलें सुणे। वडिलाचें ठेवणें प्राप्त झालें। १ ।
संतसज्जनांचें राखितसे द्वार। सुणे सारासार म्हणती मज। २ ।
प्रपंच थोरला घालोनि आसन। आवडे पै ध्यान विठोबाचें। ३ ।
गुरूगुरू ऐसा शब्द माझा पाड। घातलें कवाड यमलोकीं। ४ ।
नामयाचा विठा सुणे सुणे एका। पुजिल्या निष्टंका परब्रह्म। ५ ।

४४७. वैकुंठनायका अनंदपददायका। यादवकुळटिळका केशीराजा। १ ।
संसारतारका भक्तजनपाळका। यादवकुळटिका केशीराजा। २ ।
भवमुक्तिदायका गोपीमनरंजका। यादवकुळटिका केशीराजा। ३ ।
विठ्याचा स्वामी भक्त प्रेमसुखा। यादवकुळटिळका केशीराजा। ४ ।

४४८. एक होतें तें द्वैत पैं झालें। एक पाहतां द्वैत कैंचें उरलें। १ ।
द्वैताचा भास मृगजळी दिसे। पाहूं गेलें तेथें भास भासे। २ ।
चहूचें बोलणें सहाचें नेणिव। अठराची जाणीव कैंची तेथें। ३ ।
नागरीचा भाव विठोबाचा दिसे। परत्रींचें पिसें लागुनी ठेलें। ४ ।
नामयाचा विठा नामीं विनटला। सर्वस्व हरपला देहभाव। ५ ।

४४९. देहसमय अंतीं इष्टमित्र मिळती। सांभाळा म्हणती मुलें माझीं। १ ।
स्त्री धनधान्य ते निरवुनी जात। आपुलें स्वहित विचारीना। २ ।
गाडे घोडे म्हैसी सेवक आणि दासी। सांडोनियां जासी एकलाची। ३ ।
मी कोण रे काय कसा आलों येथें। हित कीं अनहित करोनी जातों। ४ ।
हें तंव सुचेना नाठवे ज्याच्या मना। जुंपिलें तें घाणा चौऱ्यांसींच्या। ५ ।
विठा म्हणे तया कोण सोडविता। वेगीं पंढरीनाथा शरण जावें। ६ ।

४५०. माळा मुद्रा सोंग घेऊनि होती संत। सदा विषयांत चित्त त्यांचें। १ ।
पोटासाठीं एक घेऊनियां वेष। ठकविती देश रांडापोरें। २ ।
पाषाण बांधोनि नदीये निघाला। सांगा कोण गेला पैलतीरा। ३ ।
ब्राह्मणाचे परी मैंद वेष धरी। घालावया करीं फांसे जैसे। ४ ।
विठा म्हणे संत न म्हणा त्यासी। जाती नरकासी अध:पाता। ५ ।

४५१. उदर भरावया घेऊनियां सोंग । घरोघरीं बोंब उपदेशाची। १ ।
आपणा कळेना लोकां सांगे ज्ञान। धरूनियां ध्यान बक जैसा। २ ।
आपण बुडाले आणिकां बुडविती । हात धरूनी जाती यमलोका । ३ ।
दुरी पंथ जाणे तया यमपुरी । पापाची शिदोरी बांधोनियां। ४ ।
विठा म्हणे काय करूं त्याच्या कपाळा। पापाचा कंटाळा न धरिती। ५ ।

४५२. मांजराचे डोळे गेले । उंदिर धराया तळमळे । १ ।
तैंसा नव्हे रे संन्यास । धांवे विषयावरी हव्यास। २ ।
वेश्या झाली पट्टराणी । स्मरे ती पूर्वील करणी । ३ ।
सर्प प्रतिवर्षी पालटे । परि अहंकार न पालटे । ४ ।
पहिलें पोशिलें मर्कटा। कोणें शिकविल्या चेष्टा। ५ ।
म्हणे नामयाचा विठा । वज्र लागो या लल्लाटा। ६ ।

४५३. कामधेनु गाई घालुनि बाहेरी। ताक घरोघरीं मागतसे। १ ।
कल्पतरु वृक्ष असे ज्याचे घरीं। तो कां दारोदारीं भीक मागे। २ ।
ऋद्धि आणि सिद्धि विठोबाच्या दासी । तया हृषिकेशी शरण जावें। ३ ।
इंद्र आणि चंद्र विठोबाचे किंकर । देव सुरवर ध्याती ज्यातें। ४ ।
राव आणि रंक विठोबाचे मागते। ते काय रे तूंतें देती बापा। ५ ।
ऐसा कोण आहे सर्व पुरविता । एका भगवंता वांचोनियां। ६ ।
मुखीं नाम असें पुण्य ज्या पदरीं। कळीकाळावरी सत्ता त्याची। ७ ।
विठा म्हणे शरण जाय हृषिकेशी । मग निजसुखासी पावसील । ८ ।

४५४. जाति ज्ञान नाही मति ज्ञान फार। फुंजे दंभाकार लौकिकांत। १ ।
तेथें माझ्या मना नव्हे समाधान। न पाविजे खूण संतांवीण। २ ।
संत तेचि जाणा शांत ज्याचें मन। अणूचें प्रमाण दुजें नाही। ३ ।
विठा म्हणे तेथें स्थिरावलें मन। झालें समाधान त्याचे संगें। ४ ।

४५५. अनंत अपरंपार नाम हे सधर। नाम सुखसागर अमृत लहरी । १ ।
नाम हेंचि तारूं नाम हेंचि तारक। भवमूळ छेदक नाम तुझें । २ ।
नाम हेंचि जीवन नाम हें निधान। नाम हें कारण आनंदाचें। ३ ।
नाम हें सांठा तोचि वैकुंठींचा मोठा। म्हणतसे विठा नामयाचा । ४ ।

४५६. नाम तारी पतितासी। ते कां अव्हेरी भक्तांसी । १ ।
प्रेमळ देवाचें लडिवाळ। करी निजांगें प्रतिपाळ । २ ।
सेवाऋणें वागवी भार। जन्मोजन्मींचा दातार। ३ ।
स्वामी स्वयें अंगिकारी। वोळगा कां हो दारोदारीं । ४ ।
निष्ठुर नव्हे कोणेकाळीं । कृपाकटाक्षें कुरवाळी। ५ ।
दास विठा म्हणे वेगें। यात्रे जावें माझे संगें। ६ ।

४५७. हरि म्हणा हरि म्हणा अहो जन । आणिक बोलाल तरी विठ्ठलाची आण। १ ।
अहिल्या पाषांण अजामेळ कुळहीन । उद्धरिला दर्शनें वाल्मिक जाण। २ ।
नामयाचा विठा संतचरणीं ठेवोनि माथा । कीर्तनेंवीण वृथा नको गोष्टी। ३ ।

४५८. धर्म अर्थ मोक्ष काम । हाकारितां रामराम। १ ।
जें जें आवडे मनासी। त्यानें जावें पंढरीसी । २ ।
चला आनंदें कौतुकें । पेठ भरली पुंडलिकें । ३ ।
न चले कोणाची थोरी । राया रंका एकी सरी। ४ ।
सांडोनियां अहंभाव। हाचि करावा व्यवसाव। ५ ।
विठा म्हणे विष्णुदास। आणिक न लगे सायास। ६ ।

४५९. बरवें बरवें वाळवंट। काय इच्छिसी वैकुंठ । १ ।
हें सुख तेथें नाहीं । मुक्ति घेउनी करिसी काई। २ ।
म्हणे नामयाचा विठा । बापा नको जाऊं वैकुंठा । ३ ।

४६०. देखुनी पंढरीच्या सुखा । मोक्षपद आलें फुका । १ ।
अवघें विठ्ठलचि झालें । येणें पुंडलिकें केलें । २ ।
ऋद्धि सिद्धि पंढरपुरीं । होवोनी वोळती कामारी । ३ ।
मुक्ति वागती अंगणीं । घरोघरीं वाहे पाणी । ४ ।
तीर्थे चिंतवणी करिती । पुढें आमुची कोण गती । ५ ।
आला कळिकाळा त्रासू । विठा म्हणे विष्णुदासु । ६ ।

४६१. बहुतां पुण्याचे कष्ट । त्यासी प्राप्त हें वैकुंठ । १ ।
तैसी नोहे ही पंढरी । पतित पापियातें तारी । २ ।
बहुता तपाचें प्रत्यक्ष । त्यासी अपकारी मोक्ष । ३ ।
जेणें केलीं तप तीर्थे । तोचि आवडे मुक्तीतें । ४ ।
देह सोसी नानाविधि । त्यासी प्राप्त होय सिद्धी । ५ ।
विठा म्हणे नामघोष । पळ काढील महा दोष । ६ ।

४६२. ज्यासी नावडे पंढरी । तोचि वसेल अघोरीं । १ ।
त्यासी जाची यमदूत । सकळ पूर्वजांसहित । २ ।
जया नावडे हरिनाम । तया कुंभपाकीं धाम । ३ ।
जया नावडती संत । ते चालती यमपंथ । ४ ।
जया नावडे भीमरथी । तेचि अघोरीं पचती । ५ ।
या बोलाचा धरीं विश्वास । विठा म्हणे विष्णुदास । ६ ।

४६३. हरिकथा ऐकतां संसार आठविती । तयाच्या सुकृति अवघा नाश । १ ।
निश्चिंत होऊनि ऐकतां श्रवणीं । यमाची करणी न लगे कांही । २ ।
आतां रामकृष्ण म्हणे कारे वाचा । कळिकाळ मोचा वाहतील । ३ ।
विठा म्हणे संतीं अवधान द्यावें । हृदयीं धरावें केशवनाम । ४ ।

४६४. काय गाणीव काय जाणीव । काय शहाणीव कीर्तनाची । १ ।
थाक तोडिलें डोळे मोडिले । लोकां मानवलें बरें गातो । २ ।

हरिचें नाम तूं नेणसी । वांयां कीर्तनीं उभा ठाकसी । ३ ।
हरीचें नाम तुम्ही गा रे प्रेमें । विठा म्हणे माझ्या बापाच्या नांवें । ४ ।

४६५. जैसा आंबा वर्षत पाडी । तैसी धरीं गोडी किर्तनीं नाचें । १ ।
न करी घातमात न लावी वेळू । तेणें हा गोपाळू मंतरला । २ ।
दुधावरील साय मधेसी गोडी । तैसी धरी आवडी रामनामीं । ३ ।
जतीचा साटा तो वैष्णव लाटा । म्हणतसे विठा नामयाचा । ४ ।

४६६. यात्रे बोलावितो हरी । कां हो नवजा पंढरी । १ ।
विठोबा कृपेचा कोंवळा । बहु भक्तांचा कळवळा । २ ।
भक्त आठवती चित्तीं । देवा वाटे परम खंती । ३ ।
देव अवज्ञा अनुचित । पृथक सत्ता आत्मघात । ४ ।
ऋण वारी भगवंत । दुबळा नव्हे लक्ष्मीकांत । ५ ।
दास विठा म्हणे त्वरा । यात्रा पंढरीची करा । ६ ।

४६७. द्रौपदीचें थालीपात्र । त्यांत कैंचे शाखापात्र । १ ।
माव याची अभिन्नव । वाव मानसीं उपाव । २ ।
जंव लाधला तो आपण । केलें तृप्त त्रिभुवन । ३ ।
सेवा घेउनी सारी काम । अंगें चैतन्य निष्काम । ४ ।
याच्या छळें आकर्षिला । बळिचा द्वारपाळ झाला । ५ ।
भक्तियोगें द्वेषेंभयें । वेध लाउनी सन्मुख होये । ६ ।
दोही बाही आपण देव । काय नेणा पंढरीराव । ७ ।
दास विठा म्हणे धंदा । कृपा देवाची संपादा । ८ ।

४६८. कृष्ण गौळियाचें लोणी चोरी । तंव अवचिता शेंडी सांपडली हरी ।
घेवोनी आलिया बाहेरी । तंव यशोदे वोसंगा । १ ।
चाकाटलिया गौळणी । देवो विसरल्या गाऱ्हाणीं ।
लाजें मौन्य धरोनि । अवलोकिती गोविंदा । २ ।

आम्हां अवधियापासीं असे । पैल यशोदा वोसंगा दिसे।
हें स्वप्न कीं साच असे । म्हणती मानसें वेडावलीं। ३ ।
ऐशा अनेक परिच्या वेदश्रुती । वाचे वर्णावया न येती।
विठा विनवी विष्णुदासाप्रती । ऐसा यशोदेचा कान्हया । ४ ।

## ❀ गोंधळ ❀

४६९. त्रैलोक्य माझारी एक विठाबाई सुंदरी हो।
पुंडलिका कारणें तिष्ठत भीमातीरीं हो। १ ।
उदो बोला उदो बोला विठाबाई माउलीचा हो। ध्रु०।
मांडिला देव्हारा तुझा त्रिभुवना माझारी हो। २ ।
चौक साधियला नामीं कळस ठेविला वरी हो। ३ ।
गोंधळ्या माझारी एक पुंडलिक नेटका हो।
घातला गोंधळ विठाई दाविली तिहीं लोकां हो। ४ ।
गोंधळ घालीत गेली कैसी रावणाच्या घरा हो।
शरणागत रक्षिलें वधियलें दशशिरा हो। ५ ।
आषाढी कार्तिकी तुझा गोंधळ वाळवंटीं हो।
येती सनकादिक गरूडटके यांची दाटी हो। ६ ।
करुनी गोपाळकाला गोंधळ घाली वेणूनादीं हो।
गोपिकांसहित सवे गोपाळांची मांदी हो। ७ ।
नामयाचा विठा कैसा गोंधळी नेटका हो।
वडिलांची विठाई कुलस्वामिनी अंबिका हो। ८ ।

## ❀ संत गोणाईचे अभंग ❀

४७०. सुख पंढरीस पाहूं । आले भीमातीरी बहू। १ ।
प्रेमें गर्जती हरिचे दास । मागें पंढरी निवास । २ ।
मोक्ष पाईं लोळण घाली । देखोनि मुक्ताई निवाली। ३ ।
ज्ञानदेव सद्गदित। देखोनि गोणाई हांसत । ४ ।

४७१. ज्याचें दैव त्या सांगतें। मला नवल वाटतें। १ ।
एक बैसती अश्वावरी। एक चालती चरण चालीं। २ ।
एक जेविती मिष्टान्न। एका न मिळे कोरान्न। ३ ।
गोणाई म्हणे धन्य देवा। नामयाचा संचित ठेवा। ४ ।

## संत गोविंदांचे अभंग/संत नामदेवांचे चरित्र

४७२. आलिंगिला नामा हृदयीं विठ्ठलें। ताट विस्तारिलें रूक्माईनें। १ ।
विठ्ठल रुक्माई तिसरा नामदेव। जेवियेले भावें तिघेजण। २ ।
जेवूनियां त्यांनी विडा तो घेतला। नामा सुखी केला पांडुरंगें। ३ ।
देव त्यास म्हणे जाहालों समाधान। घाली लोटांगण नामदेव। ४ ।
मनोरथ माझा पुरविला देवा। नित्य ऐसी सेवा घडवावी। ५ ।
ऐसी मज भाक देईं नारायणा। करावी वासना तृप्त माझी। ६ ।
विठ्ठलानें भाक दिली नामयासी। नित्य सेवा ऐसी दिधली तुज। ७ ।
ऐसें भाष्यवचन करोनी देवासी। लागला चरणांसी नामदेव। ८ ।
आज्ञा घेऊनियां नामा तो चालिला। घरासी तो आला गोंदा म्हणे। ९ ।

४७३. नामा आला घरा पुसत गोणाई। उशीर कां पाही लावियेला। १ ।
ताट जो पाहिलें रिकामें देखिलें। बोणें काय केलें पुसतसे। २ ।
नामा म्हणे बोणें देव जेवियेला। म्हणोनि लागला उशीर मज। ३ ।
बोणें कोठें देव जेवितां देखिला। त्वां दिलें पोरांला नामदेवा। ४ ।
ऐसें नित्य बोणें देशी तूं पोरासी। सोंग घेऊन येसी मजपाशीं। ५ ।
काढुनी चराट नामा टांगियेला। बहुत ताडिला गोणाईनें। ६ ।
रागें रागें त्याला अधिक अधिक मारी। मिळोनी शेजारीं सोडविला। ७ ।
आण वाहे नामा म्हणे गोणाईसी। जेविले हृषिकेशी पांडुरंग। ८ ।
नको मारूं आई दिलें नाहीं कोणा। लागत चरणा गोंदा म्हणे। ९ ।

४७४. नामयाचा नेम पाहों आदरिला। मनामध्यें केला नेम तिनें। १ ।
मनामध्यें म्हणे आणिक द्यावें बोणें। पाहावी हे खूण कैसी आहे। २ ।

एके दिवसीं बोणें दिल्हें नाम्यापाशीं। न्यावें हें देवासी म्हणे माय । ३ ।
नामा म्हणे आई जेवील हृषिकेशी । आणिक मारिसी मज काय। ४ ।
न मारी म्हणोनि बोलीली गोणाई। माथा ठेवूनि पायीं चालीयेला। ५ ।
नैवेंद्य घेऊनि गेला विठुपासीं । बैसले सुखेसी तिघेजणें । ६ ।
तिघेजणें एके ठायी ते जेविलीं । गोणाई अवचित आली तेथें। ७ ।
कवाडा आडुनी पाहात गोणाई। तिघे एकेठायीं जेविताती । ८ ।
जेवितां देखिले आली ते घरासी। साक्ष आली तिसी गोंदा म्हणे। ९ ।

४७५. साक्ष आल्यावरी कष्टी जहाली मनीं । मारिलें पापिणी नामयासी । १ ।
मारिलें म्हणोनि महा शोक करी। जेवूनियां घरी आला नामा। २ ।
नामा आला घरा पाहे मातेकडे । आनंदानें रडे गोणाबाई। ३ ।
नामा विनवित दोन्ही कर जोडोनि । लागला चरणीं गोणाईच्या। ४ ।
नामा म्हणे माते कां शोक करिसी । सांग मजपाशीं काय जाहालें। ५ ।
माता म्हणे आतां काय सांगू नाम्या। साक्ष माझ्या मना आली आजी। ६ ।
कवाडा आडून देखियेलें आम्हीं। जेवियेलां तुम्ही तिघेजण । ७ ।
व्यर्थ मी मारिलें केला जाच तुज। ऐसा भक्तराज गांजियेला। ८ ।
आतां मज देव कोपेल विठ्ठल। ऐसी माता बोले गोंदा म्हणे। ९ ।

४७६. नामयाची माता काय म्हणे देवा । मज तूं केशवा कोपूं नको। १ ।
मज कोपूं नको देवा पांडुरंगा। गोणाई गोविंदा विनवीतसे । २ ।
न कळतां देवा मारिला मी नामा। मज करीं क्षमा मायबापा। ३ ।
सर्वस्वी मी अपराधी पंढरीच्या राया। नाम्याविषयीं दया असों द्यावी। ४ ।
घातलें तयासी तिने लोटांगण । केलें समाधान विठ्ठलानें। ५ ।
नामा अलिंगिला हृदयीं मातेनें। जोडला सज्जन देव तुज । ६ ।
तुज हा जोडला पंढरीचा राव। जाहला बरवा ठाव नामदेवा। ७ ।
बहुत पूर्वपुण्य होतें तुझे गांठीं। पडली हे मिठी विठ्ठलासी । ८ ।
नामा विठ्ठलासी नाहीं द्वैतपण। धरीत चरण गोंदा म्हणे। ९ ।

४७७. विठ्ठल रूक्माई भक्त नामदेव। नित्यानित्य सद्भावे जेवितसे। १ ।
सेवा करितां बहु दिवस क्रमिले। नागवन आलें फार दिवसे। २ ।
कांहीं नाहीं घरीं द्रव्य आणि धन। राजाई ते म्हणे गोणाईसी। ३ ।
काय खावें आतां असो कोण परी। लाविलें दारोदारीं विठ्ठलानें। ४ ।
उपवास सोसूं किती आतां दिवस। घालू या पोरास काय आतां। ५ ।
विठ्ठलानें काहीं बरें नाहीं केलें। नामया वेडें केलें पांडुरंगें। ६ ।
वेडें करुनि आम्हां जाच तूं करिसी। पोट मारविसी मायबापा। ७ ।
किती दुःख सोसूं आतां या शरीरीं। करीन निर्धारीं जीवघात। ८ ।
चौपोरांसहित घालीन भीमे उडी। लागेन पैलथडी गोंदा म्हणे। ९ ।

४७८. दोघेजण बाळ नारा म्हादा तान्हें। बांधियेलें तिनें मागें पुढें। १ ।
उडी ते घातली भींवरेचे डोहीं। आला लवलाही पांडुरंग। २ ।
येउनी शिरला भींवरेचे डोहीं। ओढोनी राजाई ठेवी कांठी। ३ ।
पाहे तों राजाई कांठी उभी आहे। क्रोधें बोलताहे विठ्ठलासी। ४ ।
क्रोधें म्हणे देवा कां रे जाचितोसी। लल्लाट महिशी आपटिलें। ५ ।
क्रोधें ते आणिक टाकियेली उडी। नेली पैलथडी विठ्ठलानें। ६ ।
मग ते राजाई चालिली घरासी। देखिला वाटेसी मेला सर्प। ७ ।
सर्प तो घेउनी वेगी आली घरासी। ठेवी शिजावयासी चुलीवरी। ८ ।
सर्प हा शिजला खाऊं पांचजणें। केला विचार तिनें गोंदा म्हणे। ९ ।

४७९. शिजला तो सर्प काढिलें झांकण। पाहे तो सुवर्ण तोंडावरी। १ ।
सुवर्ण देखोनि सुखी जाहाली मनीं। बाई हरिखोनी सांगे नामया। २ ।
सांगितले वर्तमान नामयापासीं। नामा म्हणे तिसी पाहूं सोने। ३ ।
सुवर्ण आणुनी ठेवियेलें पुढें। काय केलें वेडे नामा म्हणे। ४ ।
कशासाठी माझ्या स्वामीसी पीडिलें। कां गे कष्टी केलें देवराया। ५ ।
मेळविलें द्विज तया नामयानें। वांटियलें सोनें ब्राह्मणासी। ६ ।

तेव्हां राजाईनें आकांत मांडिला। नामा वेडा केला पांडुरंगें। ७ ।
सुवर्णासारखी वस्तु ते वांटिली। भुली ते घातली नामयासी। ८ ।
नामदेवा तिंने बहु जाच केला। कृपाळु पावला गोंदा म्हणे। ९ ।

४८०. जाच केला म्हणोनि चालिला श्रीहरी। भक्तांचा कैवारी पांडुरंग। १ ।
पंढरीचा वाणी झाला केशवशेट। लावियेली मूठ ढवळानंदी। २ ।
वराईची गोणी घालून त्यावरी। आणून नामयाघरी उतरली। ३ ।
पुसता तो नामा गेला अंघोळीसी। सांगे राजाईसी केशवशेट। ४ ।
धनाची हे गोणी वेंचा तुम्ही घरीं। सांगा बहुतापरी नामयासी। ५ ।
नामदेव माझा मित्र आहे सगा। केशवशेटीं सांगा दिल्ही गोणी। ६ ।
वचन सांगोनी केशवशेट गेला। नामदेव आला मंदिरासी। ७ ।
येउनी पुसत कवणाची गोणी। तुमचा मित्र वाणी केशवशेट। ८ ।
नामा पाहे तंव वराईची गोणी। दु:खी जाहला मनीं गोंदा म्हणे। ९ ।

४८१. राजाईचा संशय फेडिला मनींचा। कळला पूर्ण साचा पांडुरंग। १ ।
भावें ते राजाई म्हणे नामदेवा। सज्जन हा ठावा पांडुरंग। २ ।
विठ्ठलावांचुनी आणिक नाहीं थोर। धरिला निर्धार राजाईनें। ३ ।
विकल्प सांडुनी मन केलें शुद्ध। धरिला गोविंद मनामाजी। ४ ।
नामा ते राजाई जाहाला एकभाव। लावियेला जीव विठ्ठलपायीं। ५ ।
नारा विठा गोंदा माहादा आउबाई। त्यानीं धरिला पायी पांडुरंग। ६ ।
नामयाची दासी नामी दुसरी जनी। त्यांनी सेवा करुनी केला देव। ७ ।
एकभाव पहा लाविला विठ्ठला। त्यांनी जवळ केला पांडुरंग। ८ ।
विठ्ठलावांचोनी दुजें नाहीं मनीं। गेलें लोटांगणीं देवराया। ९ ।
ऐसा त्याचा भाव कळला देवासी। सकळ वैकुंठासी पाठविले। १० ।
अंतकाळीं नामा धरिला हृदयीं। ठेवियेलां पायीं गोंदा म्हणे। ११ ।

४८२. ऐसा नामा भक्त पूर्ण केली सेवा। उद्धरिलें जीवां संगतीच्या। १ ।
आवडला नामा देवा विठ्ठलासी। ठेवी चरणापासीं अखंडीत। २ ।
न सोडी विठ्ठल नामयासी घडी। बहु त्याची गोडी विठ्ठलासी। ३ ।
गोडी हे म्हणोनि ठेविलें चरणीं। आहे तो भजनीं नामदेव। ४ ।
ऐसा पांडुरंग भक्तांची माउली। करितो साउली मायबाप। ५ ।
नरदेहा आलिया भजावा हा देव। मनीं दुजाभाव धरूं नये। ६ ।
भजावे भजन नामयाचे परी। होय साहाकारी गोंदा म्हणे। ७ ।

४८३. भावें भक्तिवादें करावें कीर्तन। आशाबद्ध मन करूं नये। १ ।
निष्कामें करावें देवाचें कीर्तन। भय हें सांडून शरीराचें। २ ।
रणामध्यें कैसा भिडतो रणशूर। होवोनी उदार जिवावरी। ३ ।
तैसा पांडुरंगीं धरा हो निर्धार। उतरा हा पार भवसिंधू। ४ ।
सिंधू उतरोनी लावा जगढाल। पाहा तें नवल विठ्ठलाचें। ५ ।
देव जोडियेला तया काय उणें। गोंदा म्हणे मन धीट करा। ६ ।

४८४. साठीं नव लक्ष-चौऱ्याणव कोटी। बापाची हे जोडी देंई देवा। १ ।
जमान देउनी नाहीसें तूं करी। वांयां येरझारी शिणवितोसी। २ ।
आमुचे जमान देवा तुमचे पायें। तुझा कोठें आहे जमान सांगें। ३ ।
नामयाचा गोंदा बळकट धरितां झाला। विठोबा आणिला चौबारांत। ४ ।

४८५. सेज सिद्ध झाली निजा श्रीधरा। आज्ञा द्यावी लोकां जाती आपुल्या घरा। १ ।
रात्र बहुत जाहाली देवा चला मंदिरा। राहीरखुमाबाई वाट पाहाती सुंदरा। २ ।
तुम्हासमोरास देवा झाली पंढरी। विनटला चरणीं गोंदा उभी राहिला द्वारीं। ३ ।

## संत महादेवांचा अभंग

४८६. यादवांचे कुळीं झोंड जे जन्मले। नाहीं ऐसें केलें मागेंपुढें। १ ।
देंई गा विठोबा आमुचें ठेवणें। लोकांचें तूं ऋण नेदों पाहासी। २ ।

आमुचे साधु आहेत सज्जन। तुमचा जमान कोठें देवा । ३ ।
नामयाच महादा बळकट पै झाला । विठोबा आणिला चौबारांत। ४ ।

## ❖ संत लाडाईंचे अभंग ❖

४८७. पूर्व संबंधें मज दिधलें बापानें । शेखी काय जाणें कैसे झालें । १ ।
प्रसुतालागीं मज आणिलें कल्याणा । अंतरला राणा पंढरीचा। २ ।
मुकुंदें मजशीं थोर केला गोवा। लोटियलें भवानदी माजी । ३ ।
ऐकिला वृत्तांत सर्व झालें गुप्त। माझेंचि संचित खोटें कैसें । ४ ।
द्वादशबहात्तरीं कृष्ण त्रयोदशी । आषाढ हें मासी देवद्वारीं । ५ ।
सर्वांनी हा देह अर्पिला विठ्ठलीं। मज कां ठेविलें पापिणीसी । ६ ।
लाडाई म्हणे देह अर्पीन विठ्ठला। म्हणोनि आदरिला प्राणायाम। ७ ।

४८८. जोडोनियां पाणि करी विनवणी । धांव चक्रपाणि पांडुरंगा। १ ।
कोणा निरविलें हें नाहीं कळलें। येईं गे विठ्ठले मायबहिणी । २ ।
ऐकोनियां धांवा धांवला अनंत । शंख चक्रांकित उभा पुढें। ३ ।
उचलोनि मुकुंदा घाली वोसंगळा । सांभाळी विठ्ठला तुझा तूंची। ४ ।
देव म्हणे तुझ्या पूर्वजासी भाक। दिधली ऐक सांगतों मी। ५ ।
तुमची वंशावळी पोशीन मी सत्य। म्हणोनि कुर्वाळीत पद्म करे। ६ ।
येरी चरणावरी ठेविला माथा। कृपाळु अनंता सांभाळावें। ७ ।
ध्यानीं धरोनियां मूर्ती सबाह्य अंतरीं । आतां या उपरी न देखे कांहीं। ८ ।
लाडाई म्हणे देवा घेई हृदयांत। देवें मग गुप्त केली तेथें। ९ ।

## ❖ संत आऊबाईंचा अभंग ❖

४८९. शून्य साकारलें साध्यांत दिसे। आकार नासे तेथें शून्याकार दिसे। १ ।
शून्य तें सार शून्य तें सार । शून्यीं चराचर सामावलें। २ ।
नामयाची बहिण आउबाई शून्यीं सामावली। विठ्ठलीं राहिली चित्तवृत्ती। ३ ।

## ❖ संत लिंबाईचा अभंग ❖

४९०. तारी मज आता रखुमाईच्या कांता । पंढरीच्या नाथा मायबापा। १ ।
अनाथाचा नाथ ऐकियेले कानी । सनकादिक मुनी बोलताती । २ ।
त्याचिया वचनाचा पावोनी विश्वास। धरिली तुझी कांस पांडुरंगा । ३ ।
नामयाची लेकी लिंबाई म्हणे देवा। कृपाळू केशवा सांभाळावे। ४ ।

## ❖ संत विसोबा खेचरांचे अभंग ❖

४९१. जें जें असेल प्रारब्धीं। तें न चुके कर्म कधीं।
होणारासारखी बुद्धि । कर्म रेषा प्रगटे। १ ।
न कळे पुढील होणार। भूत भविष्य हा विचार।
कर्मधर्म तदनुसार। भोगणें लागे सर्वथा। २ ।
ऐसा लिहून गेला विधाता। मग कासया करावी चिंता।
आपुलीया संचिता। कर्म रेषा प्रमाण। ३ ।
जैसें असेल आचरण । घडलें असेल पापपुण्य।
तैसे सानुकूल होतील कर्म । मान अपमान जनकरिता। ४ ।
काळ अनुकूल अथवा प्रतिकूल। परि सोडूं नये आपुलें धैर्यबळ।
अनाचारी मन केवळ। नये बाटवूं सर्वथा । ५ ।
अखंड वाणी हरिस्मरणीं। सुख विश्रांती कीर्तनीं।
खेचर विसोबा म्हणे प्राणी। मनुष्य देह दुर्लभ । ६ ।
४९२. छंदे छंदे तीर्था जासी। परि अविद्यासी न सांडिसी ।
वायां आत्मरूप कष्टविसी । तेणें न पावसी रे नित्यसुख । १ ।
ध्यान धारणा मुद्रा जप। यम नियम करिसी तप।
तेणें तुझी न चुके खेप। आराधी स्वरूप एकभावे । २ ।
परस्त्री तितुकी जाण रे माता। ऐसें मनीं मानी रे तत्वतां ।
परद्रव्य येऊं देऊं नको रे चित्ता। मग गुरुनाथा सेवी तया। ३ ।

तो सांगेल मर्मखूण। तेणें तुज होईल आत्मज्ञान।
फिटेल भ्रांति देखसी निरंजन। शून्य भुवन देहामाजी। ४।
तेथून सुनीळ प्रकाशु। सोहं गर्जना रात्रंदिवसु।
आणिला राजा परम पुरुषु। भोगी रहिवासु आत्मज्ञानी। ५।
हें जरी सत्य न मानिती मनीं। ते नर पुढती येती ये जनीं।
खेचर विसा करी विनवणी। कोप न धरी रे नामया। ६।

## ❖ संत परसा भागवत ❖

### परसा भागवत व नामदेव यांचा संवाद

४९३. परसा म्हणे नामयासी। अरे नामदेवा परियेसीं।
तूं तंव दवडिल्या न जासी। मनीं न लाजसी अझुनी। १।
परसा वदे नामयासी। तुझे पूर्वज माझे चरणापाशीं।
जरी तूं हरिदास झालासी। तरी याती हीनची। २।
तुवां कोठवरी काय देखिलें। नाहीं वेदशास्त्र म्हणीतलें।
एक तुजची जाणीतलें। इतुकें झालें सांगावया। ३।
आणिक सांगेन एक। तूं तर ठायींचाची वासनीक।
मातें लाविसी मौन टिळक। तेथें पाईक काय करी। ४।
तयासी त्वां कौटाल्य केलें। सहस्र वैष्णवांमाजी मुरळें ठेले।
तंव ते उमगो लागले। मग भुलले आपोआप। ५।
ऐसा तूं कवटाळिया पाहीं। तुझे पूर्वज माझे पायीं।
मन शंका धरिसी कांही। अझुनी तरी विचारीं पां। ६।
तुजसी करितां वादक। तरी हे शंकतील लोक।
तूं तंव माझाची सेवक। विष्णुदासा म्हणे परसा। ७।

४९४. यावरी नामदेव काय बोलला। आजि मनीं संतोष झाला।
शब्द पूर्वजांचा ऐकिला। आनंदें भरला सागर। १।

परसोबास म्हणे नामा । चरणतीर्थ द्यावें आम्हां ।
तुमचे चरणींचा महिमा । माझ्या पूर्वजा आतुडला। २ ।
इतुके दिवस गिवसितां पाही । परी हे व्यवस्था न पडे ठायीं ।
पूर्वज आहेत तुझे पायीं । तें म्यां आजि जाणितलें। ३ ।
तयासी आपुले चरणीं राहविलें । म्यां काय पूर्वी कर्म केलें।
त्वां मज वेगळें धरियेलें । थितें अंतरले चरण तीर्थ। ४ ।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य समस्त। हे तंव तुमच्या पायां पडत।
तया दंडवत घडत । दोष जाती तयांचे । ५ ।
ऐसें ठायींचेंच जाणतों। तरी कासया हिंडतों ।
चरण धरूनीच राहतों । विष्णुदास म्हणे नामा। ६ ।

## संत परसा भागवतांचा गर्वपरिहार

४९५. परसा सांगे स्त्रियेपाशीं । अवो अपूर्व वर्तलें पंढरीसी ।
मज आणि नामयासी । झाला विवाद परस्परें । १ ।
परसा सांगे आपुली महिमा । आजि फजीत केला नामा ।
पुढती शरण आला आम्हां। सकळ जना देखतां । २ ।
आम्हीं तयासी निर्भत्सिलें । परी ते आमच्या पायीं लागले ।
काकुळती शरण आले । मग सोडिलें तयातें । ३ ।
आम्हीं साक्षात् विष्णुदास । त्यानें म्हणवावें विप्रदास ।
ऐसें असावें प्रत्यक्ष । विष्णुदास कां म्हणवी । ४ ।
तूं म्हणसी एक नामा । येर वाउगीच उपमा ।
त्यापाशीं असता परमात्मा। तरी कां आम्हा शरण येता । ५ ।
खालील पायरी तयाची जाण । वरी आम्हासी महिमान।
आमुच्या हृदयीं परमात्मा आपण। सदा जागृत वसततसे । ६ ।

धन्य धन्य माझें कुळगोत्र। नाम पावलों भागवत।
केलिया पुण्या नाहीं मीत। आणि वेदांत मी जाणें। ७।
यातिहीन विष्णुदास म्हणविती। तेणें ते नर भय पावती।
तयासी न चुके पुनरावृत्ति। विष्णुदास म्हणे परसा। ८।

४९६. यावरी काय बोलिली पतिव्रता। विनंती करितें कोपूं नका।
तुम्हासी गर्व जरी नसता। तरी घरीं भेटता परमात्मा। १।
तुम्ही ब्राह्मण पवित्र धन्य। मुखीं वेद हरीचे नाम।
वरी गर्व अवलक्षण। सकळही धर्म लोपले। २।
अमृत घातलें पाषाणावरी। वरी वरी ओला कोरडा भीतरीं।
तैसा घात तुमच्या शरीरीं। गर्वें हरि न भेटेची। ३।
गाय ते सर्वांठायीं पवित्र। परि तिची वासना अपवित्र।
तैसें तुमचें धन्य कुळगोत्र। गर्व अपवित्र सांडा जी। ४।
तुम्हासी चाड जरी हरीसी। तरी मत्सरू करूं नका नामदेवासी।
तो आलिया घरासी। हरि तुम्हासी भेटेल। ५।
आतां आदर करोनी आणाल नामा। तयासवें येईल परमात्मा।
भेट होईल तुम्हा आम्हा। त्या नामयाचेनी प्रसादें। ६।
आणखी एक अवधारीं। राउळा येत होते हरी।
नामा होता बरोबरी। अंचळ सरसावी रखुमाई। ७।
आणखी एक वृत्तांत ऐकिला। कीर्तनासी नामदेव आला।
द्वारकेचा भोपा पोळला। तो बुझाविला येथोनी। ८।
आणिकमहोदवद्वारीं कीर्तन मांडिलें। हें आंवढ्यासी वर्तलें।
देऊळ तयाकडे फिरलें। भलें नवल नामयाचे। ९।
ऐसें बोलली कमळजा। तुम्ही स्वामी मी तुमची भाजा।
गर्व सांडा जी वोजा। तरी पंढरीराज भेटेल। १०।

## संत परसा भागवत व संत नामदेव यांचा संवाद

४९७. भूवैकुंठ जाणा क्षेत्र हे पंढरी। नांदे तेथें हरि द्वारकेचा। १।
तेचि गांवी असे परसा भागवत। करितसे भक्ति रुक्मिणीची। २।
आदिमाया जाहली ती प्रसन्न। दिला त्याकारणें परिस एक। ३।
लोहासी लावूनि सुवर्ण तो करी। सुखें हा संसारीं राहतसे। ४।
नित्य महाद्वारीं वाची रामायण। करिती श्रवण साधुसंत। ५।
भजन करूनि नामा येत तेथें। पुसतसे अर्थ त्याजलागीं। ६।
सांगा कैसी आहे लंकेची रचना। कोण कोणत्या स्थाना राहताती। ७।
बाबा तेचि सांगा मजलागीं खूण। बोलत प्रमाण नामा त्यासी। ८।
शास्त्र पाहोनियां करितो उत्तर। आणिक विचार पुसे त्यासी। ९।
दोघांचा संवाद होतां महाद्वारीं। विस्मय अंतरीं करिती संत। १०।
परसोबा सांगत रुक्मिणीलागून। करितो अपमान नामा माझा। ११।
ऐक माते माझी हेचि विज्ञापना। दावीं तूं रचना लंकेची हे। १२।
पाहोनियां लंका येईन मी माये। समाधान होय नामयाचें। १३।
सांगेन तयासी सकळ वृत्तांत। पुरवीं हा हेत आतां माझा। १४।
लेंकुराचे कोण पुरवील लळे। घेतली म्यां आळ तुजपाशीं। १५।
करीं माते माझें आतां समाधान। वंदीत चरण परसा तेव्हां। १६।
अवश्य म्हणोनियां दिलें तें वचन। आनंदला पूर्ण भागवत। १७।
बैसविलें तिने त्यासी हातावरी। दाविली नगरी बिभीषणाची। १८।
पाहें बापा आतां होऊनियां स्वस्थ। पुरवीं हा हेत आपुला तूं। १९।
पाहोनियां लंका आनंदला मनीं। धन्य हे करणी करत्याची। २०।
रम्य स्थळ जागा अपूर्व ते फार। होतसे गजर नामघोष। २१।
घरोघरीं होय वेद पारायण। रामनामीं मन सर्वत्रांचें। २२।
सर्व पाहोनियां लंकेची रचना। आला तो सदना बिभीषणाच्या। २३।

पाहातो तों नामा उभा कीर्तनास । गुण गात असे देवाजीचे। २४।
शरण जे गेले माझ्या पंढरीनाथा। नाहीं भय चिंता त्यांस कांहीं। २५।
विस्मय तो करी परसोबा अंतरीं। फिरला माघारीं तेथूनियां । २६।
बैसविला तेव्हां रुक्मिणीनें करीं । आणिला पंढरी क्षेत्रामाजी। २७।
समजलें तेव्हां नामया लागुनी । पुसतसे खूण तुजलागीं। २८।
परसोबा सांगत त्यासि सविस्तर । बिभीषण मंदिर कैसें असे । २९।
ऐकोनियां ऐसें न करी उत्तर । कां रे अहंकार धरिलासी । ३०।
हातीं तुझ्या आला होता चिंतामणी। कैसा तो गोफणीं लाविलासी । ३१।
कल्पवृक्ष तुझ्या अंगणी लाविला। कैसा उपडिला अभागिया । ३२।
अमृताचा घट हातासी लाधला। कैसा उलंडिला वेडिया तूं । ३३।
तैसा महाराज तोचि बिभीषण। कां नाहीं नमन केलें त्यासी। ३४।
सदोदित ज्याचे हृदयीं रामचंद्र। दुजा कां विचार धरीला तेथें। ३५।
अहंकारें मोठे मोठे नाडलेती। सांगसी त्या तूं युक्ती शास्त्राच्या ते। ३६।
तोचि अहंकार धरिलासि अझून। होईं आतां लीन संतांपायीं। ३७।
तेणें हा झडेल अंतरींचा मळ। दिसेल सकळ ब्रह्मरूप । ३८।
समजला तेव्हां परसोबा तो मनीं। न कळे करणी नामा तुझी । ३९।
गळोनियां गेला त्याचा अभिमान। झाला तेव्हां लीन संतांपायीं। ४०।
संतांची करणी असे अघटित। करी दंडवत नामदेव । ४१।

४९८. मातें डावा डोळा उजवा हे सारिखे। एक समतुके पाहे दोन्ही। १।
नांवें वेगळालीं इतकेचि जाण । परी काय केलें येणें सांग मातें। २।
नाहीं जाणत न घडे तूं कैसी माउली। म्हणवोनि देह घाली चरणावरी। ३।
वांयाविण सीण धरसी रे कासया। ऐक रे परसया सांगेन तुज । ४।
नामयाच्या खांद्यावरी ठेवानियां हात । आपण पंढरीनाथ येत होते । ५।
नामयासह ते भ्रांति पडली चित्तीं । म्हणवोनि एकांती राउळीं पुशिलें। ६।

देव गुह्य बोलिले मी तें चित्तीं ठेविलें । दुजें वरीयलें भक्तीलागीं । ७ ।
त्यापासूनि नामयाची शंका येतसे आम्हां। अखंड परमात्मा जया जवळी। ८ ।
नामयासी देखोनी लोटांगणीं जावें। दुजें न धरावे आन चित्तीं। ९ ।
इतुकें ऐकोनी परसा विनविता झाला। काय बोलियेला रुक्माईसी । १०।
माते पांडुरंगीं मज भेट करावी। धरीन मी जीवीं चरण त्याचे। ११।
नेणोंची हें वर्म माझी मूढमती। मज करा विश्रांति विठ्ठलचरणीं । १२।
तंव ते आदिमाता सांगे परसोबासी । दैवें हें आम्हांसी दिधलें नाहीं । १३।
भेटवावें तुज आज्ञा नसतां मज। कोपतील सहज देवराव । १४।
तूं नामया विनवी निराभिमान होंई। तो दाखवील सोई देवाजीची। १५।
मागें होतें तें अवघेंचि विसरलों। लोटांगणीं आलों नामयासी । १६।
परसा म्हणे नामया तुझें बरवें गाणें। जैसें कां नाणें टांकसाळींचें । १७।

## संत परसा भागवतांनी केलेली संत नामदेवांची स्तुति

४९९. कीर्तनाच्या वेळे अति सप्रेमेसी। प्रत्यक्ष हृषिकेशी अवतरले। १ ।
धन्य तुझें जीणें धन्य मातापिता। धन्य ते सरिता सागरेसी। २ ।
तुम्ही जातीचे ब्राह्मण मी आहें शिंपी। मज काय देतोसी उपमा येवढी। ३ ।
चरणींचा रज सेवकही संतांचा। विशेषही तुमचा आज्ञाधार। ४ ।
नाठविसी लटिकें देसी थोरपण। तुम्ही अहां ब्राह्मण आम्ही शिंपी। ५ ।
शास्त्रें पुराणें असती तुमचीये घरीं । होती निरंतरीं अध्ययनें । ६ ।
पढतमूर्ख आम्हां न कळेचि भेद । मज तो गोविंद वश्य कैंचा । ७ ।
मी तुमचा सेवकू अंगलग पाईकू। मज आहे उपदेशु तुमचाच कीं । ८ ।
धोतरें प्रक्षाळणें लाविणें पत्रावळी। तुमची उष्टावळी प्रसाद मज। ९ ।
थोरत्वातें मानोनी थोरपणें गेलों । जीवनें सांडिलों मच्छ जैसा । १०।
करी तळमळ मज आतां सांभाळीं । भेट करीं विठ्ठलीं नामया मज। ११।
रखुमाईचा वर आहे तुम्हापाशीं । जाईजे तियेसी पुसावया। १२।

जें सांगेल तूंतें दावील केशवातें। भक्तवत्सल जेथें तेथें असे। १३।
रखुमाईनें मज सांगितली मात। तुझीया खांद्या हात श्रीहरिचा। १४।
तो दाखवील तूंतें सांगेल केशवातें। माझी आण त्यातें घालोनियां। १५।
पूर्वी प्रसन्न मज नागनाथीं झाला। मस्तकीं ठेविला हात तेणें। १६।
तेंचि रूप पाहीं धरोनियां राहीं। शंका न धरीं कांहीं आण माझी। १७।
मागें एक नाम बोलिलों उत्तर। तेणें तुझें जिव्हार दुखविलें। १८।
पूर्वज पायातळीं बोलिलों ब्रीदावळी। एकाएकी आकळी बुद्धि ठेली। १९।
रामचरणीं शिळा उद्धरिली पहातां। ते नेली तत्काळतां परलोकासी। २०।
तैसा मी पाषाण नुद्धरशील जाण। खंती करसी तरी आण विठोबाची। २१।
भुजंग चाली तो नामयानें दाविला। तंव येरू गेला धरावया। २२।
परसा पळे कैसा लागला पाठीं। परतोनी पाहे दृष्टीं तो अदृश्य झाला। २३।
ज्ञानी ज्ञानदेव ध्यानीं नामदेव। भक्ति चांगदेव पुढारले। २४।
या तिन्ही मूर्ती एकचि पैं असती। यांची कांहीं भ्रांति न धरावी। २५।
परसा म्हणे जैसी सरिता सागरीं। तैसे ते श्रीहरि मिळोनी गेले। २६।

५००. परसा म्हणे नामया मी तुज देखिलें। प्रत्यक्ष विठ्ठलें ऐसें जाण। १।
तूंच तूं विठ्ठल तूंच तूं विठ्ठल। हाचि सत्य बोल जाण आम्हा। २।
तुवां पदें केलीं राउळें सांगितलीं। येरीं कवित्वे केलीं आपुल्या मतें। ३।
तूं शिंपी नामा आम्ही उत्तम याती। वायां अहंमती पडलों देखा। ४।
आम्ही एक आपुले दृष्टीनें देखीले। देवभक्त झाले दोन्ही एक रूप। ५।
तुझें नाम जपतां महा पातकें जाती। तेणें होय मुक्ति म्हणे परसा। ६।

५०१. कवित्वापरीस कवित्व आगळें पैं आहे। परि ते न कळे सोय नामयाची। १।
नाम बरवें नामदेव बरवा। एकत्व बरवा परमात्मा। २।
दुधावरली साय तें मी वाणूं काय। तैसें गाणें गाय नामदेव। ३।
नामा तोची कुडी केशव तोची देव। तेथील अनुभव परसा म्हणे। ४।

५०२. इंद्रनीळ तनु प्रसन्न वदन। दशन दीप्ति जाण हिरयाचे । १ ।
अडोनिया सरा पाहूं या गोपाळ । डोळियां सुकाळ होईल आजी। २ ।
कंठी वैजयंती नयन पुंजाळती । आरत्या ओवाळीती गोपबाळा। ३ ।
काळासी अटक योगियाचें हीत। परसा भागवत जवळी उभा। ४ ।

५०३. कविरस वाटोनी क्षीरीस हिंगाची फोडणी । भक्तीवीण आळवणी तैसी केंवी रुचे । १ ।
तैसें रसाळ अमृत नामयाचें गीत। अनुभवी जाणत तेथींची गोडी। २ ।
दुधा तुपाची वाटी लावोनियां ओठी। कांजी तयापोटीं केंवि रुचे। ३ ।
धायवरी जेवीजे तुपेसी क्षीरीं। त्यावरी भाकरी नाचण्याची। ४ ।
तैसें केशवाचें प्रेम नामदेव जाणे। तेथील अनुभव परसा म्हणे । ५ ।

५०४. केशव परीसता नामा परिसविता। तयाचिया चित्ता एक आला। १ ।
कायसी आम्हीं केलीं बापुडीं। नामयाची घडी एक नये। २ ।
धिग् धिग् जीवित्व वायां गेलें। नामया फावलें परसा म्हणे। ३ ।

५०५. गंगातीरीं तप तुवां काय केलें। योगिया सरीसें फळ लाधलें। १ ।
नामयारे तुवां कोणें योगें साधिलें। निजरूप ठाकलें परब्रह्म । २ ।
अवघ्या जन्मीं दशमी दिंडी आणि जागरण । तेणे प्रेमें लाधले चरण केशवाचे। ३ ।
मज पाहतां स्वमीकाजीं वेंचलासी। करवतीं धारातीर्थे नाहलासी। ४ ।
जती पद देवोनी द्रवपण पावलें। केशवराजें मज कांहीं नाहीं वंचिलें। ५ ।
नामा आणि केशव एकची जाणावे । परसा भागवत बोलिला स्वभावें। ६ ।

५०६. तुम्ही गावें तेंचि आम्ही अंतरीं घ्यावें । म्हणोनी स्वभावें भावाभाव नाहीं येथें। १ ।
आम्ही तुम्ही कांही नाहीं बा वेगळे। ऐसा खेळे मेळे दिवस चारी। २ ।
जाणें तें न चुके अपकीर्ति कायसी। नामा परसोबासी विनवीतसे। ३ ।

५०७. टाळ मांदळीं नाहीं चाड। नाम गोड विठोबाचें। १ ।
वाहो टाळिया नाचों बागडें । गावों नामें गोड विठोबाची। २ ।
परसा म्हणे येर अवघी उपाधी। नाम गातां सिद्धि होईल रोकडी। ३ ।

५०८. अणुमाजीं राम रेणुमाजीं राम। तृणकाष्टीं राम वर्ततसे। १ ।
बाहेरी भीतरीं राम चराचरीं। विश्र्वीं विश्र्वाकारीं वर्ततसे। २ ।
रामेंविण स्थळ रितेंचि पैं नाहीं। वर्ते सर्वांठायीं रामींराम। ३ ।
परसा भागवत कायावाचामनें। श्रीरामावाचून अन्य नेणें। ४ ।

५०९. पैल मेळारे कवणाचा। नामा येतो केशवाचा। १ ।
ब्रीद दिसतें अंबरीं। गरुड टके याच्या परी। २ ।
परसा येतो लोटांगणीं। नामा लागला त्याचे चरणीं। ३ ।

५१०. कृतायुगीं नामा प्रल्हाद पैं झाला। स्तंभी अवतरला नारायण। १ ।
त्रेतायुगीं नामा अंगज रुपि असे। रामचंद्रें त्यासी आलिंगिला। २ ।
धन्य तो नामा धन्य तो नामा। पढिये पुरुषोत्तमा जीवाहुनी। ३ ।
द्वापारीं नामा उद्धव गहन। नारायण क्षण न विसंबे। ४ ।
कलियुगीं नामा संत साकार। न कळे तो पार ब्रह्मादिकां। ५ ।
चहूं युगीं नामा वेगळा नाहीं झाला। म्हणवुनी पुरला नारायण। ६ ।
विष्णुदास नामा केशवीं रंगला। देव आत्मा झाला म्हणें परसा। ७ ।

५११. नामदेव नामदेव। धरा भाव दृढ हा। १ ।
देव सांगे वैष्णवासी। नका यासी विसंबू। २ ।
रिद्धि सिद्धि लोटांगणी। अहर्निशी तिष्टती। ३ ।
म्हणे परिसा भागवत। देवे मात सांगितली। ४ ।

श्री पंढरीत दिंडी श्री नामदेव मंदिराचे द्वारांत येते तेव्हा वरील अभंग म्हणतात

नामदेव जनाबाई। नामदेव जनाबाई। नामदेव जनाबाई
नामदेव जनाबाई। नामदेव जनाबाई।

## ❋ समकालीन व उत्तरकालीन संतांना भावलेले संत नामदेव दर्शन ❋

परमानंदे हरी परीपूर्ण लोटला। मुक्ताई फावला प्रेम पान्हा। १ ।
चांगयाचे मुखी घालीत कवळ। आपण गोपाळ दयासिंधु। २ ।
दिधले ते घेई परिपूर्ण होई। सप्रेमाचे डोही संतजन। ३ ।
नामया विठया नारया लाधले। गोणाई फावले अखंडित। ४ ।
राही रखुमाई कुरवंड्या करिती। जीवे ओवाळीती नामयासी। ५ ।
निवृत्ती खेचर ज्ञानदेव हरी। सोपान झडकरी बोलविला। ६ ।

–संत निवृत्तिनाथ

कवण स्तुति करूं कवणिया वाचे। ओघ संकल्पाचे गिळिले चित्ते। १ ।
मन हे झाले मुकें। मन हे झाले मुकें।
अनुभवाचे हे सुखे हेलावले। २ ।
दृष्टीचे पहाणे परतले मागुती। राहिली निवांत नेत्रपाती। ३ ।
म्हणे गोरा कुंभार मौन्य सुख घ्यावे। जीवे ओवाळावे नामयासी। ४ ।

– संत गोरोबा

धन्य धन्य नामदेव। माझा निरसला भेव। १ ।
विठ्ठल मंत्र त्रिअक्षरी। खूण सांगितली निर्धारी। २ ।
ठेवोनी माथा हात। दिले माझे हित। ३ ।
दावियेले तारूं। चोखा म्हणे माझा गुरु। ४ ।
आजि सोनियाचा दिवस धन्य झाला। प्रत्यक्ष भेटला नामदेव।
चोखा म्हणे माझा धन्य गुरुराव। दाखविला देव हृदयी माझ्या।

– संत चोखोबा

जन्मता पांडुरंगे जिव्हेवरी लिहिले। शतकोटि अभंग कवित्व रचिले। १ ।
जय जयाजी भक्तराया जिवलगा नामया। आरती ओवाळितां चित्त पालटे काया। २ ।

– संत परिसा भागवत

भक्तांमाजी अग्रगणी तूंचि ऐकसी मनी।
वैकुंठीच्या ध्वजा आणिल्या भुतळा लागोनी। १।
जयजयाजी महाराजा जिवलगा नामया। आरती करितां चित्त रंगले पाया। २।
- संत सेना महाराज

दख्खनम्याने नामा दरजी अनुका बंदा विठ्ठल है।
और सेवा कछु नहि जाने अंदर भीतर केशव है।
- संत कबीर

भीमा किनारे ठाडे कटपर। रखे कर जिन्हें नामा दरजी नाम पुकारे।
केशव भयो तन में।
-भक्त कमाल

पंढरपूर नगर छे ऐक, तेमा नामो सोडू विशेक। नामदेवने हरिसु प्रीत।
- संत नरसी मेहता

म्हाँरे नैणाँ आगे रहाजोजी, श्याम गोविंद। टेक।
दास कबीर घर वालद जो लाया, नामदेव की छान छबन्द।
- संत मीराबाई

नामदेव कबीर त्रिलोचन, सधना, सेन तरै।
कह रविदास सूनौ रे संतो हरिजीव ते समै सरै।
-संत रैदास

जेहि घर नामा कबीरा, पहुँचे करि तनमन धीरा।
अतिही सूछिम होय, जाई मिले ब्रहतकूं सोई।
- रामभक्त तुलसीदास

नामा छीबा कबीरु जुलाहा पूरे गुरते पाइ।
- गुरु नानकदेव

नामदेव कबीर जुलाहौ जन रैदास तिरै।
दादू बेगि बार नहिं लागौ, हरिसों सबै सरै।
- भक्त दादू दयाळ

नामा कबीर सु कौन थे कुन राँका बाँका।
भगति समानी सब धरनि तजि कुल काना का।
- भक्त रज्जबजी

जैसे नामा कबीरजी यौं साधु कहाया।
आदि अंत लौ आई कै राम नाम समाया।
- स्वामी सुन्दरदास

नामा छींबा कबीर जुलाहा पूरे गुर ते गति पाई।
ब्रह्म के बेते सबदु पछाणहि हउमैं जारति गवाई।
सुर नर तिन की वाणी गावहि कोई न मेरे भाई।
- गुरु अमरदास

धन्य धन्य नामदेव। सर्व वैष्णवांचा राव।
प्रत्यक्ष दाविली प्रचीत। वाळुवंटी परीस सत्य।
धन्य धन्य नामदेवा। एका जनार्दना चरणी ठेवा।
लडिवाळ नामा विठोबाचा दास। तयाचे चरणांस दंडवत।
भक्तशिरोमणी लाडका डिंगर। आवडता फार विठोबाचा।
- संत एकनाथ

नामदेवे केले स्वप्नामाजी जागे। सवे पांडुरंगे येऊनियां। १।
सांगितले काम करावे कवित्व। वाउगे निमित्य बोलों नको। २।
नामदेवापायी तुकया स्वप्नी भेटी। प्रसाद हा पोटी राहिलासे। ३।

ापियाचा पोर एक खेळिया नामा। तेणे विठ्ठल बसवंत केला रे।
ापुल्या सवंगडिया शिकवुनी घाई। तेणे सतत फड जागविला रे।
कें घाई खेळतां तो न चुकेचि कोठें। तया संत जन मानवले रे।

ागद्गुरु तुकोबारायानी, संत नामदेवांनी एकट्यानी आपल्या सवंगड्यांसह ातत फड पद्धतीने सांप्रदाय काटेकोरपणे जतन केल्याचे इथे नोंदले आहे. ापली अभंगवाणी हा संत नामदेवांचा प्रसाद आहे आणि ती ामदेवांचे आज्ञेने प्रगट झाली आहे असेही महाराज या अभंगात म्हणतात.

–संत तुकोबाराय

ागद्गुरु तुका अवतार नामयाचा। सांप्रदाय सकळांचा येथोनियां।

- संत निळोबाराय

श्री महाराज हे संत नामदेवांचाच अवतार होते असे संत निळोबाराय इथे कथन करतात.

श्री महाराजांचे नातू संत गोपाळबाबा हे ही महाराज हे संत नामदेवांचे अवतार होते असे कथन करतात. तसेच महाराजांचे रूपात अवतार घेणेस संत नामदेवांना देवांनीच आज्ञा केली असेही लिहितात.

द्रायणी तटी देहु पुण्य क्षेत्र। केले सुखापात्र कुळ जेणे।
ो हा माझा प्राणसखा निरंतर। भक्त विश्वंभर देखिला की।
ाचे कुळी माझा निज भक्त निधान। बोल्होबा गुणरत्न प्रगटला।
ाचे पोटी जन्म नामया तूं घेई। संकल्प हा नेई सिद्धी माझा।
ी जी म्हणे मान्य केले देवराया। संतोष नामया आज्ञा करिता।
ोल्होबा जनक कनकाई माता। गर्भा त्यांच्या येता नामा झाला।
सा आशीर्वाद देता नारायण। नामा म्हणे मान्य केले स्वामी।
सा तो तुकया नामया अंतरी। प्रगटला हरि इच्छा मात्रे।

- संत गोपाळ बाबा

माझी मज आली रोकडी प्रचित। होऊनि फजित दुःख पावे। १ ।
कांही द्वेष त्याचा करितां अंतरी। व्यथा या शरीरी बहुत झाली। २ ।
ज्ञानेश्वरे मज केला उपकार। स्वप्नीं सविस्तर सांगितले। ३ ।
तुका सर्वा श्रेष्ठ प्रिय आम्हां थोर। कां जो अवतार नामयाचा। ४ ।
त्याची तुज कांही घडली रे निंदा। म्हणोनी हे बाधा जडली तुज। ५ ।

- संत रामेश्वर भट

संत ज्ञानदेवांनी संत रामेश्वरांना स्वप्नांत संत तुकोबाराय हे संत नामदेवांचे अवतार असल्याचे सांगितले. हे विशेष.

श्री नारदमुनिचें जे सुमहद्व्रत तेंचि नामदेवाचे।
याने प्रसिद्ध केले विठ्ठल हे भव्य नाम देवाचे।
भक्तिप्रताप लोकी अत्यद्भुत याचि नामदेवाचा।
परमप्रिय भक्तसखा की आम्हां आप्तकाम देवाचा।

कविवर्य मोरोपंतांनीही नामदेव-तुकाराम हे एकच असलेले प्रतिपादले आहे.

धन्य तोचि नामा ज्ञानदेव पाही ।

- संत सोपानदेव

गोविंद गोविंद संगी नामदेऊ मनू लिजा।

- संत धन्नाजाट

नामदेवे हात चोखियाचे शिरी।

- संत बंका महार

॥ संत नामदेवाय नमः ॥

कीर्तनं नर्तनानंदम्, प्रज्वलीतं ज्ञानदीपम् ।
भक्ती भावेश्वरं वंदे नामदेवं पुनः पुनः ॥

॥ संत नामदेवस्तवः ॥

भक्त रत्नं संतवर्यं भक्तिमार्गप्रबोधकम् ।
विठ्ठलांघ्रिरतं वन्दे नामदेवं पुनः पुनः ।१।
पंढरीक्षेत्रमाहात्म्यं येन लोके प्रचारितम् ।
कीर्तनाद्यगुरुं वन्दे नामदेवं पुनः पुनः ।२।
अभंगरचना यस्य भक्तिरसपरिप्लुता ।
पीयूषेण समादिव्या नामदेवं नमामि तम् ।३।
तत्त्वज्ञानैकनिष्ठोऽपि भक्तिप्रेम्णातु शैशवम् ।
स्वीकृतं येन वात्स्यल्यात् नामदेवं नमामि तम्।४।
कीर्तने नृत्यमालम्ब्य ज्ञानदीपं प्रकाशितः ।
येन ज्ञानेश्वरसखं नामदेवं नमामि तम् ।५।
प्रल्हादोऽभूत कृते यस्तु त्रेतायां अंगदस्मृतः ।
द्वापरे चोद्धवःसाक्षात् नामदेवं नमामि तम् ।६।
योगादपि वरिष्ठं तं नामदेवं नमाम्यहम्।७।
यो वै पंचनदप्रान्ते विठ्ठलख्यातिमुक्तवान् ।
धर्मे संरक्षिता लोका नामदेवं नमामि तं ।८।
याचे त्वां परमोदारं दामेश जनवत्सल ।
वरदानंदहृदये ज्ञान भक्तिं विवर्धय ।९।

- स्वामी वरदानंद भारती

## संत नामदेव महाराज यांच्या अभंगांचा वर्णानुक्रम

## संत नामदेव महाराज यांच्या हिंदी अभंगांचा वर्णानुक्रम

## संत नामदेव महाराज यांच्या हिंदी अभंगांचा वर्णानुक्रम

## संत जनाबाई यांच्या अभंगांचा वर्णानुक्रम

## संत जनाबाई यांच्या अभंगांचा वर्णानुक्रम

## संत नारायण यांचे अभंग

## संत विठ्ठल यांचे अभंग

**संत गोणाईंचे अभंग**



**संत गोविंदांचे अभंग**



**संत महादेव यांचे अभंग**



**संत लाडाईंचे अभंग**



**संत आऊबाई यांचे अभंग**



**संत लिंबाई यांचे अभंग**



**संत विसोबा खेचर यांचे अभंग**



**संत परिसा भागवत यांचे अ**



